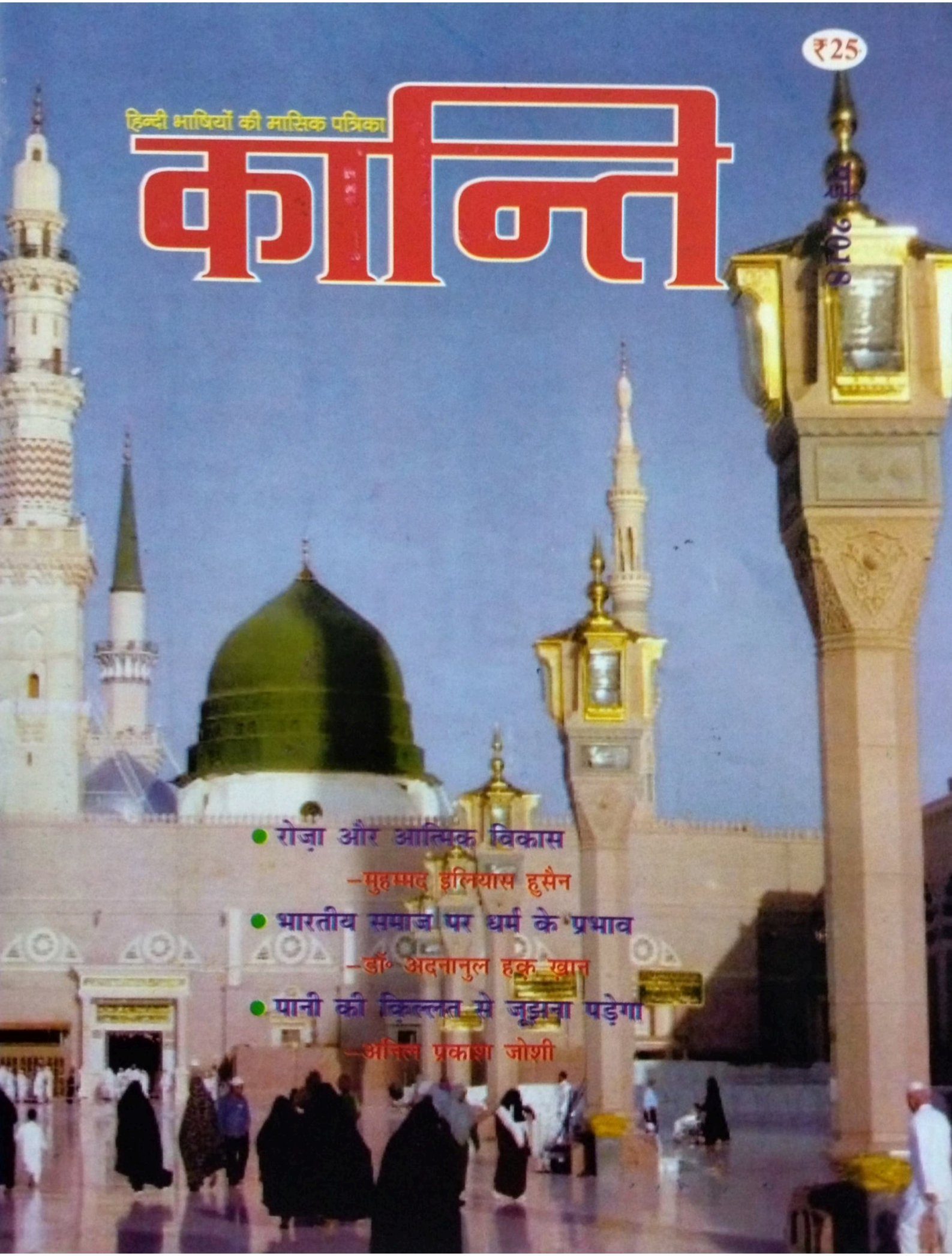

₹25

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

- रोज़ा और आत्मिक विकास
  –मुहम्मद इलियास हुसैन
- भारतीय समाज पर धर्म के प्रभाव
  –डॉ॰ अदनानुल हक़ खान
- पानी की किल्लत से जूझना पड़ेगा
  –अनिल प्रकाश जोशी

SHALIMAR
RESTAURANT



Special Items

CHICKEN
- Murg Mumtaz
- Chicken Malaysia
- Jalwa Kabab
- Tiranga Kabab
- Seekh Kabab
- Multani Kaban

SEA FOOD
- Fish Tandoori
- King Prawns Tandoori
- Fish Angara

VEG
- Paneer Tikka



CHICKEN KABABS
- Chicken Tandoori
- Chicken Liver Takka
- Chicken Tikka
- Murg Kohinoor
- Reshmi Kabab
- Sholay Kabab
- Pahadi Kabab
- Khazana Kabab
- Chaurangi Kabab
- Sonali Kabab

Exclusively at : Shalimar Corner, Bhendi Bazar,Mumbai-400003
E-mail : info@shalimargroup.com, www.shalimargroup.com
Tel. : 23456630/34, Fax : 23456629

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 27 अंक 11 मई 2018

ऐ लोगो ! जो ईमान लाए हो, तुम्हारे लिए रोज़े अनिवार्य कर दिये गये, जिस तरह तुमसे पहले नबियों के अनुयायियों के लिए अनिवार्य किये गये थे । इससे उम्मीद है कि तुममें ईश-परायणता का गुण पैदा होगा । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 60/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

संगति का प्रभाव

एक बार एक राजा वन में शिकार खेलने गया ।
वहां कुलेलें कर रहा था एक हिरन,
स्वभावतः राजा उसके पीछे दौड़ पड़ा,
यहां तक कि वह अपने सैनिकों से बिछड़ कर
एक निर्जन वन में भटक गया ।
भटकते-भटकते उसे एक बस्ती दिखायी पड़ी ।
विश्राम के लिए राजा ने अपना घोड़ा और उस ओर दौड़ा दिया ।
वहां एक मकान के दरवाज़े पर पिंजरे में बन्द एक तोता,
पिंजरे ही में बड़ी बेचैनी से घूम रहा था ।
तोते की नज़र राजा पर पड़ी, चिल्ला उठा,
दौड़ो, पकड़ो, घोड़ा, कपड़े, गहने छीन लो, इसे जान से मार डालो ।
राजा समझ गया तोते की इस चीख़-पुकार को, कि
यह बस्ती डाकुओं की है और यहां रुकना उचित नहीं है ।
उसने तीव्र गति से घोड़ा दौड़ा दिया ।
डाकुओं ने पीछा तो किया, पर वे पकड़ न सके ।
फिर राजा हैरान-परेशान उस निर्जन वन में भटकने लगा,
यहां तक कि उसे एक कुटिया मिली ।
एक क्षण के लिए वह यहां रुका,
वनों से तोते की आवाज़ टकराई–
'आइए राजन ! आपका स्वागत है ।
अरे, अतिथि पधारे हैं, आसन लाओ ।'
राजा ने आंखें उठाईं तो देखा,
एक तोता पिंजरे में बन्द बैठा है एक आश्रम के द्वार पर ।
इतने में मुनि बाहर आ गये ।
राजा का स्वागत किया, उसे भीतर ले गये ।
जब राजा का मन शांत हुआ, भय-आशंका से मुक्त हुआ,
तो मुनि से पूछा,
'मुनिवर ! मैं अभी डाकुओं की एक आबादी में पहुंच गया था,
एक मकान के द्वार पर पिंजरे में बन्द एक तोते ने लूट-मार और हत्या की बात की थी,
जबकि आपके तोते ने मेरा स्वागत किया ।
एक ही जाति के पक्षियों के स्वभाव में इतना अन्तर क्यों?
प्रश्न सुनकर मुनि के उत्तर देने से पहले, तोता स्वयं बोल पड़ा–
'राजन ! हम दोनों एक ही मां-बाप की संतान हैं,
परन्तु उसे डाकू उठाकर ले गये और मुझे मुनि ले आए ।
वह डाकुओं की हिंसक बातें सुनता है
और मैं मुनि के सद्वचन सुनता हूं ।
परिणाम आपके सामने है ।
ये है संगति का प्रभाव ।

● डॉ० कौसर यज़दानी नदवी



कहां क्या है ?

संगति का प्रभाव	–डॉ॰ कौसर यज़दानी नदवी	3
कुरआन ज्योति		5
अधिक से अधिक सुकर्म (हदीस मंजरी)		6
रोज़ा और मानव स्वास्थ्य (संपादकीय)		7
मांसाहार और हिंसा (आपके पत्र)		9
हज़रत अस्मा (रज़ि॰) (नेकी के सिपाही)		11
नअत	–अज़ीज़ बघरवी	14
रोकिए कन्या भ्रूण-हत्याएं (महिला जगत)	–मुहम्मद ज़ैनुल आबिदीन मंसूरी	17
टी॰बी॰ से छुटकारा पाने की चुनौती (स्वास्थ्य-चर्चा)	–अरविंद कुमार सिंह	21
रोज़ा और आत्मिक विकास (विशेष आयोजन)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	26,27
रमज़ानुल मुबारक (कविता)	–क़मर रामनगरी	31
भारतीय समाज पर धर्म के प्रभाव (दृष्टिकोण)	–डॉ॰ अदनानुल हक़ ख़ान	33
शोर के ख़िलाफ़ मचाइए शोर (पर्यावरण)	–डॉ॰ अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव	39
नेकी की राह (कविता)	–डॉ॰ त्रिलोकी सिंह	40
बाबिल की कल्दानी सल्तनत (अतीत)	–अख़्लाक़ अहमद क़ादिरी	41
हार की जीत (कहानी)	–सुदर्शन	43
नहीं तो पानी की क़िल्लत से जूझना पड़ेगा (विचारणीय)	–अनिल प्रकाश जोशी	45
असमंजस, भ्रामक विज्ञापन (कविताएं)	–ओम प्रकाश बजाज	46
इन्सानो ! रब को पहचानो	–संपादन प्रभाग	47
भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण तिथियां (बालवीथी)		49

क़ुरआन ज्योति

(59) अल्लाह ने तुम्हारे लिए उतारी थी उसमें से तुमने स्वयं ही किसी को हराम और किसी को हलाल ठहरा लिया !''[61] इनसे पूछो, ''अल्लाह ने तुम्हें इसकी अनुमति दी थी ? या तुम अल्लाह पर झूठ गढ़ रहे हो ?''[62]

–क़ुरआन, 10 : 59

61. अर्थात तुम्हें कुछ एहसास भी है कि यह कितना बड़ा द्रोहपूर्ण अपराध है जो तुम कर रहे हो । रोज़ी अल्लाह की है और तुम स्वयं अल्लाह के हो, फिर यह अधिकार आख़िर तुम्हें कहां से मिल गया कि अल्लाह की मिल्कियत में अपने इस्तेमाल और फ़ायदे के लिए स्वयं हदबन्दियां निश्चित करो । मामूली नौकर अगर यह दावा करे कि स्वामी के माल में अपने इस्तेमाल और अधिकार की सीमाएं उसे स्वयं निश्चित कर लेने का अधिकार है और इस मामले में स्वामी के कुछ बोलने की सिरे से कोई ज़रूरत ही नहीं है, तो इसके बारे में तुम्हारी क्या राय है ? तुम्हारा अपना नौकर अगर तुम्हारे घर में और तुम्हारे घर की सब चीज़ों में अपने कार्य और इस्तेमाल के लिए इस स्वतंत्रता और स्वाधिकार का दावा करे तो तुम उसके साथ क्या मामला करोगे ?–उस नौकर का मामला तो दूसरा ही है जो सिरे से यही नहीं मानता कि वह किसी का नौकर है और कोई उसका स्वामी भी है और यह किसी और का माल है जो उसके इस्तेमाल में है । उस बदमाश लुटेरे की स्थिति पर यहां वार्ता नहीं हो रही है ।

यहां प्रश्न उस नौकर की स्थिति का है जो स्वयं मान रहा है कि वह किसी का नौकर है और यह भी मानता है कि माल उसी का है जिसका वह नौकर है और फिर कहता है कि इस माल में अपने प्रयोग की सीमाएं निश्चित कर लेने का अधिकार मुझे आप ही प्राप्त है और स्वामी से कुछ पूछने की ज़रूरत नहीं है ।

62. अर्थात तुम्हारी यह स्थिति केवल उसी रूप में सही हो सकती थी कि स्वामी ने स्वयं तुमको अधिकार दे दिया होता कि मेरे माल का तुम जिस तरह उपयोग करो, अपने कार्य और उपयोग की सीमाओं, क़ानून, विधान–सब कुछ बना लेने के तमाम अधिकार मैंने तुम्हें सौंप दिये । अब प्रश्न यह है कि क्या तुम्हारे पास वास्तव में इसका कोई प्रमाण-पत्र है कि स्वामी ने वे अधिकार तुम्हें दे दिये हैं ? या तुम बिना किसी प्रमाण-पत्र के यह दावा कर रहे हो कि वह तमाम अधिकार तुम्हें सौंप चुका है ? अगर पहली शक्ल है तो कृपा करके वह प्रमाण-पत्र दिखाओ, वरना दूसरी शक्ल में यह खुली बात है कि तुम विद्रोह पर झूठ और झूठी बात गढ़ने का अतिरिक्त अपराध कर रहे हो । झूठ गढ़ने की तीन शक्लें हैं–

एक, यह कि कोई व्यक्ति यह कहे कि ये अधिकार अल्लाह ने इन्सानों को सौंप दिये हैं,

दूसरी, यह कि वह कहे कि अल्लाह का यह काम ही नहीं है कि हमारे लिए क़ानून और शरीअत निर्धारित करे,

तीसरी, यह कि वह हलाल व हराम के उन आदेशों को अल्लाह से जोड़े हालांकि प्रमाण में वह अल्लाह की कोई किताब न प्रस्तुत कर सके ।

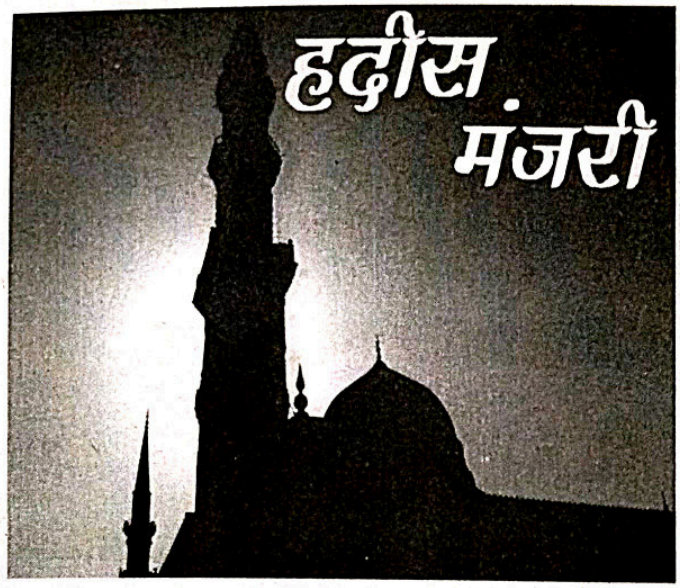

जीवन के अन्तिम चरणों में अधिक से अधिक सुकर्म करने का प्रोत्साहन

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : ''अल्लाह ने उस व्यक्ति के लिए किसी उज्र की गुंजाइश नहीं छोड़ी, जिसकी आयु लंबी की यहां तक कि वह साठ वर्ष को पहुंच गया ।'' –बुख़ारी

विद्वानों ने कहा है कि इसका अर्थ यह है कि अल्लाह ने उसके लिए कोई उज्र नहीं छोड़ा जिसको इतनी मुद्दत तक मोहलत दी । जब कोई व्यक्ति उज्र के सिलसिले में चरम सीमा को पहुंच जाए, तो अरबी भाषा में कहा जाता है : 'अज़्ररजुलु' ।

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि आप पर सूरा ''इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वलफ़तहु'' के उतरने के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कोई नमाज़ नहीं पढ़ी, जिसमें आपने यह न कहा हो : ''सुबहान-क रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहुम्मग़फ़िरली'' (पाक और महान है तू ऐ हमारे रब, तेरी ही प्रशंसा है ऐ अल्लाह, तू मुझे क्षमा कर दे)। –बुख़ारी, मुस्लिम

बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आइशा (रज़ि॰) से एक रिवायत यह है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) अपने रुकूअ और सजदों में बहुत ज़्यादा यह कहा करते थे : ''सुबहान-क अल्लाहुम्मा रब्बना व बिहम्दि-क अल्लाहुम्मग़फ़िरली'' (पाक और महान है तू ऐ अल्लाह और प्रशंसा तेरी ही है, ऐ अल्लाह, तू मुझे क्षमा कर दे ।) आप यह क़ुरआन के आदेश के अनुसरण में कहते । क़ुरआन में अल्लाह तआला ने कहा है : ''अत: तसबीह करो अपने रब की प्रशंसा के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो ।''

मुस्लिम की एक रिवायत में है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) मौत से पहले बहुत ज़्यादा यह पढ़ा करते थे : ''सुबहान-क अल्लाहुम्मा व बिहम्दि-क, अस्तग़फ़िरुका व अतूबु इलैक'' (पाक और महान है तू ऐ अल्लाह और प्रशंसा तेरी ही है, मैं तुझसे क्षमा-याचना करता हूं और तेरी सेवा में तौबा करता हूं ।) हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰), ये कैसे शब्द हैं जो मैं देख रही हूं कि आपने अब पढ़ने शुरू किये हैं ? आपने कहा : ''मेरे लिए मेरी उम्मत के विषय में एक निशानी निश्चित की गयी है कि जब मैं उसको देखूं, तो इन शब्दों का उच्चारण करूं । और वह निशानी है : ''इज़ा जाअ नसरुल्लाहि वलफ़तहु'' (जब अल्लाह की मदद आ जाए और विजय हो ।) सूरा के अंत तक ।''

और मुस्लिम ही की एक रिवायत में आया है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) बहुत ज़्यादा यह कहा करते थे : ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह'' (पाक और महान है अल्लाह और उसी की प्रशंसा है, मैं अल्लाह से क्षमा-याचना करता हूं और उसी की सेवा में तौबा करता हूं ।) हज़रत आइशा (रज़ि॰) कहती हैं कि मैंने कहा कि ऐ अल्लाह के रसूल, मैं देखती हूं कि आप बहुत ज़्यादा ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह'' कहते रहते हैं । आपने कहा : ''मुझे मेरे रब ने यह ख़बर दी है कि मैं निकट भविष्य में अपनी उम्मत (मुस्लिम समुदाय) में एक निशानी देखूंगा और जब मैं वह निशानी देखूं, तो बहुत ज़्यादा यह पढ़ूं : ''सुबहानल्लाहि व बिहम्दिही अस्तग़फ़िरुल्लाह व अतूबु इलैह'' अतएव वह निशानी मैंने देख ली, वह यह है : ''जब अल्लाह की मदद आ जाए और विजय हो मक्का पर । 'और तुम देखो कि लोग अल्लाह के दीन में दल के दल दाख़िल हो रहे हैं, तो तसबीह (गरिमागान) करो अपने रब की प्रशंसा के साथ और उससे क्षमा की प्रार्थना करो । निश्चय ही वह ज़्यादा से ज़्यादा तौबा क़ुबूल करने वाला है ।'

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

रोज़ा एवं मानव स्वास्थ्य

रोज़ा मोमिन का दूसरा धार्मिक कर्तव्य है । इसमें चांद के पूरे एक महीने का रोज़ा (व्रत) होता है । इसमें भोर से लेकर सूर्यास्त तक सब कुछ खाना-पीना वर्जित है । इसके अतिरिक्त काम वासनाओं की तृप्ति करना भी वर्जित है क्योंकि इससे आध्यात्मिक अभ्यास पर कुप्रभाव पड़ता है । वास्तव में रोज़ा एक कठिन आध्यात्मिक अभ्यास है जोकि चाहे दूसरे धर्म वालों को मुश्किल लगे लेकिन सदियों के अनुभव से स्पष्ट है कि इस्लाम के वे नव आगंतुक तक आसानी से इसके अभ्यस्त हो जाते हैं जो पूर्ण निष्ठा के साथ ईमान लाते हैं । रोज़े पूरे एक माह तक लगातार रखे जाते हैं, और यह बात तो सर्वविदित है कि इस्लाम में चांद के महीने ही मान्य होते हैं । इसका परिणाम यह है कि रमज़ान का महीना वर्ष के सभी मौसमों जाड़ा, गर्मी, बरसात में घूमता रहता है । आदमी को जहां तेज़ सर्दी में खाना-पीना आदि के त्याग की आदत पड़ती है, वहां झुलसती हुई गर्मी और बरसात में भी वह इस त्याग के मार्ग से गुज़रता है । और ये सब कठिनाइयां वह आध्यात्मिक अनुशासन के अंतर्गत और खुदा के आज्ञापालन में सहन करता है लेकिन इस आध्यात्मिक उपलब्धि के साथ-साथ आदमी को अनेक दूसरे लौकिक लाभ भी प्राप्त होते हैं जैसे, स्वास्थ्य लाभ, नैतिक लाभ और आत्म बल का उत्थान आदि । ये ऐसे लाभ हैं, जो नमाज़ से प्राप्त होने वाले लाभों के अतिरिक्त हैं । रोज़ों का लक्ष्य अनिवार्यत: और प्रधानत: आध्यात्मिक अभ्यास है, जिससे अल्लाह का सामीप्य, उसकी निकटता व प्रसन्नता प्राप्त होती है । यदि कोई आदमी उदाहरणस्वरूप डॉक्टर की सलाह पर भौतिक उद्देश्य से रोज़ा रखता है तो वह अपना दीनी (धार्मिक) कर्तव्य अदा करने से वंचित रहेगा और उसे इससे आध्यात्मिक लाभ कदाचित प्राप्त न हो सकेगा । नमाज़ की तरह रोज़े के सिलसिले में भी स्त्रियों को प्रसव काल या मासिक धर्म की अवधि में छूट दी गयी है । लेकिन अंतर यह है कि उनको इतने ही दिनों के रोज़े बाद में रखने होंगे । यही नियम की बीमारों के लिए है लेकिन बुढ़ापे की अवस्था में रोज़ों की पाबन्दी नहीं रहती, ब़ल्कि यदि उनमें सामर्थ्य हो तो एक दिन के रोज़े के बदले एक ग़रीब आदमी को खाना खिलाना उनके लिए पर्याप्त है ।

यह बात ध्यान योग्य है कि नबी (सल्ल०) ने ऐसे रोज़ों से रोका है जो एक दिन से अधिक अवधि (जैसे 48 घंटे या 72 घंटे आदि) के लिए रखे जाएं । इसी प्रकार अधिक आध्यात्मिक लाभ की प्राप्ति की इच्छा से पूरे साल या आजीवन रोज़े रखने से रोका गया है । रसूलुल्लाह (सल्ल०) का कथन है कि ''तुम्हारे ऊपर स्वयं तुम्हारे शरीर का भी अधिकार है ।'' रमज़ान के अनिवार्य रोज़ों के अलावा यदि कोई चाहे तो ऐच्छिक रूप से समय-समय पर अतिरिक्त रोज़े रख सकता है । लेकिन नबी (सल्ल०) ने एक साथ अधिक से अधिक दो रोज़े रखने की स्वीकृति दी है । चिकित्साशास्त्र की दृष्टि से देखा जाए तो पता चलता है कि निरन्तर रोज़े आदत बन जाते हैं और उनका वह प्रभाव नहीं रह पाता जो अंतराल से रोज़े रखने से होता है । एक महीने से कम के रोज़ों का बहुत अधिक प्रभाव नहीं पैदा होता तथा चालीस दिन से अधिक निरंतर रोज़े आदत बन जाते हैं । यह बात मात्र काल्पनिक है कि ठंडे क्षेत्रों में रोज़े रखना मानव स्वास्थ्य की आवश्यकताओं के प्रतिकूल है क्योंकि जीवन शास्त्रीय निरीक्षणों से स्पष्ट पता चलता है कि विशेषत: बर्फीले मौसम में जंगली जानवरों को

सामान्यत: खाने के लिए कुछ नहीं मिलता । वे या तो यह सारी अवधि सुषुप्ति अवस्था में सोकर व्यतीत करते हैं या अपना समय भूखे रहकर गुज़ारते हैं और वसन्त ऋतु आते ही नया जीवन प्राप्त कर जाग उठते हैं । यही स्थिति वृक्षों की भी होती है । उनके सारे पत्ते झड़ जाते हैं और वे इस प्रकार सोते रहते हैं कि उनको सींचा तक नहीं जाता लेकिन यह काल गुज़र जाने पर वसन्त ऋतु आते ही वे नयी शक्ति व स्फूर्ति के साथ जाग उठते हैं, जिसकी अनुभूति हर व्यक्ति उनकी नयी पत्तियों को देखकर कर सकता है । वास्तव में शरीर के अन्य अंगों की तरह पाचन तंत्र को भी विश्राम की आवश्यकता होती है । इसके लिए उचित तरीक़ा बस रोज़ा रखना ही हो सकता है । अब पश्चिमी जगत में जटिल रोगों के उपचार का एक नया तरीक़ा विकसित हो रहा है जो निश्चित काल के रोज़ों के सिद्धांत पर आधारित है । भारतीय योग में भी यह पद्धति है । आदिकाल से मानव प्रवृत्ति यह रही है कि उसे जो कुछ प्राप्त होता है उसमें से वह अल्लाह के नाम का दसवां अंश दानस्वरूप निकालता है । समझा जा सकता है कि रोज़ा भी इसी तरह से एक भोजन-दान है । इसी प्रकार की धारणा यह है कि अल्लाह से हर नेक काम का दस गुना इनाम मिलता है । क़ुरआन में है–''जो अल्लाह के पास नेकी लेकर आएगा उसके लिए दस गुना बदला है...'' (6:161)। इस सिद्धांत की नबी (सल्ल॰) ने अपनी पवित्र हदीस में इस प्रकार व्याख्या की है, ''जो कोई रमज़ान के एक मास के और उसके बाद के महीने शव्वाल में 6 दिन के रोज़े रखे, उसने मानो पूरे वर्ष के रोज़े रखे ।'' वास्तव में इस्लामी चन्द्र वर्ष में 355 दिन होते हैं तथा चांद का महीना कभी 29 दिन का होता है और कभी तीस दिन का । इस प्रकार पूरे रमज़ान और शव्वाल के 6 रोज़े मिलाकर एक मुसलमान 35 या 36 रोज़े रखता है । इसका दस गुना 350 या 360 होगा तथा इसका औसत 355 होता है, एक चन्द्र वर्ष के इतने ही दिन होते हैं ।



मांसाहार और हिंसा

सर्वजगत के सृष्टिकर्ता एवं पालनहार ईश्वर ने दो प्रकार के जीव बनाए हैं–शाकाहारी और मांसाहारी । जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, शाकाहारी केवल शाक-सब्ज़ी, फल, अनाज पर ही गुज़ारा करते हैं, जबकि मांसाहारी इनके अलावा मांस, मछली, अंडा आदि भी खाते हैं । सामान्यत: शाकाहारी लोग मांसाहारी को अच्छा नहीं समझते और उन्हें हेय दृष्टि से देखते हैं ।

गीता में श्री कृष्ण जी ने कहा है, ''जीवो जीवस्य जीवनम्'' अर्थात जीव ही जीवों का जीवन है । फिर एक दूसरे स्थान पर कहा ''जीवो जीवस्य भोजनम्'' । अर्थात जीव ही जीवों का भोजन है । प्रकृति ने जो जीवन चक्र बनाया है वह भी इसी सिद्धांत पर आधारित है ।

पेड़-पौधे मिट्टी में मौजूद जीवाणुओं का भक्षण करके ही विकसित होते हैं, जिन्हें शाकाहारी पशु खा जाते हैं । फिर उन पशुओं को मांसाहारी पशु खाते हैं और यह क्रम निरंतर चलता रहता है । इसी सिद्धांत के आधार पर प्रकृति में पर्यावरण का संतुलन बना रहता है । अगर ऐसा न हो तो सारा संसार जंगलों से भर जाता । समुद्र मछलियों से और आकाश पक्षियों से भर जाता और मानव-जीवन बुरी तरह प्रभावित होता ।

कोई व्यक्ति चाहे वह मांस खाता हो या नहीं खाता हो, जब उसका भोजन ही जीव है, तो शाकाहारी हो या मांसाहारी प्रत्येक व्यक्ति हत्या का दोषी हुआ, सभी हिंसक माने जाएंगे । अब देखना यह होगा कि इनमें से ज़्यादा हिंसक कौन है और कम हिंसक कौन । शाकाहारी व्यक्ति जो मुख्य रूप से शाक-सब्ज़ी, दूध-दही आदि खाते हैं । हम जानते हैं कि दूध में हज़ारों जीवाणु होते हैं और इसी लिए दूध को उबाल कर इस्तेमाल किया जाता है और दही तो बनता ही जीवाणुओं से है । दही खाने वाले उन जीवाणुओं को बहुत मज़े लेकर खाते हैं और उतनी ही हत्या का दोष अपने सर लेते हैं । शाक सब्ज़ी में भी कम जीव नहीं होते । उदाहरण के लिए जब हम पालक काटते हैं तो हज़ारों की जानें लेते हैं । इसी तरह फलों और सब्ज़ियों में बीज होते हैं और प्रत्येक बीज में जान होती है और शाक-सब्ज़ी पकाते समय ज़ाहिर है कि इन जीवों की हत्या की जाती है ।

यही हाल खाद्य तेल का है । एक लीटर तेल निकालने के लिए तीन किलोग्राम सरसों की ज़रूरत पड़ती है । तीन किलो में सरसों के लाखों दाने या बीज होते हैं और प्रत्येक बीज जीवित होता है । तेल निकालने के लिए इनकी हत्या की जाती है । इस हिसाब से अगर देखा जाए तो मांसाहार में जीव हत्या कम होती है । एक बकरा या एक बड़ी मछली कई लोगों के लिए पर्याप्त होती है । इसी तरह अंडा और मुर्ग़े की अगर बात करें तो इनमें भी एक ही जीव होता है । अब यह तथ्य विचारणीय है कि कौन अधिक हिंसक हुआ, शाकाहारी या मांसाहारी ?

अब्दुर्रहीम अंसारी

पूर्व न्यायाधीश, हाजीपुर, बिहार

संकट में परिवार

'कान्ति' मासिक अगस्त 2017 के अंक में 'घर-परिवार' के अंतर्गत प्रकाशित आलेख–'वरिष्ठजनों को सहानुभूति नहीं, सम्मान दीजिए' में लेखक के विचारों से मैं पूर्णत: सहमत हूं ।

हमारे देश में प्रतिवर्ष 1 अक्तूबर को विश्व वृद्धजन दिवस मनाया जाता है । मेरे विचार से यह दिवस केवल औपचारिकता है, व्यावहारिक नहीं है । वृद्धावस्था प्रत्येक देहधारियों की स्वाभाविक स्थिति है । जीवित रहने की हालत में युवावस्था के बाद वृद्धावस्था का आना अवश्यंभावी है । लेकिन वृद्धावस्था कष्टप्रद और अभिशाप न बन जाए, इसके लिए युवावस्था से ही शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता अनिवार्य है ।

हमारे देश में वरिष्ठ नागरिकों के सम्मान की परंपरा रही है, लेकिन यह दुखद है कि ''चिरंजीवी भव:'' और ''सदैव सुखी रहो'' का आशीर्वाद देने वाले बुज़ुर्ग अब वृद्धाश्रमों में पहुंचाए जा रहे हैं, उन्हें बच्चों के साथ रहने के अधिकार से वंचित किया जा रहा है । आज देश में 60 वर्ष से अधिक

(शेष पृष्ठ 14 पर)

अनाथ लड़कियों की पुकार

VOICE OF ORPHAN GIRLS

मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया)

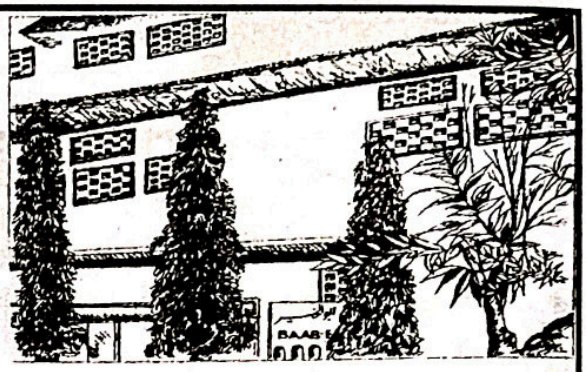

संक्षिप्त परिचय

लड़कियों के लिए आधुनिक और इस्लामी तालीम से लैस राष्ट्रीय स्तर का एक आदर्श रिहाइशी इदारा

● 30 वर्षीय सेवाएं ● 19 विभाग ● शिक्षा : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● पत्राचार शिक्षा I.A., B.A. एवं Library Science ● 9 छात्राओं ने हिफ़्ज़ के साथ मैट्रिक पास किया ● प्रौढ़ शिक्षा ● वोकेशनल सेन्टर ● कटिंग और सिलाई: 11 बैच 103 छात्राएं ● ज़री वर्क्स : 7 बैच 65 छात्राएं ● 1993 ई॰ से 2018 ई॰ तक 87 अनाथ बच्चियों और 61 मां-बाप वाली बच्चियों ने मैट्रिक पास किया ● वार्षिक ख़र्च : 35 लाख रुपये से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● इदारा 110 अनाथ बच्चियों का सारा ख़र्च पूरा करता है ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक यतीम बच्ची का वार्षिक ख़र्च 18,000/- रुपये है–आप भी एक अनाथ बच्ची का ख़र्च उठा कर सवाब में शरीक हों ।

सहायता के विभिन्न रूप : ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● दीनी किताबें ● ज़मीन की ख़रीदारी और क़र्ज़ की अदायगी ● स्टाफ़ की मासिक आय के लिए 1,35,000/- रुपये से अधिक ● मां-बाप या रिश्तेदारों के नाम कमरा या हॉल बनवाना और निर्माण कार्यों के लिए ईंटें, सीमेंट, सरिया और अन्य सामग्री या उसका मूल्य देना ● यहां प्रतिवर्ष हिसाब चेक किये जाते हैं और ऑडिट होता है । ● इदारा में ख़ुद आकर बराबरी का नमूना देखें कि अनाथ बच्चियां और वे बच्चियां जिनके मां-बाप हैं किस तरह मिलकर रहा करती हैं ।

नोट : इस्लामी माहौल, इस्लामी लिबास और इस्लामी यूनिफार्म के साथ-साथ कम ख़र्च में मेयारी तालीम।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

विदेशी चन्दा देने वाले : भारत सरकार से "मुस्लिम लड़कियों का यतीमख़ाना (गया) को विदेशों से चन्दा लेने का इजाज़तनामा प्राप्त हो गया है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

विदेशों में रहने वाले अब BANK A/c No. 300402010009042

BANK CODE NO. UBININBBJAM or IFS Code No. UBIN 0530042

Union Bank of India (Main Branch, GAYA में अपनी रक़म भेज सकते हैं ।

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–"THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE"

Address for correspondence : रक़म भेजने और संपर्क करने का पता

GENERAL SECRETARY, THE GAYA MUSLIM GIRLS ORPHANAGE

At : KOLOWNA, P.O.: CHERKI-824237, Distt.: GAYA (BIHAR) INDIA, Mobile : 9934480190

E-mail : thegayamuslimgirlsorphanage@gmail.com, Website : www.gmgo.org

LOCAL DONORS मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/c No. : 300402010007752

BANK IFS CODE-UBI No. 530042 UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

संस्थापक महासचिव : **इक़बाल अहमद ख़ां**

हज़रत अस्मा (रज़ि॰)

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) परिचय की मुहताज नहीं हैं । वे तो रोशन सूरज के समान थीं । इस्लाम की किरणें जिस दिन इस दुनिया पर पड़ीं तभी वे इस्लाम के क़रीब हुईं । उनका नाम हज़रत अस्मा बिन्त अबू बक्र बिन अबू क़हाफ़ा उस्मान उम्म अब्दुल्लाह कुरैशिया तैमिया, मक्किया, मदनिया है ।

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) के व्यक्तित्व में बहुत सारी विशेषताएं इकट्ठी हो गयी थीं । उनकी मिसाल उस फलदार वृक्ष की है जिसके फल अति उत्तम हों और जड़ गहराई तक ज़मीन के अन्दर हों । उसकी शाखाओं के साथ अल्लाह की ख़ास कृपा हो । इसलिए उनका ज़िक्रेख़ैर होता है । उनकी अच्छी सीरत से लोग एक लंबे अंतराल तक फ़रहत महसूस करते रहेंगे ।

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) की प्रतिष्ठा और शान के लिए उपयुक्त विशेषताएं काफ़ी हैं । इसी वजह से कहा जाता है कि कोई सहाबी ऐसा नहीं है जिसकी चार पीढ़ियों के लोगों को सहाबी होने का श्रेय प्राप्त है सिवाय अबूबक्र (रज़ि॰) के ख़ानदान के । वे स्वयं, उनके पिता, दादा और लड़के सभी सहाबी थे । यह भी एक प्रतिष्ठा की बात है कि उनकी बहन उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि॰) उन्हें उम्मे अब्दुल्लाह कहकर पुकारती थीं ।

मक्का में हिजरत से 27 साल पहले हज़रत अस्मा (रज़ि॰) का जन्म हुआ । उस समय उनके पिता हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि॰) की आयु 21 वर्ष थी । उनके घर में हज़रत अस्मा (रज़ि॰) का उत्तम ढंग से लालन-पालन हुआ । अल्लाह तआला ने उन्हें अच्छी अक़्ल से नवाज़ा था । उनके अख़्लाक़ अच्छे थे । वे हिजरत से पहले ही इस्लाम क़बूल कर चुकी थीं और अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) के हाथ पर बैअत हो चुकी थीं । इस तरह इनकी गिनती 'साबक़ूनल अव्वलून' रसूलुल्लाह (सल्ल॰) के समय (इस्लाम क़बूल करने वाले शुरू के लोगों) में होता है । हक़ और अल्लाह की हिदायत क़बूल करने वालों के पहले गिरोह से इनका संबंध था । ईमान लाने में इनका नम्बर 18वां था । जिन महिलाओं को "इस्लाम में सबक़त" ले जाने की फ़ज़ीलत हासिल थी उनमें हज़रत अस्मा (रज़ि॰) का नाम भी लिया जाता है । उनमें परिपक्वता, बहादुरी और ईमान की सदाक़त जैसी विशेषताएं थीं ।

विशेषताएं

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) में अनेक विशेषताएं एकत्रित हो गयी थीं । सभी महिला सहाबियों में उनका दर्जा इस लिहाज़ से ऊंचा है कि ज्ञान, धैर्य और जिहाद का स्रोत समझी जाती थीं । हम उन पर उचटती-सी नज़र इस लिहाज़ से भी डालेंगे कि वे कौन-सी ऐसी विशेषताएं थीं जिनसे ख़ैर (अच्छाई) की किरणें फूटती थीं ।

सबसे ज़्यादा क़द्रो मंज़िलत वाली ज़ात, यानी अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की उनके यहां ससुराल थी ।

उनकी मांजाई बहन हज़रत आइशा (रज़ि॰) अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की पत्नी थीं ।

उनके पिता हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) एक जलीलुल क़द्र सहाबी, सबसे पहले इस्लाम लाने वाले और "अशरा मुबश्शरा" में सबसे पहले थे ।

उनके दादा अबू क़हाफ़ा को सहाबी होने का शर्फ़ हासिल था । उनको ईमान और सदाक़त सआदत भी मिली थी ।

उनकी दादी उम्मुल और सलमा बिन्त सख़र भी सहाबिया थीं । नबी (सल्ल॰) के फ़ैज़ से अल्लाह की ख़ुशनूदी हासिल की ।

उनकी तीन फूफ़ियां उम्मे फ़रदा, क़रीबा और उम्मे आमिर भी सहाबियाओं में से थीं ।

उनके पति एक जलीलुल क़द्र सहाबी थे और अशरा-मुबश्शरा में से एक थे । रसूल (सल्ल॰) के हवारी (वफ़ादार साथी) थे । आप (सल्ल॰) के चचाज़ाद भाई भी

थे । उनके बेटे हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) भी एक जलीलुल क़द्र सहाबी थे । ये इल्म, इबादत और जिहाद में महत्वपूर्ण स्तंभ समझे जाते थे ।

उनके सगे भाई हज़रत अब्दुर्रहमान थे जो बहुत ही बहादुर और तीरंदाज़ थे ।

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) की प्रतिष्ठा और शान के लिए उपयुक्त विशेषताएं काफ़ी हैं । इसी वजह से कहा जाता है कि कोई सहाबी ऐसा नहीं है जिसकी चार पीढ़ियों के लोगों को सहाबी होने का श्रेय प्राप्त है सिवाय अबूबक्र (रज़ि॰) के ख़ानदान के । वे स्वयं, उनके पिता, दादा और लड़के सभी सहाबी थे ।

यह भी एक प्रतिष्ठा की बात है कि उनकी बहन उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा (रज़ि॰) उन्हें उम्मे अब्दुल्लाह कहकर पुकारती थीं ।

राज़ की रक्षा

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) और उनके पिता सैयदना हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) (जिन्हें ग़ार का साथी होने की प्रतिष्ठा प्राप्त है)–दोनों अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) की सआदत हासिल के लिए प्रयत्नशील रहते थे । विशेषकर देखिए कि किस तरह उन्होंने हिजरत के राज़ की रक्षा की और उसे गुप्त रखा । कुछ ही लोगों को इसकी जानकारी थी ।

इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि मेरी जानकारी में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के मक्का से बाहर निकलने का ज्ञान हज़रत अली बिन अबू तालिब (रज़ि॰) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) के परिजनों ही को था ।

हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) का ख़ानदान बड़ी इज़्ज़त वाला था । उस परिवार के मर्दों, औरतों और गुलामों ने बड़ी क़ुरबानियां दी हैं । हिजरत के समय भी उसी ख़ानदान को यह प्रतिष्ठा प्राप्त हुई । प्रतिभावान और चतुर अब्दुल्लाह बिन अबूबक्र (रज़ि॰) दिन में मुश्रिकों की बातें सुनते और रात में जाकर इन दोनों को बता देते थे । हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) का ग़ुलाम आमिर बिन फ़ुहैरा पूरे दिन ग़ार के आसपास बकरियां चराता और शाम में वहीं रेवड़ को रोकता था । हज़रत अस्मा (रज़ि॰) शाम में जो कुछ हो पाता पका कर खाना ले जाती थीं ।

उपाधि के अनुरूप

हिजरत के दिन आपको "ज़ातुन नताक़ीन" का लक़ब (उपाधि) दिया गया । उनके अन्दर इसका असर था । उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में ऐसे कारनामे अंजाम दिये हैं कि ज़माने तक इस लक़ब को याद किया जात रहेगा । हज़रत अस्मा (रज़ि॰) का जब भी ज़िक्र होगा उनके फ़ज़ीलतों विशेषकर हिजरते नबवी के समय उनके काम को ज़रूर याद किया जाएगा ।

हदीसों की किताबों के अध्ययन से पता चलता है कि हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) की दोनों बेटियों हज़रत अस्मा (रज़ि॰) और हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने जब दोनों मुहाजिरों के लिए सफ़र का सामान मुहैया किया तो उसे चमड़े के एक थैले में रखा । जब थैले का मुंह बांधने का समय आया तो उसे बांधने के लिए कोई चीज़ न मिली । उस समय हज़रत अस्मा (रज़ि॰) ने अपने कमरबन्द को फाड़कर उसके दो टुकड़े कर दिये । एक से थैले का मुंह बांधा और दूसरे से कमर कस ली । उस समय से उनका लक़ब "ज़ातुन नताक़ीन" या "ज़ातुन-नताक़" पड़ गया ।

इस घटना को इमाम बुख़ारी (रह॰) ने हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत किया है । वे फ़रमाती हैं कि हमने ज़ादराह (सफ़र का सामान) तैयार करके उसे एक थैले में रख दिया । हज़रत अस्मा (रज़ि॰) ने अपनी कमरबन्द काट कर उससे थैले का मुंह बांध दिया । इस कारण उनका नाम ही "ज़ातुन नताक़" पड़ गया ।

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) ने इस काम में बड़ी बहादुरी दिखाई अन्यथा बहादुर से बहादुर आदमी भी ठिठक पड़ेगा । क्योंकि इसमें ख़तरा, भय और आतंक अधिक है । ऐसे काम के लिए आदमी के अन्दर साहस और बहादुरी होनी चाहिए । हज़रत अस्मा (रज़ि॰) के कारनामे यहीं पर समाप्त नहीं हो जाते ।

उनके धैर्य और संयम का अनुमान लगाइए कि वे गर्भवती हैं । गर्भ में अब्दुल्लाह पल रहे हैं । रात के अंधेरे में ख़तरनाक रास्तों से गुज़रते हुए पहाड़ पर चढ़कर "ग़ारे सौर" में खाना ले जातीं । मुशरिक लोगों की नज़रों से बचने के लिए कई बार ख़तरों का जोखिम उठाया । अल्लाह की कृपा से हर बार सुरक्षित रहीं ।

बौद्धिक क्षमता

हज़रत अबू क़हाफ़ा के मामले में हज़रत अस्मा (रज़ि॰) ने जो रवैया अपनाया वह अति उत्तम था । इससे उनकी ईमान की सदाक़त (सच्चाई), सामने आ जाने वाली समस्याओं से निबटने और उनकी बुद्धि-समझ का उसी से

अन्दाज़ा होता है ।

इब्ने इसहाक़ ने हज़रत अस्मा (रज़ि॰) से रिवायत की है, वे कहती हैं कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) हिजरत का मन बनाकर मदीना की ओर चले तो अपने साथ सारा माल (पांच हज़ार दिरहम) भी साथ लेते गये । मेरे पास मेरे दादा अबू क़हाफ़ा आये । उस समय तक उनके देखने की क्षमता क्षीण हो चुकी थी । वे कहने लगे मुझे मालूम है कि वे अपने साथ सारा माल भी ले गया है । मैंने कहा, दादा जान ! कदापि नहीं ! इस पर हाथ रखिए । चुनांचे उन्होंने हाथ रखा और बोले–"यदि उन्होंने यह माल छोड़ दिया है तो अच्छा किया । कोई परवाह नहीं । इससे तुम्हारी ज़रूरतें पूरी होती रहेंगी ।" हालांकि उन्होंने मेरे लिए कुछ भी नहीं छोड़ा था, लेकिन मैं बूढ़े दादा को संतुष्ट करना चाहती थी ।

बहादुरी

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) ने क़ुरैश के सरदारों के सामने अपना एक मुजाहिदों वाला कारनामा बयान करना शुरू किया । कहने लगीं कि जब अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) मक्का छोड़कर मदीना चले गये तो क़ुरैश का एक क़ाफ़िला मेरे पास आया, उसमें अबू जहल भी था । मेरे दरवाज़े पर आकर आवाज़ दी, मैं बाहर निकली तो उसने पूछा कि तुम्हारा बाप कहां है ? मैंने कहा, मुझे नहीं मालूम । बदबख़्त अबू जहल ने हाथ से इस ज़ोर का तमाचा मेरे चेहरे पर मारा कि मेरे कान की बाली टूट कर गिर पड़ी । इससे स्पष्ट होता है कि अबू जहल कितना नीच हो चुका था । अरबों की नैतिक मान्यताओं तक से बेपरवाह हो चुका था । अपने व्यक्तित्व को इन्तिहाई पस्ती तक पहुंचा चुका था । पुरुषों का मुक़ाबला न कर सका तो औरत पर हाथ उठा दिया ।

पहले बच्चे का जन्म

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) और हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) जब हिजरत करके मदीना पहुंच गये तो वहां से एक आदमी को मक्का भेज दिया कि वह उनके घर वालों को मदीना ले आये । इस तरह हज़रत अस्मा (रज़ि॰) ने गर्भावस्था में हिजरत की । अल्लाह की यह मर्ज़ी थी कि इस बच्चे को सर्वप्रथम होने का गर्व प्राप्त हो । अबू जाफ़र तबरी ने अपने इतिहास में लिखा है कि दारुल हिजरत (यानी मदीना में जन्म लेने वाला यह पहला बच्चा था । उसके जन्म की सूचना मिलते ही सहाबियों ने "नारा-ए-तकबीर" बुलन्द किया । यह नारा इस ख़ुशी में था कि मुसलमानों को यह बात पहुंची कि यहूदियों ने उन पर जादू कर दिया है, लिहाज़ा अब उनके बच्चे पैदा नहीं होंगे ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर के जन्म के पश्चात अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने उनके नाना हज़रत अबूबक्र (रज़ि॰) को यह आदेश दिया कि बच्चे के कान में अज़ान की आवाज़ पहुंचा दें । फिर आपने बच्चे को अपनी गोद में लिया और तहनीक की । तहनीक का मतलब है–छुहारा चबाकर उसका रस या शहद आदि कोई मीठी चीज़ बच्चे को चटाई जाए । उनका नाम अब्दुल्लाह रखा और उनके नाना की कुन्नियत की तरह अबूबक्र कुन्नियत रखी ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर (रज़ि॰) का जन्म मुसलमानों के लिए बहुत अच्छा साबित हुआ । सारे मुसलमान ख़ुश हो गये । इससे नेक फ़ाल लिया । तक़्वा और अल्लाह के ख़ौफ़ के वातावरण में उनका लालन-पालन हुआ । वे ऐसे ही थे जैसा कि उनकी मां ने उनकी विशेषताएं गिनायी थीं । तहज्जुद पढ़ने वाले, रोज़ा रखने वाले । उनको "मस्जिद का पंक्षी" कहा जाता था ।

बेलाज़री नें हज़रत अस्मा (रज़ि॰) की संतानों का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उनके यहां अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, उर्वा, मंज़र, आसिम, उम्मे हसन और आइशा का जन्म हुआ ।

सब्र और शुक्र करने वाली

सब्र और शुक्र के मामले में आमतौर पर हज़रत अस्मा (रज़ि॰) की मिसालें दी जाती थी । ये दोनों विशेषताएं जन्नतियों के लिए विशेष बताई जाती हैं । वाक़िया यह है कि हज़रत अस्मा (रज़ि॰) पर शुक्रगुज़ार बन्दी बनकर रहीं । आपने इस कार्य-व्यवहार को वे इस तरह बयान करती हैं–

हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) ने मुझसे शादी की, हालांकि उनके एक घोड़े के अलावा और कोई चीज़ न थी । मैं उसके चारा-पानी की व्यवस्था करती और इसके अलावा घर का भी काम करती थी । मदीना से तीन फ़रसख़ (दूरी की इकाई) के फ़ासले पर अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने ज़मीन का एक टुकड़ा प्रदान किया था । एक दिन मैं वहां से आ रही थी । खजूर की गुठलियों की एक टोकरी मेरे सिर पर थी कि रास्ते में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से भेंट

हो गयी । आप (सल्ल॰) के साथ सहाबी भी थे । आपने अपनी सवारी पर मुझको सवार करना चाहा, लेकिन मुझे शर्म का महसूस हुआ । ग़ैरत ने अनुमति न दी चुनांचे मैंने इन्कार कर दिया तो आप (सल्ल॰) आगे बढ़ गये । मैंने घर आकर हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) को सारी बात कह सुनायी । उन्होंने कहा, "अल्लाह की क़सम बोझ उठाने से बेहतर था कि तुम हुज़ूर (सल्ल॰) की सवारी पर बैठ गयी होतीं ।

हज़रत अस्मा (रज़ि॰) के सब्र के संबंध में इस पहलू से भी विचार करें कि उनके पति हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) हालांकि बहुत ही ग़ुरबत वाली ज़िन्दगी बिताते थे, फिर भी हज़रत अस्मा (रज़ि॰) ने मुहब्बत और अपनापन में कोई कमी न दिखायी । न उनकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम किया । हमेशा उनकी दिलजोई में लगी रहती थीं । ईमान, यक़ीन और निहायत ख़ुशी से सारा काम करती थीं । अल्लाह तआला ने उनके भाग्य में जो कुछ लिख दिया था, उस पर संतुष्ट थीं । उनके जीवन के हर रंग में सब्र का जलवा नज़र आता है । इसका नतीजा यह निकला कि उनकी हालत बदल गयी और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) ख़ुशहाली के लिए कोशिश करने लगे । अल्लाह तआला ने हज़रत अस्मा (रज़ि॰) और हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) को इज़्ज़त दी । दोनों को बेनियाज़ी की नेमत मिली ।

इस परिस्थिति में भी हज़रत अस्मा (रज़ि॰) अल्लाह तआला का शुक्र अदा करने लगीं । माल की ज़्यादती ने उनके अन्दर घमंड नहीं पैदा किया । रब की मर्ज़ी और कर्तव्यों के निर्वाह में माल की ज़्यादती बाधा न बनी । हज़रत ज़ुबैर (रज़ि॰) के माल से अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने जो हद तय कर दी थी, उसके अन्दर वे अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करती रहीं । इस सबके बावजूद उनके शुक्र अदा करने की भावना में कोई कमी नहीं आयी । अल्लाह तआला ने उन पर ख़ैर की वर्षा की थी और ख़ैर से नवाज़ा था ।

अल्लाह तआला अबू नईम का भला करे । उन्होंने हज़रत अस्मा (रज़ि॰) का उल्लेख इन विशेषताओं के साथ किया है । तस्दीक़ करने वाली, अल्लाह को याद रखने वाली सब्र और शुक्र करने वाली हज़रत अस्मा बिन्त सिद्दीक़ थीं, जिन्होंने अपने कमरबन्द को अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के रास्ते के सामान की थैली का मुंह बांधने के लिए फाड़ दिया था । ("ज़िन्दगी-ए-नव" से साभार)

नअत

ऐ मक़ाम आपका मर्तबा आपका
नाम आता है बादे ख़ुदा आपका
दीने हक़ नामुकम्मल, बग़ैर आपके
जुज़-ए-ईमान[1] है मानना आपका

आपका हर सुख़न एक मेयारे हक़
मज़हरे अदल हर फ़ैसला आपका
ऐब से पाक है बात किसकी मगर
हश्र तक मुस्तनद[2] है कहां आपका

पेंचो ख़म हैं न ख़तरा किसी मोड़ पर
कितना आसान है रास्ता आपका
कोई तख़्सीस[3] रंग व नसब की नहीं
अहले दुनिया पे है दर खुला आपका

दे के ख़ुशियां ज़माने के ग़म ले लिए
यह है मेयार जूदा सख़ा आपका
जितनी शमा थीं वह सबकी सब बुझ गयीं
ज़ौ फ़िशा है तो बस नक़्श पा आपका

जंग से अम्न क़ायम न होगा अज़ीज़
फिर से अपनाइए रास्ता आपका ।

● **अज़ीज़ बघरवी**

(पृष्ठ 9 का शेष)

आयु के लोगों की संख्या 9.68 करोड़ है और 2026 तक इसे 17 करोड़ और 2050 तक बढ़कर 23 करोड़ जो जाने का अनुमान है । हेल्पएज इंडिया के आंकड़ों के अनुसार देश में बुज़ुर्गों के प्रति अत्याचार में 5 प्रतिशत की वृद्धि आ गयी है । बड़े शहरों में यह समस्या और अधिक है ।

आज युवाओं पर भौतिकवाद इस प्रकार हावी है कि वे पारिवारिक और सामाजिक दायित्वों से भाग रहे हैं । मातृत्व और पितृत्व में उनकी आस्था नहीं, उन्हें ये रिश्ते बोझ लगते हैं । एकाकी परिवार का चलन बढ़ता जा रहा है । यही कारण है कि दाम्पत्य संबंधों में आत्मीयता, प्रगाढ़ता, कर्तव्यपरायणता, समर्पण और त्याग जैसे गुणों का सर्वथा अभाव है । इन कारणों से परिवार का अस्तित्व संकट में पड़ गया है ।

रामस्वरूप झैवर
शास्त्रीनगर विस्तार, भीलवाड़ा (राज॰)

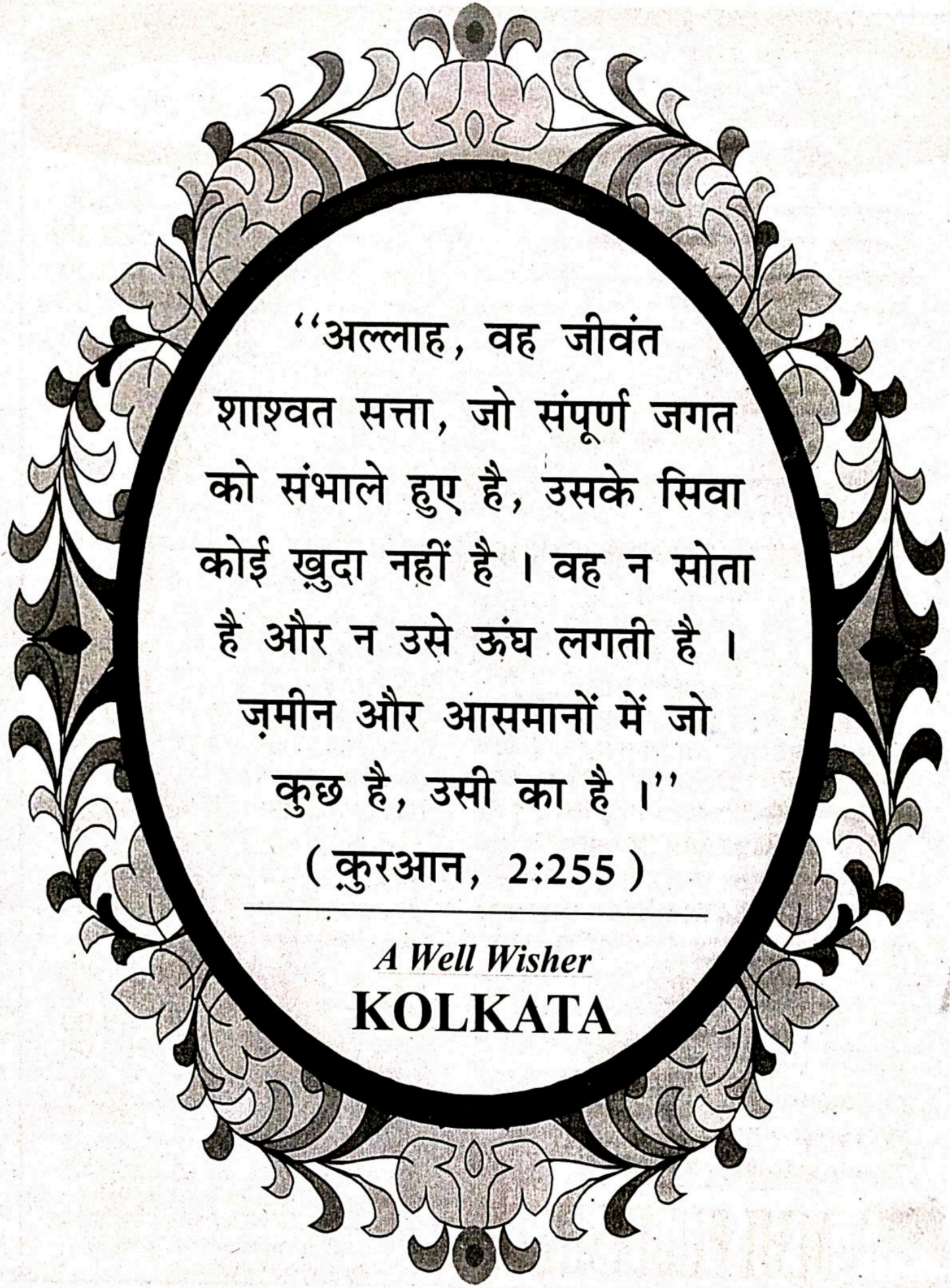
"अल्लाह, वह जीवंत
शाश्वत सत्ता, जो संपूर्ण जगत
को संभाले हुए है, उसके सिवा
कोई ख़ुदा नहीं है । वह न सोता
है और न उसे ऊंघ लगती है ।
ज़मीन और आसमानों में जो
कुछ है, उसी का है ।"
(क़ुरआन, 2:255)
A Well Wisher
KOLKATA

رمضان کے تحفے

ہندی اور انگریزی میں

तलख़ीस तफ़हीमुल क़ुरआन भाग-1	تلخیص: مولانا صدرالدین اصلاحیؒ	660.00
तलख़ीस तफ़हीमुल क़ुरआन भाग-2	تلخیص: مولانا صدرالدین اصلاحیؒ	520.00
अनूदित क़ुरआन मजीद 23 X 36 / 16	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	380.00
तफ़हीमुल क़ुरआन-1	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	375.00
तफ़हीमुल क़ुरआन-2	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	500.00
तफ़हीमुल क़ुरआन-3	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	580.00
ईदुल-फ़ित्र किसके लिए?	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	14.00
ख़ुतबात-३ (नमाज़,रोज़ा की हक़ीक़त)	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	30.00
रोज़ा और उसका असली मक़सद	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	10.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	خرم مرادؒ	26.00

Towards Understanding the Qur'an

Surahs1-3 Vol.I [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	210.00
Surahs 4-6 Vol.II [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	175.00
Surahs 7-9 Vol.III [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	210.00
Surahs 10-16 Vol.IV [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	215.00
Surahs 17-21 Vol.V [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	200.00
Surahs 22-24 Vol.VI [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	200.00
Surahs 25-28 Vol.VII [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	160.00
Surahs 29-32 Vol.VIII [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	190.00
Surahs 33-37 Vol.IX [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	300.00
Surahs 38-46 Vol.X [HB]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	300.00
Surahs 78-114 Part-30(Juz'Amma)	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	240.00
Towards Understanding the Qur'an [20x26/08]	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	500.00
[20x26/16]		300.00
23x36/16[PB]		550.00
23x32/16[PB]		200.00
Fundamentals of Islam Part -III	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	34.00
Worship and Festivals in Islam	مولانا سیّدابوالاعلیٰ مودودیؒ	38.00
The Institution of Fasting	محمد مظہر حسینی	35.00

MMI PUBLISHERS

D-307,Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Mob: 7290092401
E-mail:info@mmipublishers.net,mmipublishers@gmail.com
Website: www.mmipublishers.net

रोकिए कन्या भ्रूण-हत्याएं

■ मुहम्मद जैनुल आबिदीन मंसूरी

पाश्चात्य देशों की तरह, भारत भी नारी-अपमान, अत्याचार एवं शोषण के अनेकानेक निन्दनीय कृत्यों से ग्रस्त है । उनमें सबसे दुखद 'कन्या भ्रूण-हत्या' से संबंधित अमानवीयता, अनैतिकता और क्रूरता की वर्तमान स्थिति हमारे देश की ही 'विशेषता' है...उस देश की, जिसे एक धर्म प्रधान देश, अहिंसा व आध्यात्मिकता का प्रेमी देश और नारी-गौरव-गरिमा का देश होने पर गर्व है ।

वैसे तो प्राचीन इतिहास में नारी पारिवारिक व सामाजिक जीवन में बहुत निचली श्रेणी पर भी रखी गयी नज़र आती है, लेकिन ज्ञान-विज्ञान की उन्नति तथा सभ्यता-संस्कृति की प्रगति से परिस्थिति में कुछ सुधार अवश्य आया है, फिर भी अपमान, दुर्व्यवहार, अत्याचार और शोषण की कुछ नयी व आधुनिक दुष्परंपराओं और कुप्रथाओं का प्रचलन हमारी संवेदनशीलता को खुलेआम चुनौती देने लगा है । साइंस व टेक्नॉलोजी ने कन्या-वध की सीमित समस्या को, अल्ट्रासाउंड तकनीक द्वारा भ्रूण-लिंग की जानकारी देकर, समाज में कन्या भ्रूण-हत्या को व्यापक बना दिया है । दुख की बात है कि शिक्षित तथा आर्थिक स्तर पर सुखी-संपन्न वर्ग में यह अतिनिंदनीय काम अपनी जड़ें तेज़ी से फैलाता जा रहा है ।

इस व्यापक समस्या को रोकने के लिए गत कुछ वर्षों से कुछ चिंता व्यक्त की जाने लगी है । साइन बोर्ड बनाने से लेकर क़ानून बनाने तक, कुछ उपाय भी किये जाते रहे हैं । जहां तक क़ानून की बात है, विडंबना यह है कि अपराध तीव्र गति से आगे-आगे चलते हैं और क़ानून धीमी चाल से काफ़ी दूरी पर, पीछे-पीछे । नारी-आन्दोलन भी रह-रहकर कुछ चिंता प्रदर्शित करता रहता है, यद्यपि वह नाइट क्लब कल्चर, सौंदर्य-प्रतियोगिता कल्चर, कैटवाक कल्चर, पब कल्चर, कॉल गर्ल कल्चर, वैलेन्टाइन कल्चर आदि आधुनिकताओं तथा अत्याधुनिकताओं की स्वतंत्रता, स्वच्छंदता, विकास व उन्नति के लिए (मौलिक मानवाधिकार के हवाले से) जितना अधिक जोश, तत्परता व तन्मयता दिखाता है, उसकी तुलना में कन्या भ्रूण-हत्या को रोकने में बहुत कम तत्पर रहता है ।

कुछ वर्ष पूर्व एक मुस्लिम सम्मेलन में (जिसका मूल-विषय 'मानव- अधिकार' था) एक अखिल भारतीय प्रसिद्ध व प्रमुख एन॰जी॰ओ॰ की एक राज्य स्तरीय (महिला) सचिव ने कहा था : 'पुरुष-स्त्री अनुपात हमारे देश में बहुत बिगड़ चुका है (1000:840, से 1000:970 तक) लेकिन इसकी तुलना में मुस्लिम समाज में यह अनुपात बहुत अच्छा, हर समाज से अच्छा है । मुस्लिम समाज से अनुरोध है कि वह इस विषय में हमारे समाज और देश का मार्गदर्शन और सहायता करें...।'

उपरोक्त असंतुलित लिंग-अनुपात के बारे में एक पहलू तो यह है कि कथित महिला की जैसी चिंता, हमारे समाजशास्त्री वर्ग के लोग आमतौर पर दर्शाते रहते हैं और दूसरा पहलू यह है कि जैसा कि उपरोक्त महिला ने ख़ासतौर पर ज़िक्र किया, हिन्दू समाज की तुलना में मुस्लिम समाज की स्थिति काफ़ी अच्छी है । इसके कारकों व कारणों की समझ भी तुलनात्मक विवेचन से ही आ सकती है । मुस्लिम समाज में बहुएं जलाई नहीं जातीं । 'बलात्कार और उसके बाद हत्या' नहीं होती । लड़कियां अपने माता-पिता के सिर पर दहेज और ख़र्चीली शादी का पड़ा बोझ हटा देने के लिए आत्महत्या नहीं करती । जिस पत्नी से निबाह न हो रहा हो उससे 'छुटकारा' पाने के लिए 'हत्या' की जगह पर 'तलाक़' का विकल्प है और इन सबके अतिरिक्त, कन्या भ्रूण-हत्या की लानत मुस्लिम समाज में नहीं है ।

मुस्लिम समाज यद्यपि भारतीय मूल से ही उपजा, इसी का एक अंग है; यहां की परंपराओं से सामीप्य और निरंतर मेल-जोल की स्थिति में वह यहां के बहुत सारे सामाजिक रीति-रिवाज से प्रभावित रहा तथा स्वयं को एक आदर्श इस्लामी समाज के रूप में पेश नहीं कर सका, बहुत सारी कमज़ोरियां उसमें भी घर कर गयी हैं, फिर भी तुलनात्मक स्तर पर उसमें जो सद्गुण पाए जाते हैं, उनका कारण सिवाय इसके कुछ और नहीं हो सकता, न ही है, कि उसकी उठान एवं संरचना तथा उसकी संस्कृति को उत्कृष्ट बनाने में

इस्लाम ने एक प्रभावशाली भूमिका अदा की है ।

इस्लाम, 1400 वर्ष पूर्व जब अरब प्रायद्वीप (Arabian Penisula) के मरुस्थलीय क्षेत्र में एक असभ्य और अशिक्षित क़ौम के बीच आया, तो अनैतिकता, चरित्रहीनता, अत्याचार, अन्याय, नग्नता व अश्लीलता और नारी अपमान और कन्या-वध के बहुत से रूप समाज में मौजूद थे । इस्लाम के पैग़म्बर का ईश्वरीय मिशन, ऐसा कोई 'समाज सुधार-मिशन' न था जिसका प्रभाव जीवन के कुछ पहलुओं पर कुछ मुद्दत के लिए पड़ जाता और फिर पुरानी स्थिति वापस आ जाती। बल्कि आपका मिशन 'संपूर्ण-परिवर्तन', समग्र व स्थायी 'क्रान्ति' था, इसलिए आप (सल्ल०) ने मानव-जीवन की समस्याओं को अलग-अलग हल करने का प्रयास नहीं किया बल्कि उस मूल-बिन्दु से काम शुरू किया जहां समस्याओं का आधार होता है । इस्लाम की दृष्टि में वह मूल बिन्दु समाज, क़ानून-व्यवस्था या प्रशासनिक व्यवस्था नहीं बल्कि स्वयं 'मनुष्य' है अर्थात व्यक्ति का अंत:करण, उसकी आत्मा, उसकी प्रकृति व मनोवृत्ति, उसका स्वभाव, उसकी चेतना, उसकी मान्यताएं व धारणाएं और उसकी सोच तथा उसकी मानसिकता व मनोप्रकृति ।

इस्लाम की नीति यह है कि मनुष्य का सही और वास्तविक संबंध उसके रचयिता, स्वामी, प्रभु से जितना कमज़ोर होगा समाज उतना ही बिगाड़ का शिकार होगा । अतएव सबसे पहला क़दम इस्लाम ने यह उठाया कि इन्सान के अन्दर एकेश्वरवाद का विश्वास और पारलौकिक जीवन में अच्छे या बुरे कामों का तद्नुसार बदला (कर्मानुसार 'स्वर्ग' या 'नरक') पाने का विश्वास ख़ूब-ख़ूब मज़बूत कर दे । फिर अगला क़दम यह कि इसी विश्वास के माध्यम से मनुष्य, समाज व सामूहिक व्यवस्था में अच्छाइयों के उत्थान व स्थापना का, तथा बुराइयों के दमन व उन्मूलन का काम ले । इस्लाम की पूरी जीवन-व्यवस्था इसी सिद्धांत पर संरचित होती है और इसी के माध्यम से बदी व बुराई का निवारण भी होता है ।

बेटियों की निर्मम हत्या की उपरोक्त कुप्रथा को ख़त्म करने के लिए पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने अभियान छेड़ने, भाषण देने, आन्दोलन चलाने, और 'क़ानून-पुलिस-अदालत-जेल' का प्रकरण बनाने के बजाय केवल इतना कहा कि 'जिस व्यक्ति के तीन (या तीन से कम भी) बेटियां हों, वह उन्हें ज़िन्दा गाड़कर उनकी हत्या न करे, उन्हें सप्रेम व स्नेहपूर्वक पाले-पोसे, उन्हें (नेकी, शालीनता, सदाचरण व ईशपरायणता की) उत्तम शिक्षा-दीक्षा दे, बेटों को उन पर प्रमुखता व वरीयता न दे, और अच्छा-सा (नेक) रिश्ता ढूंढ़कर उनका घर बसा दे, तो पारलौकिक जीवन में वह स्वर्ग में मेरे साथ रहेगा ।'

'परलोकवाद' पर दृढ़ विश्वास वाले इन्सानों पर उपरोक्त संक्षिप्त-सी शिक्षा ने जादू का-सा असर किया । जिन लोगों के चेहरों पर बेटी पैदा होने की ख़बर सुनकर कलौंस छा जाया करती थी (क़ुरआन, 16:58) उनके चेहरे अब बेटी की पैदाइश पर, इस विश्वास से, खिल उठने लगे कि उन्हें स्वर्ग-प्राप्ति का एक साधन मिल गया है । फिर बेटी अभिशाप नहीं, वरदान, ख़ुदा की नेमत, बरकत और सौभाग्यशाली मानी जाने लगी और समाज की, देखते-देखते काया पलट गयी ।

मनुष्य की कमज़ोरी है कि कभी कुछ काम लाभ की चाहत में करता है और कभी डर, भय से, और नुक़सान से बचने के लिए करता है । इन्सान के रचयिता ईश्वर से अच्छा, भला इस मानव-प्रकृति को और कौन जान सकता है ? अत: इस पहलू से भी कन्या-वध करने वालों को अल्लाह ने चेतावनी दी । इस चेतावनी की शैली बड़ी अजीब है जिसमें अपराधी को नहीं, मारी गयी बच्ची से संबोधन की बात क़ुरआन में आयी है –'और जब (अर्थात परलोक में हिसाब-किताब, फ़ैसला और बदला मिलने के दिन) ज़िन्दा गाड़ी गयी बच्ची से (ईश्वर द्वारा) पूछा जाएगा, कि वह किस जुर्म में क़त्ल की गयी थी' (81:8,9)।

इस वाक्य में, बेटियों को क़त्ल करने वालों को सख़्त-चेतावनी दी गयी है और इसमें सर्वोच्च व सर्वसक्षम न्यायी 'ईश्वर' की अदालत से सख़्त सज़ा का फ़ैसला दिया जाना निहित है । एकेश्वरवाद की धारणा तथा उसके अंतर्गत परलोकवाद पर दृढ़ विश्वास का ही करिश्मा था कि मुस्लिम समाज से कन्या-वध की लानत जड़, बुनियाद से उखड़ गयी । 1400 वर्षों से यही धारणा, यही विश्वास मुस्लिम समाज में ख़ामोशी से अपना काम करता आ रहा है और आज भी, भारत में मुस्लिम समाज 'कन्या भ्रूण-हत्या' की लानत से पाक, सर्वथा सुरक्षित है । देश को इस लानत से मुक्ति दिलाने के लिए इस्लाम के स्थाई एवं प्रभावकारी विकल्प से उसको लाभांवित कराना समय की एक बड़ी आवश्यकता है ।

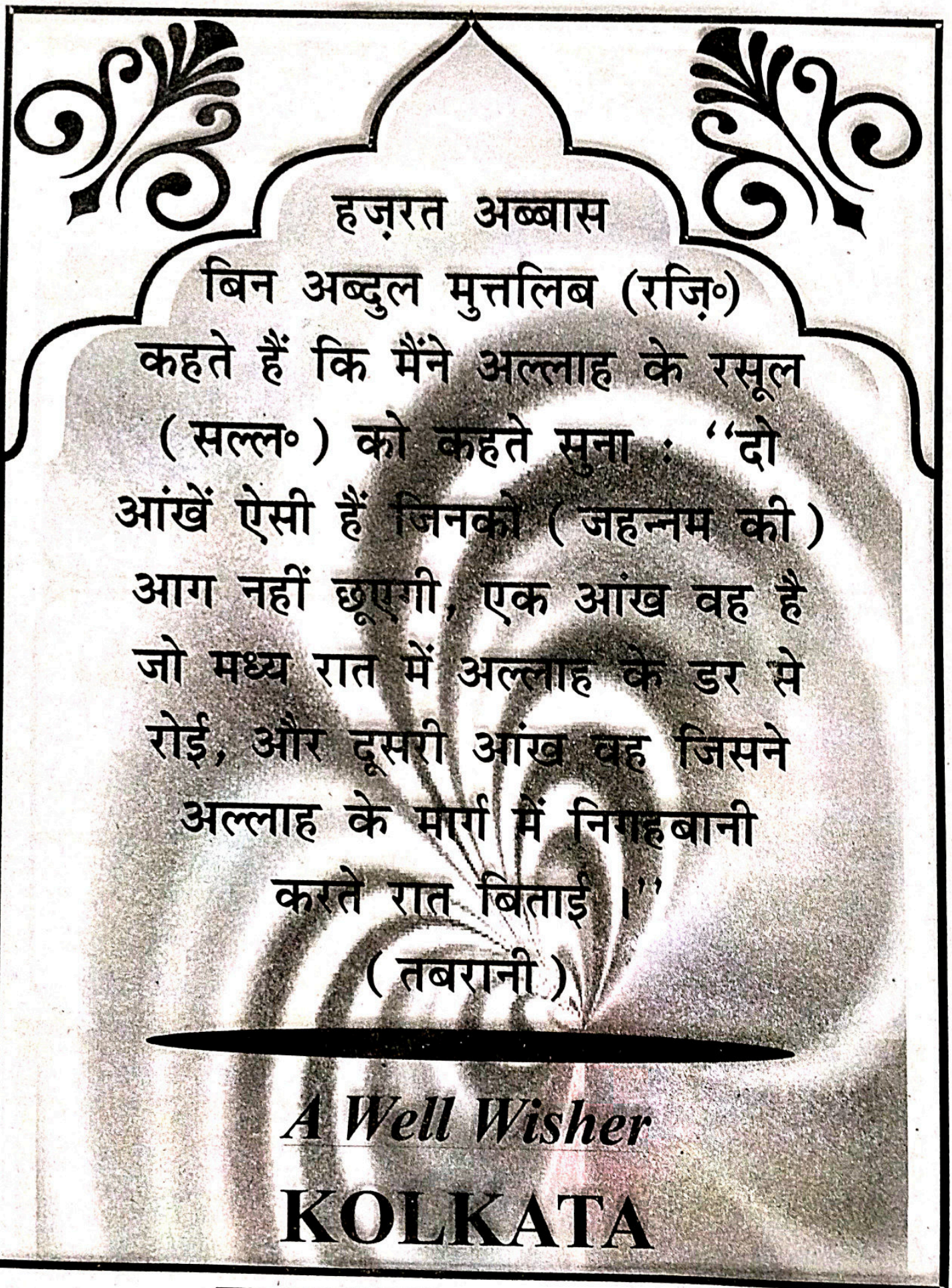
हज़रत अब्बास
बिन अब्दुल मुत्तलिब (रज़ि०)
कहते हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल
(सल्ल०) को कहते सुना : "दो
आंखें ऐसी हैं जिनको (जहन्नम की)
आग नहीं छूएगी, एक आंख वह है
जो मध्य रात में अल्लाह के डर से
रोई, और दूसरी आंख वह जिसने
अल्लाह के मार्ग में निगहबानी
करते रात बिताई।"
(तबरानी)
A Well Wisher
KOLKATA

قادری دواخانہ کی کامیاب ترین یونانی دوائیں

LARGEST UNANI
G.M.P.
CERTIFIED COMPANY

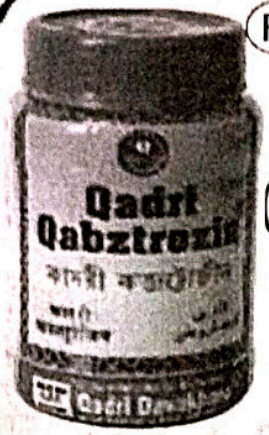

گیسٹک کے درد میں

قادری قبض ٹروجن

بدہضمی، بھوک کی کمی، درد جگر، قبض، سینے کی جلن اور پیٹ کے امراض میں بہت ہی مفید ہے



گھٹیا کے درد میں؟

زعفرانی تیل

کسی بھی قسم کے درد، چوٹ، موچ، گھٹیا۔ جلنے کٹنے اور بچوں کی مالش میں بہت ہی مفید ہے۔

پشٹک چورن



جریان، کثرت احتلام، سرعت انزال، ضعف باہ اور جملہ امراض مردانہ میں بہت مفید ہے

ذیابطیش سی

شوگر کی کامیاب دوا



مثانہ کو قوت پہنچاتی ہے۔ پیشاب کی زیادتی اور ذیابطیش سے ہونے والی کمزوری میں بے حد مفید ہے

Qadri Dawakhana™

An ISO 9001:2008 Certified Company

B-18, Nawab Wajid Ali Shah Road, Kol-24

(O) S-152, S. A. Farooquie Road. (Akra Road) Kolkata- 700 018

Ph. No. 2469-3173-2489-3539

www.qadridawakhana.com • E-mail : qadridawakhana80@yahoo.co.in

टी॰बी॰ से छुटकारा पाने की चुनौती

■ अरविंद कुमार सिंह



यह बेहद चिंताजनक तथ्य है कि दुनिया भर में टी॰बी॰ (तपेदिक) की राजधानी कहे जाने वाले भारत में इस वर्ष पंद्रह लाख से ज़्यादा नये तपेदिक मरीज़ों की पहचान हुई है । यह खुलासा खुद केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय की रिपोर्ट से हुआ है, जिसमें कहा गया है कि 2017 में 1 जनवरी से लेकर 5 दिसंबर के बीच 15,18,008 मरीज़ मिले हैं । इनमें से 12,05,488 मरीज़ों की पहचान सरकारी अस्पतालों से हुई है, जबकि निजी अस्पतालों से 3,12,520 मरीज़ों का पता लगा है । ताज़ा आंकड़ों को शामिल कर लिया जाए तो अब भारत में टी॰बी॰ मरीज़ों की तादाद पैंतीस लाख से ऊपर पहुंच चुकी है ।

दिल्ली का नेहरू नगर टी॰बी॰ को लेकर 'रेड ज़ोन' में रखा गया है । इस इलाक़े में सर्वाधिक 2,729 मरीज़ दर्ज हुए हैं । उत्तर प्रदेश में टी॰बी॰ के 2,54,717 मरीज़ दर्ज हुए हैं, जो देश में सर्वाधिक है । इस राज्य में कानपुर ज़िले को 'रेड अलर्ट' पर रखा गया है जहां सर्वाधिक 12,863 मरीज़ पंजीकृत हैं । उत्तर प्रदेश के बाद टी॰बी॰ के मरीज़ों के मामले में महाराष्ट्र दूसरे और गुजरात तीसरे नंबर पर है । महाराष्ट्र में टी॰बी॰ के 1,64,113 तथा गुजरात में 1,23,101 मरीज़ हैं ।

एक ओर, भारत ने 2025 तक टी॰बी॰ पर नियंत्रण पाने का लक्ष्य सुनिश्चित कर रखा है और इस सिलसिले में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा मदद भी दी जा रही है, जबकि दूसरी ओर, यहां टी॰बी॰ के मरीज़ों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है । विश्व स्वास्थ्य संगठन के मुताबिक़ 2015 में भारत में टी॰बी॰ के 28 लाख मामले सामने आये थे और उस साल इस बीमारी से 4.8 लाख लोगों की मौत हुई थी । ग़ौर करें तो कमोबेश हर वर्ष टी॰बी॰ के लाखों मरीज़ मौत के मुंह में जा रहे हैं । जबकि भारत में टी॰बी॰ के बहुत सारे मामले दर्ज नहीं होते हैं ।

आंकड़े बताते हैं कि दर्ज नहीं होने वाले मामलों में विश्व में हर चौथा मामला भारत का होता है । उदाहरण के लिए, वर्ष 2013 में दस देशों में तपेदिक के तक़रीबन चौबीस लाख मामले दर्ज ही नहीं हुए, जिनमें सर्वाधिक संख्या भारतीयों की थी । दरअस्ल, भारत में टी॰बी॰ रोग में वृद्धि का मूल कारण जागरूकता की कमी और उचित इलाज का अभाव है । इसी का नतीजा है कि भारत में टी॰बी॰ के मरीज़ों की संख्या में इज़ाफ़ा हो रहा है । ग़ौरतलब है कि टी॰बी॰ माइक्रोबैक्टिरियम टुबरक्लोरसिस नामक जीवाणु के कारण होता है । यह प्रतिवर्ष बीस लाख से अधिक लोगों को प्रभावित करता है ।

भारत में हर वर्ष तीन लाख से अधिक लोगों को टी॰बी॰ के कारण मौत के मुंह में जाना पड़ता है । टी॰बी॰ का फैलाव इस रोग से ग्रस्त व्यक्ति द्वारा लिए जाने वाले श्वास-प्रश्वास के द्वारा होता है । केवल एक रोगी पूरे वर्ष के दौरान दस से भी अधिक लोगों को संक्रमित कर सकता

है । यह बीमारी प्रमुख रूप से फेफड़ों को प्रभावित करती है । लेकिन अगर इसका समय रहते उपचार न कराया जाए तो यह रक्त के द्वारा शरीर के दूसरे भागों में भी फैल कर उन्हें संक्रमित करती है । ऐसे संक्रमण को द्वितीय संक्रमण कहा जाता है । यह संक्रमण किडनी, पेल्विक, डिंबवाही नलियों या फैलोपियन ट्यूब्स, गर्भाशय और मस्तिष्क को प्रभावित कर सकता है ।

टी०बी० महिलाओं के लिए और घातक साबित होती है । इसलिए कि जब बैक्टिरियम प्रजनन मार्ग में पहुंच जाते हैं तब जेनाइटल टी०बी० या पेल्विक टी०बी० हो जाती है जो महिलाओं में बांझपन की वजह बनती है । महिलाओं में टी०बी० के कारण जब गर्भाशय का संक्रमण हो जाता है तब गर्भाशय की सबसे अंदरूनी परत पतली हो जाती है, जिसके फलस्वरूप गर्भ या भ्रूण के ठीक तरीके से विकसित होने में बाधा आती है । ध्यान देना होगा कि टी०बी० केवल महिलाओं में बांझपन का कारण नहीं बनता है, इससे पुरुष भी बुरी तरह प्रभावित होते हैं । टी०बी० के कारण पुरुषों में एपिडिडायमो-आर्किटिस हो जाता है जिससे शुक्राणु वीर्य में नहीं पहुंच पाते और पुरुष एजुस्पर्मिक हो जाते हैं । इसके लक्षण तत्काल दिखायी नहीं देते और लक्षण दिखायी देने तक यह प्रजनन क्षमता को पहले ही नुक़सान पहुंचा चुके होते हैं ।

आंकड़े बताते हैं कि टी०बी० से पीड़ित हर दस महिलाओं में से दो गर्भधारण नहीं कर पाती हैं । जननांगों की टी०बी० के चालीस से अस्सी प्रतिशत मामले महिलाओं में ही देखे जाते हैं । अधिकतर वे लोग इसकी चपेट में आते हैं जिनका रोग प्रतिरोधक तंत्र कमज़ोर होता है और जो संक्रमित व्यक्ति के संपर्क में आते हैं । जब संक्रमित व्यक्ति खांसता या छींकता है तब बैक्टिरिया वायु में फैल जाते हैं और जब हम सांस लेते हैं तो ये हमारे फेफड़ों में पहुंच जाते हैं । महिलाओं के साथ बच्चों के लिए भी टी०बी० एक बहुत बड़ा ख़तरा है ।.कमज़ोर तबक़ों के बच्चे अन्य लोगों की तुलना में टी०बी० के दायरे में ज़्यादा होते हैं । ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि टी०बी० की जद में आने वाले बच्चों के तत्काल इलाज की व्यवस्था की जाए ।

बी०सी०जी० का टीका बच्चों में टी०बी० के उपचार में काफ़ी हद तक कारगर साबित हो रहा है । आमतौर पर टी०बी० के साधारण लक्षण होते हैं जिनकी आसानी से पहचान की जा सकती है । तीन सप्ताह से अधिक समय से खांसी या थूक के साथ ख़ून आए तो सतर्क हो जाना चाहिए । टी०बी० की जद में आने वाले व्यक्ति को अक्सर रात्रि के समय ज्वर आता है और धीरे-धीरे उसका वज़न कम होता जाता है । उसे भूख भी नहीं लगती और शरीर कमज़ोर होता जाता है । अगर ऐसा कुछ लक्षण दिखे तो तत्काल डॉक्टर से परामर्श लेकर उचित इलाज कराया जाना चाहिए ।

यह विडंबना है कि भारत में तपेदिक पर क़ाबू पाने की कई योजनाएं चल रही हैं, लेकिन इस बीमारी ने एड्स को भी पीछे छोड़ दिया है । विशेषज्ञों का कहना है कि ग़रीबी, कुपोषण, सरकारी अस्पतालों में डॉक्टरों और दवाओं की कमी और सार्वजनिक स्वास्थ्य संबंधी योजनाओं के लिए धन की कमी टी०बी० पर क़ाबू पाने की राह में सबसे बड़ी बाधा हैं । नतीजतन, टी०वी० के ख़िलाफ़ लड़ाई कमज़ोर पड़ रही है । भारत में सार्वजनिक चिकित्सा व्यवस्था की बदहाली किसी से छिपी नहीं है । महानगरों और शहरों में तो अस्पताल, नर्सिंग होम, डॉक्टर और दवाएं उपलब्ध हैं लेकिन क़स्बों-गांवों की हालत बेहद ख़स्ता है । वहां न तो डॉक्टर हैं और न ही अस्पताल । भला ऐसे में टी०बी० पीड़ितों का इलाज कैसे होगा !

बदतर हालात के लिए सरकार की नीतियां ही ज़िम्मेदार हैं । सरकार स्वास्थ्य को लेकर पर्याप्त गंभीर नहीं है । पिछले दो दशक के दर्मियान सरकारों ने विभिन्न रोगों की रोकथाम और कल्याणमूलक परियोजनाओं के मद में धन की कटौती की है । इसका ख़मियाज़ा तपेदिक नियंत्रण कार्यक्रम को भी भुगतना पड़ा है, यानी ज़रूरत से काफ़ी कम आवंटन के चलते टी०बी० नियंत्रण कार्यक्रम को कारगर ढंग से नहीं चलाया जा सका । अब भी वही स्थिति है ।

स्वास्थ्य विशेषज्ञों की मानें तो सरकार को ग़ैर-ज़रूरी ख़र्चों में कटौती करके सार्वजनिक स्वास्थ्य से संबंधित परियोजनाओं को पर्याप्त धन मुहैया कराना चाहिए । इसलिए और भी कि धन की कमी की वजह से टी०बी० से आधी-अधूरी लड़ाई लड़ी जा रही है, जो बेहद ख़तरनाक है और इसका ख़मियाजा देश की भावी पीढ़ी को भुगतना होगा । उचित होगा कि भारत सरकार टी०बी० पर प्रभावी नियंत्रण की योजना तैयार करे और इस सिलसिले में विश्व स्वास्थ्य संगठन तथा ग़ैर-सरकारी संगठनों को भी साथ जोड़े, ताकि इस ख़तरनाक बीमारी से निजात पायी जा सके ।

टिप्स

जब नींद न आए

अगर आपको नींद नहीं आती तो यह समस्या इनसोमनिया हो सकती है । पर्याप्त और अच्छी नींद न आने का कारण हार्मोन परिवर्तन, दबाव, मानसिक असंतुलन और ड्रग्स लेना भी हो सकता है, लेकिन घबराएं नहीं । संतुलित भोजन, जीवनशैली में कुछ परिवर्तन और जड़ी-बूटियों के प्रयोग के माध्यम से आप इसका इलाज कर सकते हैं । आइए ग़ौर करते हैं कुछ ख़ास बातों पर–

● कैफिन ड्रिंक्स जैसे कॉफ़ी, चाय, कोला के ज़रिए शरीर में एड्रेनालिन पहुंचता है जो नींद आने में बाधा उत्पन्न करता है ।

● खाने में अधिक नमक का इस्तेमाल करना भी इनसोमनिया का कारण बनता है ।

● विटामिन बी की कमी भी इनसोमनिया और सामान्य तनाव के लक्षण से जुड़ा है । रात के खाने में विटामिन बी वाले पदार्थों को शामिल करें । रात के खाने में मछली या चिकन भी ले सकते हैं । उनमें विटामिन बी-3 प्रचुर मात्रा में पाया जाता है ।

● कमज़ोर समावेशन के कारण कैल्शियम का अभाव या पोषक तत्वों का अभाव भी इनसोमनिया का कारण है ।

● किसी बात को लेकर अधिक क्रिया प्रतिक्रिया के कारण भी नींद नहीं आती ।

● सोने से पहले एक गिलास गरम दूध काफ़ी सहायक हो सकता है क्योंकि दूध में एमीनोएसिड-ट्रायप्टोफान पाया जाता है जो आराम की नींद लाने में सहायता करता है ।

● मैग्नीशियम का अभाव घबराहट पैदा करता है जिससे नींद नहीं आती । इसलिए गेहूं, मूंगफली समेत मैग्नीशियम तत्व वाले पदार्थों को खाने में शामिल करें ।

डायबिटीज़ के लिए कुछ प्राकृतिक खाद्य पदार्थ

कुछ प्राकृतिक खाद्य पदार्थ वयस्कों के डायबिटीज (टाइप-2) में ख़ून में चीनी की मात्रा कम रखने में सहायक होते हैं ।

मेथी

मेथी के बीज ख़ून में चीनी की मात्रा कम करते हैं, इंसुलिन का स्तर भी घटाते हैं । बुरा क़ोलेस्ट्रोल कम करते हैं और अच्छा बढ़ाते हैं ।

एलोवेरा

एलोवेरा की पत्तियों के अन्दर का रस प्रभावशाली है ।

प्रिकली पीयर

इसमें ऐसे फाइबर होते हैं जो चीनी के अणुओं को झटका देते हैं और ख़ून में उनका जाना धीमा कर देते हैं ।

ग्रीन टी

इसके कुछ तत्व बुनियादी और इंसुलित आधारित ग्लूकोज का उपयोग बढ़ा देते हैं ।

लहसुन

ग्लूकोज का स्तर कम करता है, फ्री इंसुलिन की मात्रा बढ़ता है ।

दालचीनी

इंसुलिन के प्रभाव को तिगुना कर देती है ।

कोको

इसमें फ्लेवेनॉइड्स होते हैं जो शरीर में चीनी का उपापचय बढ़ा देते हैं ।

करेला

शरीर में ग्लूकोज का उपयोग बढ़ा देता है, ख़ून में ग्लूकोज का बनना कम करता है, करेले का रस या इसके बीज उपयोगी हैं ।

स्टिंगिंग नेटल

इसकी जड़ें और पत्तियां ख़ून में चीनी का स्तर कम करती हैं ।



"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और जो कुछ तुम्हारा ब्याज लोगों पर बाक़ी रह गया है उसे छोड़ दो, अगर वास्तव में तुम ईमान लाए हो ।"

(क़ुरआन, 2:278)

A Well Wisher

KOLKATA

"जो लोग अपने माल अल्लाह के मार्ग में ख़र्च करते हैं, उनके ख़र्च की मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना बोया जाए और उससे सात बालें निकलें और हर बाल में सौ दाने हों ।"

(क़ुरआन, 2:261)

A Well Wisher

KOLKATA

रोज़ा और आत्मिक विकास

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

वर्तमान में बहुत बड़ी जनसंख्या उपभोक्ता अपसंस्कृति के मोहपाश में फंसकर चरित्रहीनता के गर्त में गिरती जा रही है । इस जनसंख्या को पतन के इस गर्त में गिरने से बचाने का सर्वोत्तम साधन है ईशपरायणता (तक़्वा) और रोज़ा । रोज़ा इन्सानों में ईशपरायणता पैदा करने का अत्यंत महत्वपूर्ण साधन है । रोज़े से लोगों का आत्मिक और चारित्रिक उत्थान होता है, जिससे सुन्दर, सुव्यवस्थित और चरित्रवान समाज अस्तित्व में आता है । रोज़े से इन्सानों में आज्ञापालन, अनुशासन, नम्रता, विनयशीलता, सत्यप्रियता, मनोनिग्रह, संयम, धैर्य, सहनशीलता, सहानुभूति, परहेज़गारी, सदाचार, परोपकार, त्याग नैतिकता, दयालुता, दानशीलता जैसे मानवीय गुण पैदा होते हैं ।

इस प्रकार रोज़ा कुप्रवृत्तियों एवं बुराइयों के ख़िलाफ़ जिहाद है । यह इन्सानी भाईचारा को बढ़ावा देता है और कल्याणकारी तथा समतामूलक समाज का निर्माण करता है । यहां सवाल यह पैदा होता है कि क्या आज का मुस्लिम समाज ऐसा कर रहा है ? अगर 'हां' तो बड़ी अच्छी बात है और 'नहीं' तो इस समाज को गंभीरतापूर्वक अपना मूल्यांकन करना चाहिए और रोज़े की रूह को, इसके मूल उद्देश्य को अपने अन्दर पूरी तरह उतारने की कामयाब कोशिश करनी चाहिए, अन्यथा यह समाज भी लानती बनकर रह जाएगा ।

कुरआन में रोज़े के लिए 'सौम' शब्द का प्रयोग हुआ है । 'सौम' शब्द का अर्थ बचना, पार्थक्या और मौन है । रोज़े की हालत में रोज़ेदार खाने-पीने, संभोग इत्यादि हलाल कामों से भी रुक जाता है और वह बुरे कामों के निकट भी नहीं फटकता । सच्चा और सफल रोज़ेदार तो वही है, जो बुरे कामों से हमेशा-हमेशा के लिए रुक जाता है । इसीलिए कुरआन में रोज़े को फ़र्ज़ क़रार दिया गया है । फ़र्ज़ अर्थात अनिवार्य और अपरिहार्य कर्म । यह लोगों को ईशपरायण और परहेज़गार बनाता है । कुरआन में है–

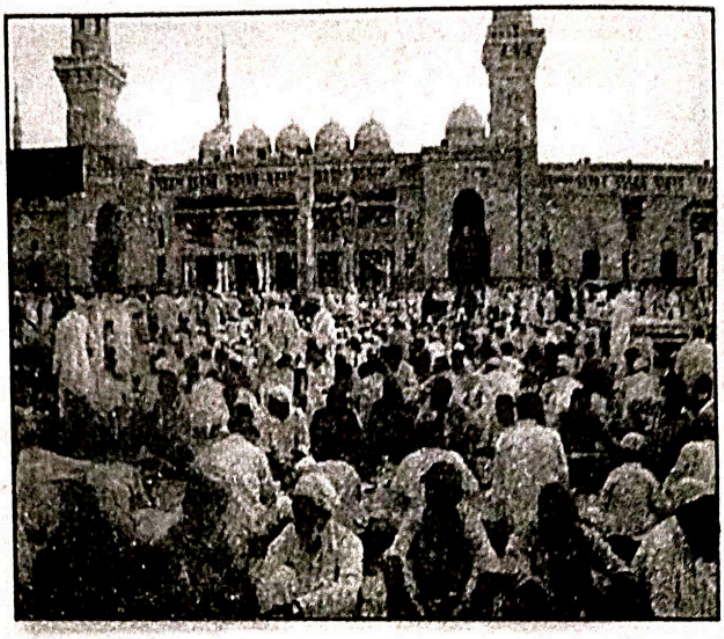

"ऐ ईमान लाने वालो ! तुम पर रोज़े अनिवार्य किये गये, जिस प्रकार तुमसे पहले के लोगों पर किये गये थे, ताकि तुम ईशपरायण बन जाओ ।" (कुरआन, 2:183)

रमज़ान इबादत (उपासना), रहमत (दयालुता) और बरकत का महीना है, क्योंकि इसी महीने में कुरआन उतरना शुरू हुआ । कुरआन में है–

"रमज़ान वह महीना है, जिसमें कुरआन उतारा गया लोगों के मार्गदर्शन के लिए और सत्य-असत्य के अन्तर के प्रमाणों के साथ । अतः तुममें से जो कोई इस महीने में मौजूद हो, उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे और बीमार हो या सफ़र में हो तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले । अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है (वह तुम्हारे लिए आसानी पैदा कर रहा है) कि तुम संख्या पूरी कर लो और जो सीधा मार्ग तुम्हें दिखाया गया है उस पर अल्लाह की बड़ाई प्रकट करो और ताकि तुम कृतज्ञ बनो ।"

(कुरआन, 2:185)

एक हदीस में इस आयत की व्याख्या इन शब्दों में की गयी है–

हज़रत सलमान फ़ारसी (रज़ि॰) कहते हैं कि शाबान की आख़िरी तारीख़ को अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने हमें

चरित्र-निर्माण का सुनहरा अवसर

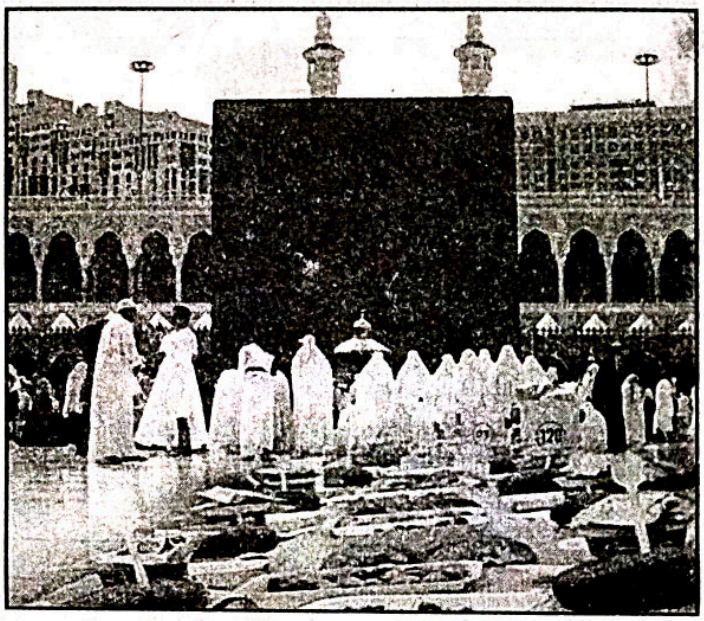

संबोधित करते हुए कहा–

"ऐ लोगो ! तुम पर एक महान और बरकत वाला महीना छाया डाल रहा है । इसमें एक रात हज़ार महीनों से उत्तम है । इस महीने के रोज़े को अल्लाह ने अनिवार्य किया है और उसकी रातों में (अल्लाह की सेवा में) खड़ा होने को नफ़्ल ठहराया गया है । जो व्यक्ति इस महीने में कोई नफ़्ल नेकी अल्लाह की प्रसन्नता और उसका सामीप्य प्राप्त करने की नीयत से करेगा, तो वह ऐसा होगा, जैसे इस महीने के सिवा दूसरे महीने में किसी ने फ़र्ज़ (अनिवार्य कर्म) अदा किये । वह सब्र का महीना है और सब्र का बदला जन्नत है । वह सहानुभूति और संवेदना का महीना है और वह महीना है जिसमें ईमान वालों की रोज़ी में वृद्धि हो जाती है । जिस किसी ने इसमें किसी रोज़ेदार को इफ़्तार कराया, तो उसके लिए गुनाहों के प्रति क्षमादान और (जहन्नम की) आंग से आज़ादी का साधन बनेगा और उसे उस रोज़ेदार के बराबर दिया जाएगा, बिना इसके कि उस रोज़ेदार के सवाब (प्रतिदान) में कोई कमी की जाए । ...वह महीना है, जिसका आरंभिक भाग दयालुता, मध्यभाग क्षमादान और अंतिम भाग (जहन्नम की) आग से आज़ादी का है ।"

रमज़ान के रोज़े अनिवार्य है । इसलिए किसी शरई उज्र के बिना रमज़ान के रोज़े छोड़ना गुनाह है । नबी (सल्ल०) कहते हैं–

"जिस आदमी ने किसी बीमारी या शरई उज्र के बिना रमज़ान का एक भी रोज़ा छोड़ा, तो उम्र भर के रोज़े रखने से भी उस एक रोज़े की पूर्ति न हो सकेगी ।" (तिरमिज़ी)

बुराई इन्सान को जहन्नम की आग की ओर ले जाती है और रोज़ा इन्सान को बुराई से रोकता है । यह दंगा-फ़साद, लड़ाई-झगड़े को मिटाता है । रमज़ान महीना ही एकमात्र ऐसा महीना है, जिसमें अल्लाह शैतान को क़ैद कर देता है, जन्नत का दरवाज़ा खोल देता है । इस महीने में नेक बन्दों पर अल्लाह की रहमत की जीवनदायी वर्षा होती रहती है । इस महीने में प्रत्येक नेकी का 70 गुणा सवाब (प्रतिदान) मिलता है । आप (सल्ल०) ने कहा है–

"रोज़ा ढाल है । जब तुममें से किसी का रोज़ा हो, तो न तो वह अश्लील बातें करे और न शोर बचाए और न दंगा-फ़साद करे । यदि कोई उसे गाली दे या उससे लड़े, तो वह कह दे कि मैं रोज़े से हूं (मैं तुम्हारे इस काम में साथ नहीं दे सकता)। (बुख़ारी, मुस्लिम)

रमज़ान दान-प्रतिदान और क्षमादान का महीना है । अल्लाह रोज़ेदारों की दुआ क़बूल करता है और उनके पिछले गुनाहों को माफ़ कर देता है । इसके बारे में हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि०) का बयान है कि आप (सल्ल०) ने कहा–

"जो व्यक्ति रमज़ान के रोज़े ईमान और चेतना के साथ रखे, उसके सब पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे ।"

(बुख़ारी, मुस्लिम)

दूसरी हदीस में कहा गया है–"ख़ुदा रमज़ान में अर्श उठाने वाले फ़रिश्तों को हुक्म देता है कि अपनी इबादत छोड़ दो और रोज़ेदारों की दुआओं पर आमीन कहो ।"

(हिस्ने हसीन)

रोज़ा इन्सान के अन्दर की हर प्रकार की गन्दगियों को दूर कर देता है, इन्सान के शरीर और उसकी आत्मा दोनों को

शुद्ध और नीरोग बना देता है ।

अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा–"हर चीज़ की ज़कात होती है और शरीर की ज़कात रोज़ा है ।"
(इब्ने माजा)

रोज़े का मूल उद्देश्य भलाई को फैलाना और बुराई को मिटाना है । परन्तु रोज़ा रखने के बाद भी कोई व्यक्ति बुराई में लिप्त रहे, तो उसे भूख और प्यास के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता । आप (सल्ल॰) ने कहा–

"जिस व्यक्ति ने (रोज़े की हालत में) झूठ बोलना और उस पर अमल करना न छोड़ा, तो अल्लाह को इसकी कोई ज़रूरत नहीं कि वह रोज़ा रखकर अपना खाना-पीना छोड़ दे ।" (बुख़ारी)

रोज़े की छूट

यात्रियों, रजस्वला स्त्रियों, रोगियों इत्यादि को रोज़े की वैकल्पिक छूट प्राप्त है । इन परिस्थितियों से निकलने के बाद ऐसे लोगों को दूसरे महीने में उतने ही रोज़े रखने होंगे, जितने रोज़े उनसे रमज़ान महीने में छूट गये हैं । प्रत्येक रोज़े के बदले दो या दो से अधिक निर्धन तथा असहाय व्यक्तियों को खाना भी खिलाया जा सकता है ।

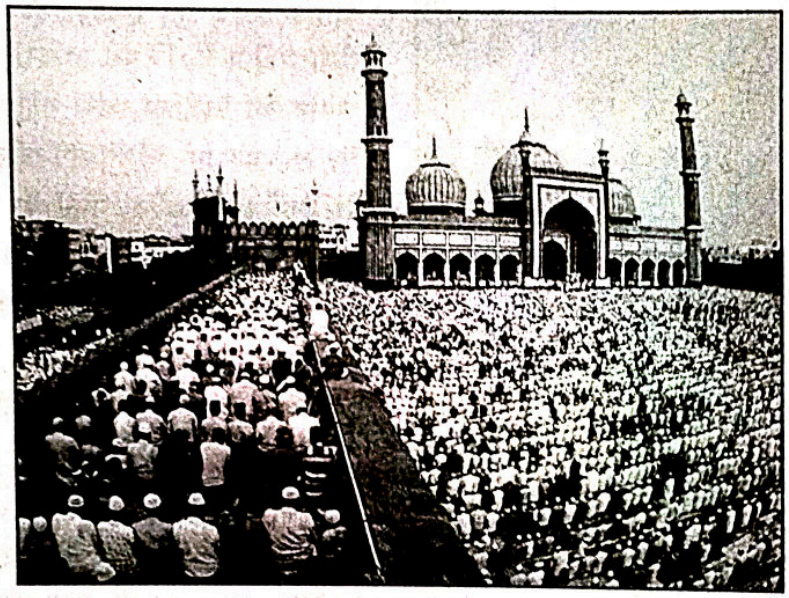

सहरी

रात के आख़िरी पहर में पौ फटने से पहले रोज़े की नीयत से खाने-पीने को 'सहरी' कहते हैं । सहरी खाने में बड़ा सवाब और बरकत है ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) कहते हैं–"सहरी खा लिया करो, क्योंकि सहरी खाने में बरकत है ।" (बुख़ारी)

"सहरी खाने में बरकत है । कुछ न हो तो पानी के कुछ घूंट ही पी लिया करो । खुदा के फ़रिश्ते सहरी करने वालों पर सलाम भेजते हैं ।" (अहमद)

यहां यह बात उल्लेखनीय है कि अगर रात में किसी कारणवश सहरी न खा सके, तो रोज़ा ज़रूर रखना चाहिए । बस, दोपहर से पहले रोज़े की नीयत कर लेनी चाहिए । नीयत नहीं करने पर रोज़ा नहीं होता । सहरी खाना सुन्नत है और रोज़े की नीयत फ़र्ज़ ।

इफ़्तार

सूरज डूबने के बाद रोज़ा खोलने को 'इफ़्तार' कहते हैं । इफ़्तार करने में देरी नहीं करनी चाहिए । हदीस में आता है कि नबी (सल्ल॰) ने फ़रमाया–

"मुसलमान अच्छी हालत में रहेंगे, जब तक इफ़्तार करने में जल्दी करेंगे ।" (बुख़ारी)

इफ़्तार के समय रोज़ेदारों की दुआ क़बूल की जाती है । अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) कहते हैं–

"इफ़्तार के समय रोज़ेदार दुआ मांगे उसकी दुआ क़बूल की जाती है, रद्द नहीं की जाती ।" (तिरमिज़ी)

इसलिए इफ़्तार के समय यह दुआ करनी चाहिए–"ऐ अल्लाह ! मैंने तेरे ही लिए रोज़ा रखा और तेरी ही रोज़ी से इफ़्तार किया ।"

रोज़ेदारों को इफ़्तार कराना बड़े सवाब का काम है । हदीस में कहा गया है–

"जो आदमी रमज़ान में किसी का रोज़ा खुलवाए, तो उसके बदले में खुदा उसके गुनाह को माफ़ कर देगा और उसको जहन्नम की आग से बचा लेगा । इफ़्तार कराने वाले को रोज़ेदार के बराबर सवाब मिलेगा और रोज़ेदार के सवाब में कोई कमी न होगी ।"

लोगों ने कहा–"ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल॰)! हम सबके पास इतना कहां है कि रोज़ेदार को इफ़्तार कराएं और उसको खाना खिलाएं ।" आप (सल्ल॰) ने कहा–"सिर्फ़ एक खजूर से या दूध और पानी के एक घूंट से इफ़्तार करा देना भी काफ़ी है ।" (इब्ने खुज़ैमा)

तरावीह

पैग़म्बर-ए-इस्लाम हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने इशा

की फ़र्ज़ और सुन्नत नमाज़ के बाद और वित्र नमाज़ से पहले तरावीह की नमाज़ पढ़ने का हुक्म दिया है । तरावीह की नमाज़ न पढ़ने वालों को लानती कहा गया है । रमज़ान में पूरे कुरआन का पाठ करने एवं सुनने को अच्छा कर्म बताया गया है । हदीसों में कहा गया है कि 'हज़रत जिबरील हर साल रमज़ान में नबी (सल्ल०) को एक बार कुरआन पढ़कर सुनाया करते थे और जिस साल आप (सल्ल०) का देहांत हुआ, उस साल दो बार पढ़कर सुनाया था ।'

(बुख़ारी)

जुमातुलविदा

रमज़ान महीने का अंतिम शुक्रवार 'जुमातुलविदा' कहलाता है । जुमातुलविदा से यह संकेत मिलता है कि अब रमज़ान महीना ख़त्म होने वाला है और सप्ताह भर के अन्दर ही ईद आने वाली है ।

एतिकाफ़

रमज़ान महीने को दस-दस दिनों के तीन भागों में बांटा गया है । प्रत्येक भाग 'अशरा' कहलाता है । पहला अशरा रहमत का, दूसरा मग़फ़िरत (मुक्ति) का और तीसरा जन्नत में जगह बनाने का होता है । अंतिम अशरे में ही रोज़ेदारों द्वारा गांवों-मुहल्लों की मस्जिदों में 'एतिकाफ़' (अल्लाह की इबादत के लिए एकांतवास) किया जाता है ।

हज़रत आइशा (रज़ि०) कहती हैं कि नबी (सल्ल०) रमज़ान के अंतिम दस दिनों में एतिकाफ़ करते थे, यहां तक कि अल्लाह ने आपको उठा लिया । फिर इसके बाद आपकी पत्नियां एतिकाफ़ करती थीं । (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत आइशा (रज़ि०) यह भी कहती हैं कि नबी (सल्ल०) का हाल यह था कि जब रमज़ान के अंतिम दस दिन का समय आ जाता, तो ज़्यादा-से-ज़्यादा रतजगा करते और अपनी पत्नियों को जगाते (ताकि वे भी ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह की इबादत करें) और आप तहबंद कस लेते ।

(मुस्लिम, बुख़ारी)

उपर्युक्त हदीसों से स्पष्ट होता है कि एतिकाफ़ की अवधि में रोज़ेदार एकाग्रचित होकर अल्लाह की इबादत में लग जाते हैं । रतजगा करते हैं । नमाज़ें पढ़ते हैं । कुरआन पढ़ते हैं । मस्जिद में अल्लाह का बन्दा अल्लाह और केवल अल्लाह ही की याद में उठता-बैठता, सोता-जागता है । वहीं खाता-पीता है । उसके लिए दाना-पानी मस्जिद में ही पहुंचा दिया जाता है । इस अवधि में वह सिर्फ़ पेशाब-पाखाना और आवश्यक हुआ तो नहाने-धोने के लिए मस्जिद से बाहर निकल सकता है । हां, अगर इमाम एतिकाफ़ पर बैठे हों और किसी की मृत्यु हो जाए और जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने वाला कोई और न हो, तो वह जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने के लिए मस्जिद से बाहर निकल सकते हैं । इस दौरान बहुत ज़रूरी होने पर ही किसी से कोई बात करें । जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने के तुरंत बाद मस्ज़िद में लौट आएं और अपनी जगह पर इबादत में लग जाएं । एतिकाफ़ की हालत में रोज़ा रखना फ़र्ज़ है । इसलिए रोज़ा नहीं, तो एतिकाफ़ नहीं । रोज़ा टूटने पर एतिकाफ़ भी टूट जाता है । ईद का चांद देखकर ही एतिकाफ़ करने वाला व्यक्ति मस्जिद से बाहर निकलता है ।

यहां यह उल्लेखनीय है कि जो दम्पत्ति एतिकाफ़ में न बैठे हों, वे रातों को अपनी कामवासना की पूर्ति कर सकते हैं । परन्तु एतिकाफ़ में बैठने वालों के लिए संभोग पूर्ण वर्जित है, हराम है । कुरआन में है–

"फिर जब तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ की हालत में हो, तो तुम पत्नियों से संभोग न करो । ये अल्लाह की निर्धारित की हुई सीमाएं हैं । इनके निकट न फटको ।"

(कुरआन, 2:187)

शबे-क़द्र

रमज़ान महीने के आख़िरी अशरे में क़द्र की रात में मानव-जाति के मार्गदर्शन के लिए सर्वशक्तिमान अल्लाह की ओर से अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर पवित्र कुरआन उतरना शुरू हुआ । शेबे-क़द्र यानी क़द्र की रात को 'लैलतुल क़द्र' भी कहा जाता है । पवित्र कुरआन में इस दिव्य रात्रि को हज़ारों महीनों से उत्तम कहा गया है, क्योंकि हज़ारों महीनों में भी मानव-कल्याण का वह काम नहीं हुआ, जो इस एक रात में हुआ । कुरआन में है–"हमने इस कुरआन को 'शबे क़द्र' यानी 'क़द्र की रात' में उतारा और तुम क्या जानो की क़द्र की रात क्या है ? क़द्र की रात उत्तम है हज़ारों महीनों से । उसमें फ़रिश्ते और जिबरील अपने पालनहार के हुक्म से हर काम के इन्तिज़ाम के लिए उतरते हैं । सलामती ही सलामती, यहां तक कि सुबह हो जाए ।"

(कुरआन, 97:1-5)

हज़रत अनस (रज़ि॰) कहते हैं कि एक साल रमज़ान आया, तो नबी (सल्ल॰) ने कहा, "तुम लोगों पर एक महीना आया है, जिसमें एक रात है, जो हज़ारों महीनों से बेहतर है । जो आदमी इस रात से वंचित रह गया, वह सारी की सारी भलाइयों और बरकतों से वंचित रह गया ।"

(इब्ने माजा)

क़द्र की रात में दुनिया के मामलों और इन्सानों की क़िस्मत का फ़ैसला होता है । नेक बन्दे अपने पालनहार की इबादत में रात गुज़ार देते हैं । ऐसे बन्दों के लिए रात भर ईश्वरीय महिमा की जीवनदायी वर्षा होती रहती है, शांति और सलामती की शीतल बयार बहती रहती है । यह रात इन्सानों के लिए क्षमायाचना और उपासना की रात है तथा ईश्वर के लिए अपने बन्दों को क्षमा, कृपा, प्रतिदान और शांति प्रदान करने की रात है ।

हज़रत आइशा (रज़ि॰) ने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से पूछा कि अगर मुझे यह रात मिल जाए, तो मैं अपने रब से क्या मांगूं ? आप (सल्ल॰) ने यह दुआ मांगने को कहा–

"ऐ अल्लाह ! बेशक, तू बहुत माफ़ करने वाला है और माफ़ी को पसन्द करता है । इसलिए तू मुझे भी माफ़ कर दे ।"

एक और हदीस में है–"जो शबे-क़द्र में ईमान के साथ और सवाब (पुण्य) की नीयत से (नमाज़ में अल्लाह की सेवा में) खड़ा होगा, उसके सभी पिछले गुनाह माफ़ कर दिये जाएंगे ।" (बुख़ारी, मुस्लिम)

हज़रत अनस (रज़ि॰) कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा–

"लैलतुल क़द्र में हज़रत जिबरील (अलैहि॰) फ़रिश्तों की एक जमाअत के साथ उतरते है। और जो बन्दे अल्लाह तआला की इबादत और उसके ज़िक्र में लगे होते हैं वे चाहे खड़े होकर इबादत कर रहे हों या बैठकर, ये फ़रिश्ते उनके लिए रहमत की दुआ करते हैं । फिर जब उनकी ईद का दिन अर्थात उसके रोज़ा खोलने का दिन होता है, तो अल्लाह तआला अपने बन्दों के कामों पर गर्व करता हुआ फ़रिश्तों से कहता है कि ऐ मेरे फ़रिश्तो ! जब कोई मज़दूर अपना काम पूरा कर ले तो उसका बदला क्या है ? फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ हमारे रब ! उस मज़दूर का बदला यह है कि उसे उसकी पूरी मज़दूरी दे दी जाए । अल्लाह कहता है कि मेरे गुलामों और मेरी लौंडियों ने मेरा फ़र्ज़, जो उन पर था, अदा कर दिया । फिर दुआ के शब्द बोलते हुए (मस्जिदों से) निकले । तुझे मेरी इज़्ज़त, मेरे प्रताप, मेरी उदारता, मेरी सज्जनता, मेरी उच्चता और मेरे ऊंचे मरतबे की क़सम ! निश्चय ही मैं इनकी दुआ क़बूल करूंगा । फिर वह (अपने बन्दों से) कहता है कि लौट जाओ । मैंने तुम्हें बख़्श दिया और तुम्हारी बुराइयों को नेकियों से बदल दिया । आप (सल्ल॰) कहते हैं कि वे इस हाल में लौटते हैं कि उनकी बख़्शिश हो चुकी होती है ।" (बैहक़ी, शोअबुल ईमान)

क़द्र की रात का निर्धारण

हदीसों में आता है कि क़द्र की रात रमज़ान महीने के आख़िरी अशरे की ताक़ (21वीं, 23वीं, 25वीं, 27वीं और 29वीं) रातों में से कोई एक रात है । इस संबंध में अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) कहते हैं–

"शबे-क़द्र को रमज़ान के आख़िरी अशरे (रमज़ान के आख़िरी दस दिनों) की ताक़ रातों में तलाश करो ।"

(बुख़ारी)

सदक़ा-ए-फ़ित्र

सदक़ा-ए-फ़ित्र तथा ज़कात के द्वारा इस्लाम सामाजिक न्याय का व्यावहारिक आर्थिक उदाहरण प्रस्तुत करता है । ईद की नमाज़ से पहले फ़ित्र अदा कर देने का हुक्म है । सदक़ा-ए-फ़ित्र से मिली रक़म से ग़रीब, मजबूर और बेसहारा लोग आसानी से ईद की ज़रूरतें पूरी करके ख़ुशी-ख़ुशी ईदगाह जाकर अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं । अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने कहा हैं–

"फ़ितरा उम्मत के लिए इसलिए ज़रूरी ठहराया गया, ताकि वे उन बेहूदा और बेहयाई की बातों का, जो रोज़ेदार से हो गयी हो, क़फ़्फ़ारा (प्रायश्चित) बने और ग़रीबों और मुहताजों के खाने का इन्तिज़ाम हो जाए ।" (अबू दाऊद)

ऐसे लोगों पर फ़ितरा वाजिब है, जिसके पास साढ़े सात तोला सोना या साढ़े बावन तोला चांदी या इसके मूल्य के बराबर चल-अचल सम्पत्ति हो । ऐसे लोगों को चाहिए कि वे अपना और अपने घर वालों का सदक़ा दें । नौकरों का भी सदक़ा दें । जहां तक सदक़े की मात्रा का सवाल है तो

हदीसों से मालूम होता है कि पौने दो सेर गेहूं या साढ़े तीन सेर जौ या इसका आटा या इसकी क़ीमत या इस क़ीमत के बराबर दूसरा अनाज प्रति व्यक्ति की दर से अदा करने का हुक्म है । ऐसे प्रत्येक व्यक्ति को सदक़ा दिया जा सकता है, जिस पर सदक़ा वाजिब नहीं है ।

क़ुरआन का अवतरण

संपूर्ण मानवजाति के मार्गदर्शन और सत्य-असत्य में अन्तर करने के लिए अल्लाह की आख़िरी किताब उसके आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर 17 अगस्त 610 ई० से उतरना शुरू हुई । परिस्थिति के अनुसार जब और जिस मामले में मार्गदर्शन या आदेश की ज़रूरत हुई, अल्लाह के फ़रिश्ते जिबरील (अलैहि०) के माध्यम से क़ुरआन की आयतें उतरती रहीं । आप (सल्ल०) के दुनिया से प्रस्थान करने के तीन महीने पहले मार्च, सन 632 ई० में संपूर्ण क़ुरआन नाज़िल (अवतरित) हो गया । इसमें कुल 114 सूरह हैं, जिनमें से 90 सूरह मक्का में और शेष 24 सूरह मदीने में उतरीं ।

रोज़े का उद्देश्य

जीवन में हर कोई सफल होना चाहता है । सफल होने के लिए कर्म करना पड़ता है और रोज़ा एक ऐसा कर्म है, जो इन्सान को लोक-परलोक दोनों में सफल बनाता है । यह इन्सान की समस्त ज्ञानेन्द्रियों को बुराई से रोककर सत्य की ओर प्रवृत्त करता है । मनुष्य के अन्दर ईशपरायणता, परहेज़गारी और त्याग की भावना उत्पन्न करता है । रोज़ा केवल भूखा रहने का नाम नहीं है, बल्कि यह तो बुराइयों को दूर करने और भलाइयों को फैलाने का नाम है, उपासना, जनसेवा और मानव-कल्याण का नाम है । इसलिए आइए, इस पवित्र कर्म के मूल उद्देश्य को, इसकी आत्मा (रूह) को हम अपनी पूरी ज़िन्दगी में उतार लें । यदि ऐसा करने में हम सफल हो गये और अल्लाह के नेक बन्दे सफल होते ही हैं, तो इससे हमारा विचार बदलेगा । आदत बदलेगी । आचरण और व्यवहार बदलेगा । हमारी पसन्द-नापसन्द के पैमाने बदलेंगे । समाज बदलेगा और बदल जाएगा सारा संसार । तब एक चरित्रवान और कल्याणकारी, मानव-समाज का निर्माण होगा, शांति और सुव्यवस्था, सहानुभूति और भाईचारे की बहार आएगी ।

रमज़ानुल मुबारक

तेरी शान माहे सियाम, अल्लाह अल्लाह !
महीनों का है तू इमाम अल्लाह अल्लाह !

फ़ज़ीलत है क़ुरआन में तेरी आयी
है वाजिब तेरा इहतिराम अल्लाह अल्लाह !

घटा रहमतों की बरसती है पैहम
शबो रोज़ और सुबहो शाम अल्लाह अल्लाह!

सुकूं बख़्श कितने ये रोज़े के दिन हैं !
है दिल किस क़दर शादकाम अल्लाह अल्लाह !

शरीअत पे गोया बहार आ गयी है
इबादत का इहतेमाम अल्लाह अल्लाह !

मलाइक फ़लक से चले आ रहे हैं
लिए मग़फ़िरत का पयाम अल्लाह अल्लाह

खुले हैं खुल्द है सर्द दोज़ख़
ये बरकाते माहे सियाम अल्लाह अल्लाह

इसी माहे रमज़ां में, नाज़िल हुआ है
ख़ुदा का मुक़द्दस कलाम अल्लाह अल्लाह

जो हैं तिशना तब प्यास अपनी बुझा लें
छलकता है रहमत का जाम अल्लाह अल्लाह!

दिलों की हैं तस्कीन के सामां क्या क्या !
सहरदम दरूदो सलाम अल्लाह अल्लाह

हर एक सिम्त तक़्वा हर एक सिम्त नेकी
ये रहमत ये फ़ैज़ाने आम अल्लाह अल्लाह

ये प्यास और ये मूक की सारी कुल्फ़त !
बनाएगी महशर में काम अल्लाह अल्लाह !

फ़रिश्तों को भी मुयस्सर 'क़मर' कब
मुसलमां का है जो मक़ाम अल्लाह अल्लाह !

● 'क़मर' रामनगरी

अनाथ लड़कों की पुकार

VOICE OF ORPHAN BOYS

यतीमख़ाना इस्लामिया (गया)



एक परिचय

● दीनी और असरी शिक्षा की अपनी तरह की जानी-मानी रिहाइशी पाठशाला ● 100 वर्षों की सेवाएं ● बहुत से विभाग ● शिक्षा के पड़ाव : प्राथमिक से मैट्रिक तक ● हिफ़्ज़ का विभाग : हिफ़्ज़ के साथ-साथ मैट्रिक ● हर वर्ष बिहार स्कूल बोर्ड परीक्षा का 100 प्रतिशत रिज़ल्ट ● पत्राचार शिक्षा 2018-2019 के सत्र के लिए आइ०ए०, बी०ए०, एम०ए० और लाइब्रेरी साइंस (BLiS) में प्रवेश जारी ● कंप्यूटर की भी शिक्षा ● किफ़ाला स्कीम के तहत एक अनाथ छात्र पर वार्षिक ख़र्च 18000/- रुपये प्रति वर्ष ● कुल वार्षिक ख़र्च 25 लाख से अधिक ● आमदनी का स्रोत : मुस्लिम अवाम के चन्दे ● 75 अनाथ बच्चे जिनका पूरा ख़र्च इदारा ही उठाता है ।

● जिस रूप में संभव हो मदद करके अल्लाह से बड़ा इनाम प्राप्त करें–उदाहरण के लिए ● ज़कात ● सदक़े ● अतिया ● पैदावार की ज़कात ● क़ुरबानी की खाल ● एक अनाथ बच्चे का वार्षिक ख़र्च ● अपने या किसी बुज़ुर्ग के नाम पर कमरा या हॉल बनवाना आदि ।

● याद रखें यहां हर वर्ष ऑडिट (Audit) भी कराया जाता है । आप खुद यतीमख़ाना इस्लामिया पहुंच कर बराबरी का व्यावहारिक नमूना अपनी आंखों से देखें कि किस प्रकार अनाथ और मां-बाप वाले बच्चे मिल-जुलकर रहा करते हैं ।

नोट : इनायत टेक्निकल इंस्टीट्यूट (Technical Institute) की इमारत के निर्माण का काम पूरा हो चुका है ।

यह इदारा आप से उदार सहायता की अपील करता है ।

नोट : यह इदारा विदेशी मुद्रा के क़ानून FCRA के तहत भी रजिस्टर्ड है ।

Foreign Donors विदेशी चन्दा देने वाले

अब आप विदेश से BANK A/c No. 300402010000187

BANK SWIFT CODE NO. UBININBBJAM,

UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

में अपनी रक़म भेज सकते हैं

चेक या ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें–THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

चेक, ड्राफ़्ट, मनीऑर्डर या ख़त भेजने का पता

Hon. SECRETARY, THE GAYA MUSLIM ORPHANAGE

At+P.o : CHERKI-824237, Distt : GAYA (BIHAR) INDIA

Local Donors मक़ामी चन्दा देने वाले

CORE BANKING A/C NO.: 300402010010581, Mobile : 09955655960, 09801213022

Bank IFS Code No. : UBIN 0530042

BANK, UNION BANK OF INDIA (MAIN BRANCH, GAYA)

E-mail : gmocde@yahoo.co.in, Website : www.gmogaya.com

Note : Documentary Film–NAZR-E-ENAYAT जिसमें इदारे का इतिहास है। इंटरनेट यू ट्यूब पर देखें।

नोट : कोर बैंकिंग वाले हज़रात E-mail या डाक से अपना मुकम्मल पता भेज दिया करें ताकि उसी पते पर रक़म की रसीद रवाना की जा सके ।

अध्यक्ष : डॉ० फ़रासत हुसैन — एज़ाज़ी नाज़िम : डॉ० मुहम्मद एहतिशाम रसूल

भारतीय समाज पर धर्म के प्रभाव और हमारी ज़िम्मेदारियां

■ डॉ॰ अदनानुल हक़ ख़ान

धर्म इन्सान की नैसर्गिक ज़रूरत और उसके मूल प्रवृत्ति का आंतरिक अनुभूति है । यह किसी भी समाज का बुनियादी अंग माना जाता है । धर्म वास्तव में नाम है अक़ीदा, इबादत, कर्म, रस्मो-रिवाज और परंपराओं के संग्रह का । इमिल दुर्खीम (Emil Durkheim) ने धर्म के बारे में इस तरह बयान किया है–''धर्म एक सम्पूर्ण प्रबंध-व्यवस्था है, जिसमें पवित्र चीज़ों के अनुसार अक़ीदे और आमाल शामिल हैं, जिसकी बुनियाद पर एक अख़्लाक़ी बिरादरी अस्तित्व में आती है ।'' दुनिया के बड़े धर्मों में इस्लाम, ईसाइयत, हिन्दू धर्म, यहूदियत, सिख धर्म, जैन धर्म और पारसीं धर्म की गणना होती है । धर्म वास्तव में इन्सान की बुनियादी ज़रूरत है । सामाजिक नैतिकता के लिए धर्म ज़रूरी है । यह इन्सान के अन्दर जवाबदेही का एहसास पैदा करता है और आत्मिक व रूहानी सुकून का प्रभावशाली माध्यम भी है । अक्सर धर्म के ज़रिए और विशेष रूप से पारलौकिक धारणा के ज़रिए ही विश्व में मौजूद असफलताओं और समस्याओं का निवारण संभव है और मुक्ति का मार्ग भी धर्म ही हमें प्रदान करता है ।

भारतीय समाज की बुनियादी विशेषताएं

भारतीय समाज एक मिश्रित और बहुल समाज है, जिसमें विभिन्न भाषा बोलने वाले, विभिन्न धर्मों के मानने वाले, विभिन्न दृष्टिकोण और विचारधाराओं के समर्थक और विभिन्न धारणा रखने वाले लोग आपस में मिलकर रहते हैं । यहां की सभ्यता दुनिया की प्राचीनतम सभ्यताओं में गिनी जाती है, जिसे सिंधु घाटी की सभ्यता कहते हैं । सिंधु घाटी की सभ्यता में हड़प्पा और मोहन जोदड़ो की सभ्यताएं भी शामिल की जाती हैं ।

चूंकि भारत एक बहुल समाज है, जिसमें हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध और पारसी रहते हैं । भाषाई एतिबार से हिन्दी, उर्दू, मराठी, तेलगू, पंजाबी, बंगाली इत्यादि भाषाएं बोली जाती हैं । विभिन्न क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की भाषा, रहन-सहन, सभ्यता व संस्कृति में ग्रोथ पाया जाता है । यह ग्रोथ और विविधता भारतीय समाज की नुमाया विशेषता गिनी जाती है ।

भारतीय समाज में एक विशेष प्रकार की सभ्यता-संस्कृति और सामाजिक ढांचा पाया जाता है । यहां विशेष रूप से हिन्दू सभ्यता के प्रभाव हैं, लेकिन मुसलमानों के आगमन के बाद यहां के आर्ट, कल्चर में इस्लामी सभ्यता के प्रभाव भी स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं । समाज में नैतिकता को महत्व दिया जाता है । जहां एक तरफ़ पश्चिम में, पारिवारिक प्रबंध-व्यवस्था जीर्ण-शीर्ण का शिकार है, वहीं भारत इस मामले में बहुत प्रतिष्ठित और सम्मानित है ।

भारतीय समाज का एक बुनियादी तत्व इसकी वर्ण-व्यवस्था है । हिन्दू धर्म ने सारे इन्सानों को बुनियादी तौर पर चार वर्गों में विभाजित किया है । जो इन्सान ब्रह्मा के सिर से पैदा किये गये हैं, वे उच्च वर्ग के लोग हैं । ब्राह्मण हैं, जिन्हें दुनिया पर शासन करने के लिए पैदा किया गया है । ब्रह्मा के हाथों से पैदा किये गये क्षत्रिय हैं, जिनका काम ब्राह्मणों के शासन की रक्षा करना है । ये दूसरे वर्ग के नागरिक हैं । ब्रह्मा की रान से पैदा हुए इन्सान वैश्य हैं, जिनका काम मेहनत-मज़दूरी और खेती-बारी करना है और चौथे वर्ग के लोग शूद्र हैं, जो ब्रह्मा के पैर से पैदा हुए हैं और बहुत ही तुच्छ हैं, अछूत हैं और इन्सानों की सेवा करना उनका कर्म है । इन्सान जिस ख़ानदान में पैदा होगा, उसके आधार पर उसकी जाति निर्धारित की जाएगी । यह वर्ण-व्यवस्था प्राचीन काल से चली आ रही है ।

भारतीय समाज अंधा अनुसरण, खुराफ़ात और अंधविश्वास

का स्थान है । लोग आध्यात्मिक और सुकून की तलाश में इन अंधविश्वासों की भेंट चढ़ जाते हैं । भारतीय क़ौम को धर्म के नाम पर बहुत आसानी से बेवक़ूफ़ बनाया जा सकता है ।

धर्म की वर्गीय व्यवस्था और उसके माध्यम से छोटी जातियों का शोषण, पति की मृत्यु पर औरत का सती होना, अंधविश्वास, अंधा अनुसरण और धर्म के नाम पर बेवक़ूफ़ बनाया जाना जैसे कर्मों की वजह से धर्म-विमुख और ईश-विमुख वर्ग अस्तित्व में आया है, जिसका बुनियादी दृष्टिकोण यह है कि धर्म सरापा शोषण है और धर्म का सामूहिक ज़िन्दगी से कोई संबंध न होना चाहिए । इसकी बुनियाद पर धर्म के समर्थक और धर्म-विमुख वर्ग के बीच वैचारिक टकराव रहा है । वहीं दूसरी ओर वर्गीय व्यवस्था से बग़ावत के नतीजे में बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म जैसे धर्म अस्तित्व में आये हैं । मौजूदा दौर में भी एक बड़ा वर्ग हिन्दू धर्म से अलग है । महाराष्ट्र में तो मराठों ने शैव धर्म की बुनियाद रख दी है ।

अंधा अनुसरण भारतीय समाज की एक आम बीमारी है, जिसका इस्तेमाल धार्मिक और पूंजीवादी वर्ग ने अपनी तिजोरियां भरने के लिए हमेशा से किया है । धर्म का इस्तेमाल नफ़रत फैलाने और सांप्रदायिकता को हवा देने के लिए किया जा रहा है, लेकिन आज भी भारत में धार्मिक वर्ग मज़बूत है । नैतिकता यहां का मुख्य लक्षण है । सच्चाई और ईमानदारी को महत्व दिया जाता है । लोग मतभेद के बावजूद काफ़ी हद तक मिल-जुलकर रहते हैं और धर्म को समाज में दरमियानी हैसियत प्राप्त है ।

भारत के बड़े धर्म

भारत दुनिया के चार बड़े धर्मों का जन्म-स्थली रहा है, जिसमें हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म भी शामिल हैं । इन धर्मों के अलावा यहां मुस्लिम, ईसाई, यहूदी और पारसी भी बड़ी संख्या में रहते हैं । दुनिया के पारसियों की सबसे बड़ी आबादी भारत में है । मुसलमानों की आबादी 172 मिलियन है, जो इंडोनेशिया और पाकिस्तान के बाद दुनिया की तीसरी बड़ी मुस्लिम आबादी है । 2011 ईसवी की जनगणना के अनुसार भारत में धर्मों की आबादी का प्रतिशत निम्नलिखित है–

● हिन्दू-79.80 प्रतिशत, ● मुस्लिम-14.23 प्रतिशत, ● ईसाई-2.30 प्रतिशत, ● सिख-1.72 प्रतिशत, ● बौद्ध-0.70 प्रतिशत, ● जैन-0.37 प्रतिशत, ● अन्य-0.9 प्रतिशत ।

यहां एक बात उल्लेखनीय है कि 1951 ईसवी से 2011 ईसवी के बीच 7 बार जनगणना की गयी, जिसमें हिन्दू धर्म के मानने वालों की संख्या 84.1 प्रतिशत से कम होते हुए 79 प्रतिशत पर हो गयी, जबकि मुसलमान 9.87 प्रतिशत थे, वे बढ़कर 2011 ईसवी में 14.23 प्रतिशत हो गये ।

जनगणना के आकड़ों से यह बात स्पष्ट होती है कि हिन्दू धर्म और इस्लाम धर्म भारत के दो बड़े धर्म हैं । दोनों मिलकर भारत की कुल आबादी 94.03 प्रतिशत है । हिन्दू धर्म में 34 करोड़ देवी-देवता हैं । हर शहर और क़बीले की अलग देवी होती है । फिर हर ख़ानदान और क़बीले के लिए भी अलग से देवता निर्धारित किये गये, इसलिए हिन्दू धर्म में बहुत सारी जातियां, विचारधाराएं और क़बीले हैं, जिनके दृष्टिकोण एक-दूसरे से अलग हैं । धर्म के अलावा भारत में आध्यात्मिकता की तलाश में उद्धिग्न लोगों के लिए नया आध्यात्मिक आंदोलन भी एक आकर्षण रखता है । नया आध्यात्मिक आंदोलन (New spriritual movement) वास्तव में बाबाओं, गुरुओं और साधुओं की शिक्षाओं पर आधारित दृष्टिकोण हैं, इन्हें धार्मिक पुनरुत्थान का आन्दोलन भी कह सकते हैं ।

धर्मों की शिक्षाओं का प्रभाव

सकारात्मक प्रभाव : एक धर्म को मानने वाले लोग सामूहिक रूप से भाईचारा और मुहब्बत के साथ रहते हैं ।

अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने इरशाद फ़रमाया–"दोज़ख़ में सबसे हल्की सज़ा के तौर पर व्यक्ति को आग के जूते पहनाएं जाएंगे, जिसके असर से उसका दिमाग़ ऐसे खौलने लगेगा जैसे कोई चीज़ चूल्हे पर उबल रही हो । वह व्यक्ति सोचेगा कि इतनी सख़्त सज़ा शायद किसी को न मिलेगी, जबकि उसकी यह सज़ा दोज़ख़ की सबसे हल्की सज़ा होगी ।"
(बुख़ारी, मुस्लिम)

A Well Wisher
VASCO-DA-GAMA (GOA)

धर्म ने इन विभिन्न भाषाओं के समर्थक, विभिन्न क्षेत्रों में निवास करने वाले, विभिन्न रहन-सहन व भेष-भूषा के साथ जीवन व्यतीत करने वाले लोगों में एकता पैदा कर दी है ।

धर्म की बुनियाद पर समाज में नैतिक मूल्य को बहुत ज़्यादा महत्व प्राप्त है । भारतीय समाज माता-पिता की सेवा, बच्चों का पालन-पोषण, निर्धनों और असहायों की मदद, सच्चाई, ईमानदारी, सांसारिकता जैसे नैतिक मूल्यों का समर्थक है । आज भी हमारे देश में वृद्धा आश्रमों की संख्या पश्चिमी देशों की अपेक्षाकृति बहुत कम है । पारिवारिक व्यवस्था बहुत मज़बूत है । तलाक़ का प्रतिशत कम है । यद्यपि भारत में भी अनैतिकता, बुराइयां और अपराध हैं, लेकिन धर्म के प्रभाव के कारण से इसमें कमी पायी जाती है ।

धर्म समाज में लोगों के आचार-व्यवहार पर प्रभाव डालता है और उनके व्यवहार को क़ाबू में रखने का एक प्रभावशाली माध्यम भी है । अक्सर धर्मों में जीवन-पश्चात मृत्यु की धारणा है । इस दुनिया में किये गये अच्छे और बुरे कर्मों के जजा व सज़ा की धारणा पायी जाती है । यही धारणा इन्सान में जवाबदेही का एहसास पैदा करती है और इसी से सामाजिक बुराइयों और अपराधों पर क़ाबू पाया जा सकता है ।

धर्म की बुनियाद पर ही समाज में नियम-सिद्धांत और क़ानून बनाए जाते हैं । शादी-ब्याह के क़ानून, तलाक़ के क़ानून, विरासत के क़ानून इत्यादि भी धर्म की बुनियाद पर ही निर्धारित किये जाते हैं । उदाहरण के रूप में भारतीय समाज में बीवी-बच्चों की देखभाल और निगरानी पति की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है, जबकि पत्नी का काम अपने पति के घर और बच्चों की परवरिश है । कामों का यह संतुलित बंटवारा अन्य समाजों में देखने को नहीं मिलता । धर्म की बुनियाद पर ही समाज में प्रबंध-व्यवस्था स्थापित की जाती है ।

नकारात्मक प्रभाव : धर्म की बुनियाद पर सामाजिक बंटवारा अमल में आया और इसी बंटवारे के नतीजे में सांप्रदायिकता ने जन्म लिया है । इस गिरोहबंदी और सांप्रदायिकता की ही वजह से धर्म के नाम पर वर्ग विशेष या धर्म को मानने वालों के साथ लूटमार-क़त्ल, जुल्म-अत्याचार, शोषण और अमानुषिक व्यवहार समाज की विशिष्टता बन गयी है, जिसकी वजह से एकेश्वरवाद का दृष्टिकोण पारा-पारा होकर रह गया है । हर धर्म के मानने वाले लोग यह दृष्टिकोण रखते हैं कि वही सत्य पर हैं और अपने धर्म को दूसरों पर थोपने की कोशिश करते हैं, जिसकी वजह से दूसरे धर्मों में तनाव पैदा होता है और असहनशीलता जन्म लेती है । तनाव और असहनशीलता की ही दशाएं दंगों का रंग ले लेती हैं । भारत दंगों के मामले में वैश्विक स्तर पर बदनाम है ।

धर्म की आड़ में अंधा अनुसरण और अंधविश्वास का एक अनवरत सिलसिला चल पड़ा है । अंधविश्वास ने विधिवत रूप से सामाजिक नासूर का रूप धारण कर लिया है । इस नासूर का इस्तेमाल धार्मिक और पूंजीपति वर्ग अपने हितों के लिए भरपूर अंदाज़ में कर रहा है ।

जिस तरह यूरोप के पुनरुद्धार से पहले एक वैज्ञानिक उजागर करने के सिलसिले में गेलील्यू को अपनी जान गंवानी पड़ी थी, उसी तरह आज भी निराधार धार्मिक अंधविश्वासों का हमारे समाज में बहुत महत्व है । धर्म ने लोगों को बहुत तंग नज़र कर दिया है । इसी तंग नज़री की वजह से साइंसी और सामाजिक क्रान्ति की राहें सीमित होकर रह गयी हैं ।

समाज में मौजूद वर्गीय शोषण ने पूरे समाज पर नकारात्मक प्रभाव डाले हैं । आज भी निचली जातियों के लोगों के साथ वही शोषण और दमनकारी रवैया जारी रखा जा रहा है । बल्कि वर्गीय शोषण व दमनकारी प्रबंध-व्यवस्था को लागू करना ही कुछ लोगों का एजेंडा है । दलितों पर हो रही हिंसात्मक घटनाएं हमारे सामने हैं । रोहित वेमूला और कृशन रजनी जैसे छात्रों की कहानियां हमारे सामने हैं ।

धर्म का एक और नकारात्मक पहलू झूठी छद्म धार्मिकता (False / Pseudo Religiousity) है । कुछ धार्मिक लोग ईमान, अक़ीदे, रस्मोरिवाज में तो बहुत ज़्यादा धार्मिक हैं, जबकि अन्य लोगों से संबंध, मामले की बात आती है, तो वे धर्म के सामाजिक नियम-सिद्धांतों को भूल जाते हैं । अर्थात अपने हितों की हद तक वे धार्मिक रहते हैं । धर्म के नकारात्मक प्रभाव धार्मिक लोगों के ग़लत व्यवहारों और तंग नज़री की वजह से पैदा हुए हैं, लेकिन इसका एक मुख्य कारण संशोधनात्मक धार्मिक शिक्षाएं भी हैं । इन नकारात्मक प्रभावों के बावजूद समाज की धारणा धर्म के बिना असंभव है ।

भारत में मुसलमानों का आगमन

कहा जाता है कि भारत में मुसलमानों का आगमन मुहम्मद बिन क़ासिम के ज़रिए सतरहवीं ईसवी में हुआ और फिर मुसलमानों ने तलवार के ज़ोर पर धर्म का प्रचार किया, लेकिन यह बात ठीक नहीं है । बल्कि उम्मते मुहम्मदिया का भारत में आगमन सातवीं सदी हिजरी (729 ईसवी) में ही हो गया था, जबकि दक्षिण भारत के मालाबार के राजा चिरामन हैरोमल और उनके मंत्री ने इस्लाम क़बूल किया और केरला के कुंदुनगल्लोर (kudungallur) चिरामन जामा मस्जिद का निर्माण कराया, जो भारत की पहली मस्जिद है । उसी ज़माने में ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के प्रिय साथी मालिक बिन दीनदार (रज़ि०) के नेतृत्व में इस्लाम की दावत देने के लिए मालाबार के साहिल से भारत आये । यह तो हुई उम्मते मुहम्मदिया की भारत में आगमन, लेकिन भारत में इस्लाम के इतिहास से भी प्राचीन है, ख़्वाजा गुलाम सकलैन साहब ने सिंधु घाटी की सभ्यता पर शोध करने के बाद स्पष्ट दलीलों के साथ यह दावा पेश किया कि हड़प्पा और मोहनजोदड़ो में खोदाई के वक़्त प्राप्त सामग्रियों और अवशेषों में सिन्धु घाटी की सभ्यता व संस्कृति और तरीक़े इबादत की निशानियां स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं । (किताब वादी सिंध की तहज़ीब के गुलामी अनासिर) और यह बात हक़ बजानिब ही महसूस होती है, क्योंकि अल्लाह तआला पवित्र क़ुरआन में फ़रमाता है–''हमने हर क़ौम में पथप्रदर्शक और पैग़म्बर भेजे ।'' फिर भला सिन्धु घाटी की सभ्यता कैसे वंचित रह सकती है ।

भारतीय समाज पर मुसलमानों के प्रभाव

उम्मते मुस्लिमा के अनुयायियों से पहले ब्राह्मण भारत के सियाहोसफ़ेद (सम्पूर्ण) के मालिक थे । निचली जातियों की हालत जानवरों से भी बदतर थी । उन्हें इन्सानी अधिकार प्राप्त न थे । मुसलमानों के आगमन के बाद समाज से ब्राह्मणों की ठेकेदारी का ख़ात्मा हो गया । भारतीय समाज की निचली जातियों को जब इस्लाम की सूरत में समानता का उपदेश देने वाला दृष्टिकोण मिला, तो उन्होंने मिलकर इस्लाम की आवाज़ पर लब्बैक कहा । इस्लाम की नैतिक शिक्षाओं का प्रभाव भारतीय समाज पर बड़ी हद तक पड़ा । इस्लामी परदे से हौसला पाकर हिन्दू औरतों ने अपने ससुर और जेठों के सामने घूंघट निकालना शुरू कर दिया । सती-प्रथा को ख़त्म कर दिया गया । संत कबीर, गुरु नानक और श्री चैतन्य जैसे धार्मिक और सामाजिक व्यक्तियों की शिक्षाओं पर इस्लाम की गहरी छाप दिखायी देती है । भक्ति आन्दोलन, लिंगायत समाज, सत्य शोधिक समाज इत्यादि धार्मिक विचारों वाले आन्दोलनों पर भी इस्लाम के गहरे प्रभाव पाये जाते हैं । प्रसिद्ध इतिहासकार तारा चंद ने अपनी किताब "The influence of Islam on Indian Culture" में लिखा है कि–

"Social and culture revivalism in the south was due to the Islami of Infront culture"

लेकिन यह भी सच्चाई है कि बहुत-से हिन्दुवाना रस्में भी मुसलमानों ने अपना लीं, जैसे मूर्ति पूजा के सदृश क़ब्रपरस्ती ने जड़ पकड़ी, तो दूसरी तरफ़ देवी-देवताओं को बिठाने और उठाने की तर्ज पर ताजिया, उर्स और मेला इत्यादि को बढ़ावा मिला । सामाजिक मामले जैसे निकाह, तलाक़, विरासत इत्यादि में भी हिन्दुवाना रस्में मुसलमानों के अन्दर आ गयीं । इस्लाम ने अपने आगमन के बाद से अब तक अपनी विशिष्ट सभ्यता-संस्कृति व मूल्यों को बरक़रार रखा । इसके अलावा भारत के कला-कौशल, आर्ट, कल्चर तक में भी मुसलमानों की सभ्यता की झलक मिलती है ।

इस्लाम, धर्म की हैसियत से

अल्लाह तआला फ़रमाता है–''इन्नलदीन अन्दल्लाहि इस्लाम'', क़ुरआन की इस आयत के हवाले से मौलाना अबुल आला मौदूदी (रह०) ने ''दीने हक़'' में विस्तृत रूप से वार्तालाप की है । इस्लाम वास्तव में ईश्वरीय धर्म है । धर्म से आशय है तरीक़े ज़िन्दगी या तर्जे फ़िक्र व अमल । यह तर्जे फ़िक्र व अमल ज़िन्दगी के सारे क्षेत्रों पर आधारित है और इस्लाम जीवन के इन सारे क्षेत्रों में इन्सान का मार्ग दर्शन करता है । अर्थात जिस तरह धर्म नाम है कुछ अक़ीदों और रस्मोरिवाज का । इसके विपरीत इस्लाम एक पूर्ण, युक्ति-संगत जीवन पद्धति और जीवन शैली है ।

हमारी ज़िम्मेदारियां

मुसलमान एक दायी (आह्वाहक) उम्मत है । चूंकि भारत एक बहुल समाज है, इसलिए दावती कामों के लिए एक बेहतरीन मैदान है । चूंकि धार्मिक वर्ग काफ़ी मज़बूत है और एक ईश-विमुख व्यक्ति को दावत देने से ज़्यादा आसान काम एक धार्मिक व्यक्ति को दावत देना है ।

उम्मते मुस्लिमा की हैसियत से हमें अपने चरित्र, कर्म, आचार-विचार, आदत व स्वभाव को बेहतरीन बनाना होगा ।

एक उम्मते वस्त की हैसियत की तरह हमारा व्यवहार होना चाहिए और इसी अमली शहादत के ज़रिए से हम इस्लाम को एक जीवन-व्यवस्था के रूप में पेश कर सकते हैं । अगर हम अपने समाज और मामलों को इस्लाम के अनुसार ढाल लें और समाज में इसके सकारात्मक प्रभाव दिखने लगें तभी अस्ल दावती क़ाम होगा ।

हमारी एक बड़ी समस्या अपने आपमें और मुसलमानों के बीच में रहना है । मुस्लिम छात्रों के मित्र भी अक्सर मुस्लिम ही होते हैं और ग़ैर-मुस्लिम छात्रों को हम अछूत समझते हैं, यह सही तरीक़ा नहीं । हमें चाहिए कि हम सभी धर्मों के लोगों से अच्छे संबंध रखें, घुल-मिलकर रहें, उनकी सहायता करें और उन्हें सच्चाइयों और सत्य बातों से अवगत करें ।

हमारा उद्देश्य धर्म को सामूहिक जीवन का एक मुख्य और अटूट अंग बनाना है, जिसमें नकारात्मक प्रभावों का ऊपर चर्चा की गयी, उनके ख़ात्मे के लिए इस्लाम को विकल्प के रूप में पेश करना बहुत ज़रूरी है । साथ ही भारतीय समाज के बारे में, यहां के धर्मों, इनकी आस्थाएं, दृष्टिकोणों, रीति-रिवाज का गहरा अध्ययन एक दायी को होना चाहिए । दायी को चाहिए कि वह जिस व्यक्ति को इस्लाम की दावत दे रहा है, उसकी प्रतिभा और उसकी आस्था को समझकर ही बात करे, तभी दावत प्रभावशाली हो सकती है । नयी आध्यात्मिकता को समझना और उसके जवाब में व्यक्तित्व-पूजा की जड़ पर वार करना भी एक मुख्य कार्य है । इन सारे कामों के लिए शैक्षिक व शोधात्मक काम की बहुत ज़्यादा ज़रूरत है ।

हर नबी ने अपनी क़ौम की मातृभाषा में ही लोगों को दावत दी । अल्लाह के नबी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) ने एक सहाबी को सुरयानी लिखने का आदेश दिया, यह इसलिए था कि मदऊ की भाषा सीखी जाए और उनकी मानसिकता के बारे में जानकारी प्राप्त की जाए । चूंकि भारत में भाषाओं के मामले में ग्रोथ पाया जाता है । यहां आधिकारिक भाषाओं की संख्या 23 है, जबकि और कई भाषाएं यहां बोली जाती हैं । इन सारी भाषाओं के विशेषज्ञ उम्मते मुस्लिमा के पास ज़्यादा संख्या में होने चाहिए ।

मौजूदा दौर में इन्सानियत अनेकों समस्याओं से दो-चार है । भारतीय समाज में भी अनेकों समस्याएं हैं । इन समस्याओं का बेलाग जायज़ा फिर इसका इस्लामी हल पेश करने की ज़रूरत है । जहां तक हो सके हमें इन इस्लामी अमल को करके दिखाना चाहिए । धर्म की संस्था को बढ़ावा देने के लिए बहुधर्मी वार्ता का इस्तेमाल पिछले सदी में कुछ संस्थाओं और तहरीकों ने किया है । मौजूदा दौर में भी यह प्रभावशाली माध्यम हो सकता है । पवित्र क़ुरआन में है–"ऐ नबी, कहो, "ऐ किताब वालो, आओ एक ऐसी बात की ओर जो हमारे और तुम्हारे बीच समान है ।" (क़ुरआन, 3:64) इस क़ुरआनी आदेश पर अमल करके हम इस्लाम के लिए राहें बना सकते हैं । कॉलेज के कैम्पसों में दावती काम प्रभावकारी हो सकते हैं, लेकिन इन वार्ताओं में उचित वाद-विवाद का पहलू स्पष्ट होना चाहिए ।

इस्लाम की सच्चाइयों को स्पष्ट करने के लिए तार्किक, प्रमाणों और वैज्ञानिक सच्चाइयों से भरपूर लाभ उठाया जा सकता है । इस्लाम हमें अच्छा वार्तालाप व संवाद करने का आदेश देता है, इसलिए ऐसे दलीलों के साथ मैदान में उतरने की ज़रूरत है । भारत के निचले वर्गों को फिर वही समानता व भाईचारे का उपदेश देने की ज़रूरत है, जो इस्लाम के आगमन के वक़्त हमारे बुज़ुर्गों ने दिया है । हम अच्छे अंदाज़ में हिकमत के साथ, हमदर्दी के साथ प्यारे देशवासियों तक इस्लामी समानता व भाईचारे का सन्देश पहुंचाएं ।

25 yrs. Service (Regd.)

AL KAUSAR HOLY HERBAL

HOSPITAL & RESERCH CENTRE

(A minority Unit of Islamic Medicine Under Art.30 (1) Const. of India)

Founder: **Al-Hajj Dr. ABDUR RASHEED**

Ph.D. (HOLISTIC HERBAL)

Medicine of Hazrat Mohammad (S.A.W)
By faith of ALLAH
Shyamganj Road, B.Deoghar - 814112
(Jharkhand) India

Kidney, Heart, Liver, Pancreas, Uterus, disorders, Pain Control, Asthama, Child Birth (Cardio, Uro, Nephro, Neuro, Gastroe, Gynae, Hemato, Diabeto Intercentral cardio, Bronco etc.)

Recharge your body, mind, psyco, soul, desire heart way of "Islamic medicine". Further treatment require or not feels within 7 to 19 days

(Rooms available)

Enquiry: 9955725769, E-mail: alkausarreached@gmail.com
Bank of India, Deoghar Branch A/c-446110100000871
IFS Code No. BKID 0004461

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो कुछ धन-सामग्री हमने तुमको प्रदान की है, उसमें से ख़र्च करो इससे पहले की वह दिन आए, जिसमें न ख़रीद-बिक्री होगी, न दोस्ती काम आएगी और न सिफ़ारिश चलेगी ।"

(क़ुरआन, 2:254)

A Well Wisher

KOLKATA

शोर के ख़िलाफ़ मचाइए शोर

■ डॉ॰ अनामिका प्रकाश श्रीवास्तव

शोर के संबंध में तक़रीबन एक शताब्दी पूर्व नोबेल पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध जीवाणु वैज्ञानिक राबर्ट कॉक की यह भविष्यवाणी आज बिल्कुल सटीक बैठती है । उन्होंने कहा था, 'एक दिन ऐसा भी आएगा, जब मनुष्य को स्वास्थ्य के सबसे बड़े शत्रु के रूप में क्रूर शोर के साथ संघर्ष करना पड़ेगा ।' स्वच्छ पर्यावरण के लिए गठित समिति की सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार मुंबई महानगर में तक़रीबन 36 फ़ीसदी से अधिक लोग लगातार हो रहे ध्वनि प्रदूषण को बर्दाश्त कर रहे हैं या यूं कहें कि वे इसके आदी हो गये हैं । इनमें से 76 फ़ीसदी लोगों की किसी बात पर पूरा ध्यान न दे पाने की शिकायत है, तो 69 फ़ीसदी की पूरी नींद न आने की और 65 फ़ीसदी से ज़्यादा लोगों को बेचैनी की शिकायत है ।

सर्वेक्षण रिपोर्ट के अनुसार यदि आदमी लगातार अधिकतर शोर-शराबे के बीच ही रहता है या इसका आदी हो जाता है तो कहीं कमोबेश, कहीं स्थायी रूप से वह बहरा हो जाता है । इस तरह के मामले अधिकतर औद्योगिक प्रतिष्ठानों में पाये जाते हैं जिनमें सबसे ज़्यादा क़रीब 42 फ़ीसदी फाउंड्री उद्योग में, 33.7 फ़ीसदी फ्लोर मिलों में, 33 फ़ीसदी टैक्सटाइल उद्योग में, 29 फ़ीसदी के क़रीब रिफायनरी उद्योग में, उर्वरक कारख़ानों में क़रीब 20.8 फ़ीसदी तथा सबसे कम शोर बिजली कंपनियों से यानी बिजली के सामान बनाने वाली कंपनियों और विद्युत गृहों में 9-10 फ़ीसदी पाया जाता है ।

शोर से सबसे ज़्यादा प्रभावित होते स्कूली बच्चे

शोर से सबसे ज़्यादा स्कूली बच्चे प्रभावित होते हैं । बच्चों की आये दिन लगातार कम होती जाती श्रवण शक्ति और स्मरण शक्ति इसका जीता-जागता सबूत है । स्मरण शक्ति के कमज़ोर हो जाने की वजह से बच्चे पढ़ाई-लिखाई में कम ध्यान देते हैं । इस तथ्य को नकारा नहीं जा सकता । प्राप्त जानकारी के अनुसार एक चिकित्सकीय सर्वेक्षण में यह पाया गया कि क़रीब 35 फ़ीसदी बच्चे पढ़ाई में ध्यान नहीं दे पाते, 40 फ़ीसदी बहरेपन के शिकार हो गये और शेष चिड़चिड़ाहट, सिरदर्द तथा तनाव के शिकार हुए ।

दरअस्ल ऐसा वहां पाया जाता है जहां पास में रेलवे लाइन होती है और वाहन की आवाजाही रात-दिन जारी रहती है । पास में बाज़ार होते हैं जिसमें हेयर कटिंग की दुकानों, जूस, चाय-पान वालों, साउंड सर्विस तथा वीडियो-ऑडियो कैसिट की दुकानों पर रेडियो-स्टीरियो आदि तेज़ आवाज़ में बजते ही रहते हैं । इसके साथ-साथ स्कूटर, रिक्शा, मोटर-साइकिल, मिनी बस, मारुति आदि गाड़ियों के भिन्न-भिन्न तरह के विशेष हार्न भी इस शोर को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं ।

शोर के कारण आदमी हो सकता है बहरा

शोर के कारण कम सुनायी देना स्थाई बीमारी का रूप तो ले ही लेता है, साथ ही रक्तचाप, सांस गति, नाड़ी तथा रक्त प्रवाह की गति पर भी दुष्प्रभाव पड़ता है । हृदय रोग, मानसिक तनाव, सिरदर्द और स्नायु रोगों के मामलों में बढ़ोत्तरी के पीछे शोर कम ज़िम्मेवार नहीं है, क्योंकि आजकल शहरों के भीड़-भाड़ भरे इलाक़ों में रहने वाले

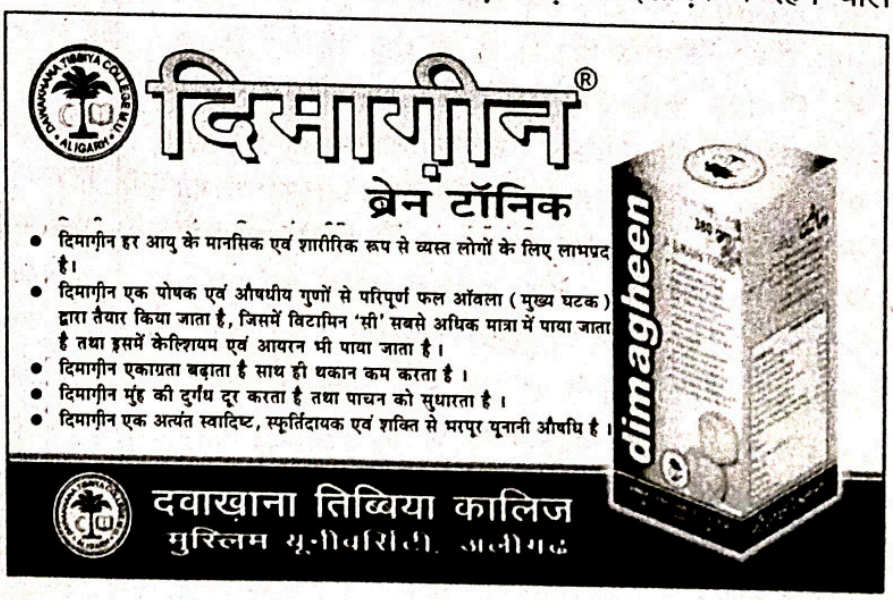

लोग तक़रीबन 70-80 और कभी-कभी तो 90 डेसीबल शोर के बीच रहने को मजबूर हैं । आदमी 60-70 डेसीबल शोर बर्दाश्त कर सकता है लेकिन यदि यह सीमा बढ़ाकर 120 से 130 डेसीबल तक पहुंच जाती है तो आदमी बहरा भी हो सकता है, पागल हो सकता है और अनेक बीमारियों का शिकार हो सकता है ।

सबसे ज़्यादा शोर लाउडस्पीकर, सायरन, फैक्ट्री-कारख़ाने से

मुंबई उच्च न्यायालय द्वारा शोर नियंत्रण एवं परीक्षण हेतु गठित एक समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि महानगर में औसत शोर प्रदूषण मापक इकाई के अनुसार 57 से 105 डेसीबल तक है । ग़ौरतलब है कि विश्व स्वास्थ्य संगठन की संस्तुत के तहत रात में औसत शोर 45 डेसीबल तथा दिन में यह 55 डेसीबल तक होना चाहिए । स्वाभाविक निद्रा में यह 30 डेसीबल होना चाहिए । इसमें अधिक निद्रावस्था में आदमी के बर्दाश्त के बाहर है । अमेरिका और पूर्व सोवियत संघ में हुए सर्वेक्षणों में यह बात साफ़ हो गयी है कि सुरदार या बहुत तेज़ बेसुरी आवाज़ से एकदम आदमी आक्रामक रुख़ इख़्तियार कर लेता है । सबसे ज़्यादा शोर लाउडस्पीकर, सायरन, फैक्ट्री-कारख़ाने, सड़क, रेल यातायात, हवाई जहाज़ और उनमें भी लड़ाकू विमानों, आतिशबाज़ी के अलावा घर-घर में चल रही छोटी-मोटी इकाइयों से होता है, जो रात-दिन धड़-धड़ करती चलती रहती है ।

शोर पर क़ानूनी रोक अति आवश्यक

साधारण बातचीत से 60, तेज़ आवाज़ में बोलचाल तथा गाली-गलौज से 70, फुसफुसाहट से 20, दीवार घड़ी से 30, टाइपराइटर से 45, टेलीविज़न से 55 से 60, टेबिल घड़ी से 65, कार के हार्न से 90 से 100, मोटर साइकिल से 115-120, हवाई जहाज़ से 120 से 150 तक राकेट से 165 से 170-175 डेसीबल तक शोर उत्पन्न होता है । यही वजह है कि बड़े-बड़े शहरों में बहरेपन तथा कम सुनायी देने के मामलों में दिन-ब-दिन बढ़ोत्तरी हो रही है । शायद इन्हीं से बचने की वजह से प्राचीन काल में रोम में यह क़ानून लागू था कि शाम होते ही शहर की सीमा में कोई वाहन प्रवेश नहीं करेगा । ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने भी शोर के ख़िलाफ़ क़ानून बनाए थे और वहां उन्हें तोड़ने पर कठोर दंड का प्रावधान था । 1760 में तो वहां पर 'ध्वनि उपशमन अधिनियम' के ज़रिए शोर पर क़ानूनी रोक लगायी गयी ।

भारत में शोर पर 1960 से काम ज़रूर शुरू किया गया है लेकिन अभी तक शोर पर नियंत्रण पाने की दिशा में कोई क़ानून नहीं बनाया गया है । यदि समय रहते इस पर रोक नहीं लगाई गयी, तो आने वाले सालों में देश में बहरों की तादाद में जिस तेज़ी से बढ़ोत्तरी होगी । वह हमारे लिए एक और समस्या होगी, आवश्यकता शोर से होने वाले ख़तरों के ख़िलाफ़ जन-जागृति की है । हमारा स्वास्थ्य तभी ठीक रहेगा जब इसे शोर से निजात मिल सकेगी ।

नेकी की राह

दुख देने से दुख मिलता है,
सुख देने वाला सुख पाता ।
जो सबको धोखा देता है,
बेशक वह भी धोखा खाता ।।

बड़े भाग्य से मिला मनुज-तन,
तो छोड़ो सब गन्दी आदत ।
घड़ी-दो-घड़ी वक़्त निकालो,
परमेश्वर की करो इबादत ।।

गर नेकी की राह चलोगे,
बेशक सुख ही सुख पाओगे ।
पकड़ी डगर बुराई की तो,
जीवन भर तुम पछताओगे ।।

अपना हो या ग़ैर, किसी को,
दुख पहुंचाना ठीक नहीं है ।
सतत् बढ़ रहा जो निज पथ पर,
उसे गिराना ठीक नहीं है ।।

अच्छा है यह, जो भटके हैं,
उनको उनकी राह बता दो ।
हो असहाय गिरे हैं जो जन,
हाथ पकड़कर उन्हें उठा दो ।।

ऐसा जिसने किया अगर तो,
समझो सच्चा पुण्य यही है ।
बेशक वह तो नेक पुरुष है,
जन्नत-सा सुख उसे यहीं है ।।

डॉ॰ त्रिलोकी सिंह
ग्राम-हिन्दूपुर, पो॰-करछना
इलाहाबाद (उ॰प्र॰)

बाबिल की कल्दानी सल्तनत

■ अख़्लाक़ अहमद क़ादिरी

सातवीं सदी ईसा पूर्व के अन्त में आशूरियों के पतन के बाद एक बार फिर बाबिल का उत्थान हुआ । यह उत्थान इस प्राचीन ऐतिहासिक शहर को कल्दानियों के हाथों प्राप्त हुआ । इसी कारणवश बाबिल, 'कल्दानी सल्तनत'' भी कहलाती है ।

कल्दान या कालदिया Chaldea दजला, फ़रात नदी की घाटी का दक्षिणी भू-भाग है । नाबो प्लासर Nabo Polaser इसी क्षेत्र का एक क़बायली सरदार था । इसी नाबो प्लासर ने 626 ईसा पूर्व में बाबिल में एक नये शाही साम्राज्य की स्थापना की । इन्हीं कंल्दानी क़बायल ने आशूरियों के विरुद्ध ईरान को 'मैदयूं'' की सहायता की थी, जबकि मिस्र के 26वें ख़ानदान का फ़िरऔन नीकोह Nechoii आशूरियों का दोस्त बनकर लड़ा था ।

नाबो प्लासर के बाद बख़्तेनस्र (नाबो कदिंज़र सामी) बाबिल के सिंहासन पर बैठा । वह बाबिल के कल्दानी सल्तनत का महान शासक साबित हुआ । विश्व इतिहास में वह अपनी सैनिक शक्ति, बाबिल की राजधानी के मान-सम्मान, प्रगति, उन्नति की बहाली और बनी इसराईल के इतिहास में एक अहम किरदार अदा करने के कारण जाना जाता है ।

605 ईसा पूर्व में बख़्तेनस्र शाम (सीरिया) में मिस्रियों के ख़िलाफ़ युद्धरत था कि 16 अगस्त 605 ईसा पूर्व को उसके बाप नाबो प्लासर की मृत्यु हो गयी । वह सीरिया से वापस बाबिल आकर सिंहासन पर बैठा । बख़्तेनस्र या नाबो कदिंज़र एक महान विजेता व शानो-शौकत रखने वाला बादशाह था । सिंहासन पर बैठने के बाद उसने राज्य के शासन-व्यवस्था पर अपनी पकड़ मज़बूत बनायी । फ़िर उसके बाद शाम और फ़िलिस्तीन के बहुत से राज्यों को अपने अधिकार क्षेत्र में लेते हुए उनसे लगान वसूल किया । उन्हीं राज्यों में इसराइलियों का राज्य यहूदा भी सम्मिलित था । अपनी शानदार विजयों के साथ-साथ उसने बाबिल के नवनिर्माण कार्यों पर भी पूरा ध्यान दिया ।

शहर में अनगिनत नये भवनों के साथ-साथ उसने नये मंदिरों का भी निर्माण करवाया । मीलों लंबी चहारदिवारी तैयार करवायी जिसकी लंबाई 50 मी॰ थी और यह इतनी चौड़ी थी कि उसके ऊपर दो रथ एक साथ दौड़ाये जा सकते थे । उस दीवार में कांसी के बने 250 मीनार थे । इस दीवार में जो बड़े-बड़े दरवाज़े लगाए गये थे, उन्हीं में उस समय का मशहूर दरवाज़ा 'उश्तर' भी शामिल था, जो बाबिल में 'मुहब्बत की देवी उश्तर' के नाम से जाना जाता था ।

यह दरवाज़ा 50 फुट ऊंचा और बाबिल के उत्तर में लगा हुआ था 'बअ्ल' देवता के मीनार और बाबिल के बाग़ात का निर्माण भी बख़्तेनस्र के शासनकाल में हुआ । उसने अपने काल में चांद देवता के मंदिर के डिज़ाइन को इस तरह परिवर्तित करवा दिया कि आम लोग बाहर से ही चांद देवता की मूर्ति के दर्शन करने लगे । बाइबल में लिखा है कि बख़्तेनस्र ने बाबिल में भी शुद्ध सोने से ढाली गयी एक मूर्ति लगवायी, जो 60 हाथ ऊंची थी और सभी निवासियों के लिए यह आदेश दिया गया था कि जब झांज, हंसरी, शंख, तंबूरा बजने लगे, तो सब लोग सजदे में गिर जाएं और सोने की उस मूर्ति की पूजा करें ।

यह कल्दानी बादशाह बख़्तेनस्र (नाबोकदिंज़रसानी) कहलाता है, क्योंकि उसके नाम का एक बादशाह 11वीं सदी ईसा पूर्व में भी गुज़रा था । बख़्तेनस्र के बाद बाबिल के सिंहासन पर उसके चार उत्तराधिकारी नियुक्त हुए, जिसमें एक नाबो नीट्स था । नाबो नीट्स को भगनावशेषों को जमा करने और प्राचीन मंदिरों का जीर्णोद्धार, प्राचीन परम्परा के अनुसार कराने का बहुत शौक़ था ।

यह बादशाह उन धार्मिक सुधारों को जो बख़्तेनस्र ने जारी की थीं, उन्हें पसन्द नहीं करता था । उसने प्राचीन रीति-रिवाज़ को जीवित रखने और जारी करने की कोशिश की । नाबो नीट्स आमतौर पर अरब मरुस्थल के एक स्थान 'यतमा' में महल बनवाकर रहता था और धार्मिक रस्मों की अदायगी तक के लिए वह बाबिल न आता था, इसलिए

बाबिल के मंदिरों के पुजारी उसके विरुद्ध हो गये । बाबिल में उसका बेटा पालशीज़र शासन करता था ।

यहूदियों की एक रिवायत के अनुसार एक दिन वह जब उत्सव मना रहा था और शराब के नशे में मस्त था कि उसे दीवार पर एक ग़ैबी हाथ कुछ लिखता नज़र आया, जिसका अर्थ यह था कि ईरान के पारसी शासक बहुत जल्दी ही उसके राज्य का अंत कर देंगे । अत: 539 ईसा पूर्व में साइरस आज़म या कोरुश आज़म ने बाबिल पर आक्रमण करके बाबिली सल्तनत का अंत कर दिया ।

बख़्तेनस्र के शासनकाल में उसके आदेश से बाबिल में ''हवा में झूलता हुआ'' बाग़ीचे बनाए गये थे, जिसकी गणना विश्व के प्राचीन अजूबों में होती हैं । बख़्तेनस्र ने ये बाग़ीचे अपनी मलिका आमीता के लिए बनवाये थे । मलिका आमीता ईरान के बादशाह क्याकिसारा की बेटी थी और ईरान के पहाड़ी इलाक़े हमदान की रहने वाली थी । हमदान के पर्वती दृश्यों से उसे प्राकृतिक लगाव था । बाबिल बहुत ही ख़ूबसूरत शहर था, मगर यहां कोई पहाड़ न था, इसलिए आमीता कुछ उदास रहती थी ।

बादशाह ने जब उदासी का कारण पूछा तो उसने बताया कि बाबिल में वह हरी-भरी पहाड़ी कहां, जो मेरे देश में थी । यहां हर तरफ़ मैदान ही मैदान नज़र आते हैं । एक ही तरह के मैदानों को देखते-देखते उकता गयी हूं । दिल चाहता है कि इस भू-भाग में पहाड़ भी हों ।

मैदानी इलाक़े को पहाड़ी इलाक़ा बनाना संभव नहीं था, लेकिन बख़्तेनस्र चाहता था कि मलिका की आरज़ू पूरी हो । उसने अपने देश के बुद्धिमानों को मलिका की इच्छा के बारे में बताया । पहाड़ होते तो उन्हें काटकर हरा-भरा बनाया जा सकता था, लेकिन मैदानी भागों में पहाड़ बने, तो कैसे ? ऊंची-ऊंची चोटियां, उन पर महकते बाग़ीचे, और ऊंचे पेड़ कहां से आएं ? सब लोग हैरान थे, उनमें से एक बुद्धिमान बोला कि हमारी प्राचीन किताबों में लिखा है कि बाबिल में बड़ी-बड़ी चीज़ें बनेंगी, दुनिया वाले उन्हें देख-देखकर हैरान होंगे । यहां तक कि बाबिल में पहाड़ भी बनेगा । पहाड़ पर जंगल उगेंगे और झरना भी बहेगा ।

कुछ बातें तो बादशाह की समझ में आयीं, लेकिन पहाड़ की समस्या बहुत मुश्किल थी । एक पुरोहित बोला कि पहाड़ बनना भी संभव है । उसकी सलाह यह है कि ऊंची-ऊंची मेहराबें बनायी जाए, उन मेहराबों पर छत डाली जाएं । फिर उस छत पर चारों तरफ़ जगह छोड़कर और मेहराबें बनायी जाएं । उन मेहराबों पर भी छत डाली जाएं । इसी तरह और मेहराबें बनायी जाएं और उन पर छतें डाली जाएं । इस सिलसिले को इतना ऊंचा किया जाए कि दूर से पहाड़ नज़र आएं ।

बादशाह को सलाह पसन्द आयी और उस पर काम फ़ौरन शुरू हो गया । मेहराबों को मज़बूत बनाने के लिए उनमें सीसा पिघला कर डाला गया, ताकि ज़्यादा से ज़्यादा बोझ संभाल सके । मेहराबों की 36 सीसे की मोटी तह जमाकर उन पर मिट्टी डाली गयी । फिर उन छतों के ऊपर एशिया भर से फूल-पौधे लाकर लगाए गये । ये छतें 350 फुट ऊंची और 400 फुट लंबी थीं । छतों के नीचे मेहराबों के अन्दर आरामगाहें थीं । उनमें बहुत ही ख़ूबसूरत और चमकदार रंगों से चित्र और बेल-बूटे बनाए गये थे । मेहराबों के ऊपर हरी-हरी बेलें चढ़ायी गयीं और एक छत से दूसरी छत पर जाने के लिए ऐसी छोटी-छोटी सीढ़ियां बनायी गयीं, जैसे पहाड़ काट कर पहाड़ पर रास्ते बनाए जाते हैं ।

कृत्रिम पहाड़ भी बन गया । पेड़ उग गये और फूल भी खिल गये । अब सवाल पैदा यह हुआ कि बागों में पानी कैसे दिया जाए । उन बाग़ों में पानी देने का तरीक़ा भी दिलचश्प था । सबसे ऊपर की छत पर एक बहुत बड़ा तालाब भी बनाया गया था । उस तालाब में नलों के द्वारा फ़रात नदी का पानी भरा जाता था ।

पम्प निरंतर दिन-रात चलते थे और पानी की मात्रा में कमी न आने दी जाती थी । इस तालाब के पानी से झरने बहते थे और फव्वारे छूटते थे । बाग़ इन्हीं झरनों के पानी से सिंचित होता था । उन बाग़ों के ऊंचे-ऊंचे पेड़ जब हवा के झोकों से हिलते, तो ऐसा लगता कि जैसे पहाड़ का पहाड़ हिल रहा है । कुछ ऐसा मालूम होता कि आसमान से सदा बहार बाग़ात को लटका कर ज़मीन की सतह तक पहुंचाया गया हो । इसी कारण से ये बाग़ीचे बाबिल के मुअल्लक़ या हवा में लटकते हुए बाग़ात कहलाते थे ।

वास्तुकला का यह महान कारनामा विश्व के सात अजूबों में गिने जाने लगा । बाबिल का लटकता हुआ बाग़ात, तो ज़माने के हाथों सुरक्षित न रह सका, लेकिन उनके खंडहरात अब भी मौजूद हैं । बख़्तेनस्र ने एक विशाल बांध का निर्माण भी करवाया था, जो दजला से फ़रात नदी तक बढ़ता चला गया था ।

हार की जीत

■ सुदर्शन

मां को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था । भगवद्-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता । वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान । उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाक़े में न था । बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कहकर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, ख़ुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे । उन्होंने रुपया, माल, असबाब, ज़मीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहां तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी । अब गांव से बाहर एक छोटे-से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे । "मैं सुलतान के बिना नहीं रह सकूंगा", उन्हें ऐसी भ्रांति-सी हो गयी थी । वे उसकी चाल पर लट्टू थे । कहते, "ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो ।" जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता ।

खड़गसिंह उस इलाक़े का प्रसिद्ध डाकू था । लोग उसका नाम सुनकर कांपते थे । होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुंची । उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा । वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुंचा और नमस्कार करके बैठ गया । बाबा भारती ने पूछा, "खड़गसिंह, क्या हाल है ?"

खड़गसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपकी दया है ।"

"कहो, इधर कैसे आ गए?"

"सुलतान की चाह खींच लाई ।"

"विचित्र जानवर है । देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे ।"

"मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है ।"

"उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी !"

"कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है ।"

"क्या कहना ! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है ।"

"बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूं ।"

बाबा भारती और खड़गसिंह अस्तबल में पहुंचे । बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड़गसिंह ने देखा आश्चर्य से । उसने सैंकड़ों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बांका घोड़ा उसकी आंखों से कभी न गुज़रा था । सोचने लगा, भाग्य की बात है । ऐसा घोड़ा खड़गसिंह के पास होना चाहिए था । इस साधु को ऐसी चीज़ों से क्या लाभ ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा । इसके पश्चात उसके हृदय में हलचल होने लगी । बालकों की-सी अधीरता से बोला, "परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या ?"

दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया । घोड़े को खोलकर बाहर गये । घोड़ा वायु-वेग से उड़ने लगा । उसकी चाल को देखकर खड़गसिंह के हृदय पर सांप लोट गया । वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था । उसके पास बाहुबल था और आदमी भी । जाते-जाते उसने कहा, "बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूंगा ।"

बाबा भारती डर गये । अब उन्हें रात को नींद न आती । सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी । प्रति क्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गये और वह न आया । यहां तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गये और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे ।

संध्या का समय था । बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे । इस समय उनकी आंखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता । कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे । सहसा एक ओर से आवाज़ आयी, "ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना ।"

आवाज़ में करुणा थी । बाबा ने घोड़े को रोक लिया । देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है । बोले, "क्यों तुम्हें क्या कष्ट है ?"

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, "बाबा, मैं दुखियारा हूं । मुझ पर दया करो । रामावाला यहां से तीन मील है, मुझे

वहां जाना है । घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा ।''

''वहां तुम्हारा कौन है ?''

''दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा । मैं उनका सौतेला भाई हूं ।''

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे-धीरे चलने लगे । सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा और लगाम हाथ से छूट गयी । उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है । उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गयी । वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था । बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, ''ज़रा ठहर जाओ ।''

खड़गसिंह ने यह आवाज़ सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, ''बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूंगा ।''

''परंतु एक बात सुनते जाओ ।'' खड़गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आंखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, ''यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है । मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूंगा । परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूं । इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा ।''

''बाबाजी, आज्ञा कीजिए । मैं आपका दास हूं, केवल घोड़ा न दूंगा ।''

''अब घोड़े का नाम न लो । मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूंगा । मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना ।''

खड़गसिंह का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया । उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहां से भागना पड़ेगा, परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना । इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है ? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका । हारकर उसने अपनी आंखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, ''बाबाजी इसमें आपको क्या डर है ?''

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, ''लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन-दुखियों पर विश्वास न करेंगे ।'' यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुंह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो ।

बाबा भारती चले गये । परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूंज रहे थे । सोचता था, कैसे ऊंचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है ! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था । कहते थे, ''इसके बिना मैं रह न सकूंगा ।'' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं । भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे । परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी । उन्हें केवल यह ख़याल था कि कहीं लोग दीन-दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दे । ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है ।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर पहुंचा । चारों ओर सन्नाटा था । आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे । थोड़ी दूर पर गांवों के कुत्ते भौंक रहे थे । मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था । खड़गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था । वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुंचा । फाटक खुला पड़ा था । किसी समय वहां बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था । खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बांध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बंद कर दिया । इस समय उसकी आंखों में नेकी के आंसू थे ।

रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था । चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया । उसके पश्चात, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पांव अस्तबल की ओर बढ़े । परंतु फाटक पर पहुंचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई । साथ ही घोर निराशा ने पांव को मन-मन भर का भारी बना दिया । वे वहीं रुक गये । घोड़े ने अपने स्वामी के पांवों की चाप को पहचान लिया और ज़ोर से हिनहिनाया । अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो । बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुंह पर थपकियां देते ।

फिर वे संतोष से बोले, ''अब कोई दीन-दुखियों से मुंह न मोड़ेगा ।''

नहीं तो पानी की क़िल्लत से जूझना पड़ेगा

■ अनिल प्रकाश जोशी
(पर्यावरण विद्)

दक्षिण अफ़्रीक़ा के केपटाउन की जल त्रासदी चौंकाने से ज़्यादा डराने वाली है । यह दुनिया के बेहतरीन शहरों में से एक माना जाता है और हमेशा अपनी ख़ूबसूरती के लिए चर्चा में रहा है । लेकिन आज केपटाउन दूसरी वजह से सुर्ख़ियों में है । यहां पानी का संकट अपने चरम पर पहुंच चुका है । पिछले एक दशक से वैसे भी यह शहर पानी की क़िल्लत से गुज़र ही रहा था और समय रहते इसके लिए कुछ नहीं किया गया । अब हालत यह है कि घरों को आपूर्ति के लायक़ भी पानी नहीं बचा ।

सब कुछ ठप है, क्योंकि जल है, तो जीवन है । वहां नहाना और धोना सब कुछ बंद कर दिया गया है । अब वहां प्रति व्यक्ति मात्र 25 लीटर पानी देना संभव होगा और किसी भी तरह के जल दंगों से निबटने के लिए सेना और पुलिस भी तैयार की जा रही है ।

केपटाउन तो एक शहर है, दूसरी तरफ़ पूरा संयुक्त अरब अमीरात विकराल जल संकट की ओर बढ़ रहा है । इससे निबटने के लिए अंटार्कटिका से समुद्र के रास्ते एक हिमखंड खींचकर लाने की कोशिश की जा रही है । यह काम एक निजी कंपनी को सौंपा जा रहा है । अनुमान है कि यह हिमखंड पांच साल तक यू०ए०ई० के लोगों की प्यास बुझाएगा । इस अजीब योजना के तहत 8,800 किलोमीटर दूर हिमखंड वहां पहुंचेगा, फिर उसे टुकड़े-टुकड़े करके स्टोर किया जाएगा । दुनिया में बाक़ी जगह समस्या भले ही इतनी विकराल न हो, लेकिन आबादी के एक बड़े हिस्से को परेशान तो कर ही रही है ।

अनुमान है कि दुनिया की 1.1 अरब आबादी को आज भी साफ़ पानी नसीब नहीं होता और दूसरी तरफ़ 2.7 अरब लोगों को कम से कम एक महीना पानी की कमी से जूझना पड़ता है । यह तय माना जा रहा है कि साल 2025 तक दुनिया की दो-तिहाई आबादी पानी के संकट का शिकार होगी ।

पूरी समस्या को हम ऐसे भी समझ सकते हैं कि 1951

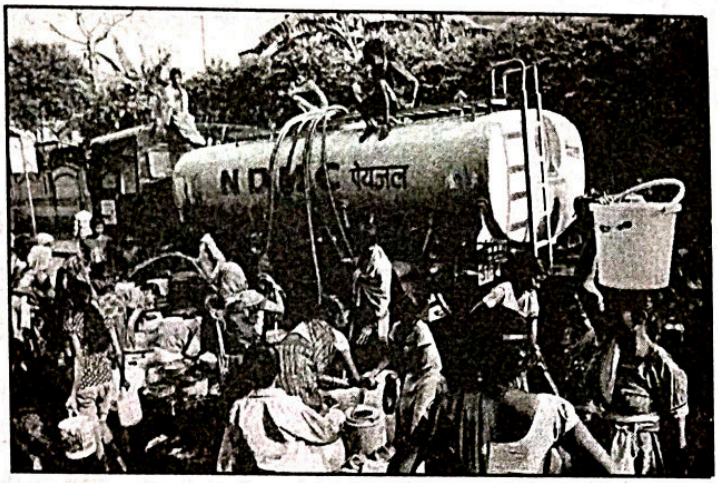

में प्रति व्यक्ति पानी की उपलब्धता 5,177 घन मीटर थी, जो घटकर वर्ष 2025 में सिर्फ़ 1,341 घन मीटर पहुंचने वाली है । अपने ही देश में अधिकतर तालाब और कुओं ने दो दशकों में तेज़ी से पानी खोया है और जहां पर जल 15 से 20 फ़ीट नीचे उपलब्ध था, वहां वह 200 फ़ीट से नीचे जा चुका है ।

लोकसभा में ही सरकार द्वारा स्वीकारा गया है कि अपने देश में 275 नदियां ख़तरे की घंटी बजा चुकी हैं, क्योंकि उनमें पानी की मात्र तेज़ी से ख़त्म हो रही है । 2016 में नौ राज्यों के 33 करोड़ लोगों ने भीषण जल संकट को झेला था । जल आयोग के अनुसार, देश के 91 प्रमुख जलाशय अच्छी हालत में नहीं हैं । गरमी आते-आते इनमें 20 से 22 फ़ीसदी पानी ही बचा रहता है ।

जब संकट आता है, तो दाएं-बाएं से हम किसी तरह जल जुटा ही लेते हैं और स्थितियां सामान्य होने पर पुराना संकट भुला दिया जाता है । अपने देश में जो नया चलन सामने आया है, वह यह कि जल संकट अब गरमियों की ही समस्या नहीं रह गया, बल्कि शीतकाल में भी लोगों को इससे जूझना पड़ता है । जल संकट का दूसरा बड़ा पहलू यह भी है कि धरती को छेदकर हर हद तक पानी निकालने के हमारे पागलपन ने आर्सेनिक क्लोराइड, फ्लोराइड, नाइट्रेट व आयरन जैसे तत्वों की जल में बहुतायत पैदा कर दी है, जिससे देश को नयी तरह की बीमारियां झेलनी पड़ रही हैं ।

इस संकट की स्थिति में भी अपने देश में जल के प्रति

मनमानी कोई नयी बात नहीं है । इसके दुरुपयोग के सारे रास्ते खुले हैं । जल संरक्षण व जल के किफ़ायती उपयोग पर न तो कोई क़ानून दिखता है और न ही कोई बड़ी जागरूकता । इसलिए यह ख़तरा तो है ही कि देर-सवेर अपने यहां भी केपटाउन जैसी स्थितियां पैदा हो सकती हैं । इसका अंदाज़ा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि देश के कई हिस्से ख़ासतौर से गरमियों में भीषण सूखे की स्थिति में पहुंच जाते हैं, शहरों में हर जगह पानी-पानी का शोर सुनाई देने लगता है ।

दिल्ली हो या देहरादून, कानपुर हो या लखनऊ, या दक्षिण भारत का कोई अन्य शहर केपटाउन कहीं भी दस्तक दे सकता है । केपटाउन व संयुक्त अरब अमीरात के जल संकट के संकेत हमें गंभीर होने का इशारा करते हैं ।

इसके लिए सबसे पहले ज़रूरी यह है कि हम जल पर एक राष्ट्रीय क़ानून बनाएं । ऐसे कई देश हैं, जहां जल क़ानूनों ने जल दुरुपयोग पर बड़ा अंकुश लगाया है । इजरायल और ऑस्ट्रेलिया जैसे देश जल क़ानून बनाकर उन पर अमल करते हैं । दूसरा, अपने देश का 65 से 70 फ़ीसदी जल खेती में लगा दिया जाता है ।

ज़रूरत है कि इजरायल जैसे देशों से खेती में जल का बेहतर उपयोग सीखा जाए । तीसरी और ज़्यादा अहम बात जो हमारे देश के पक्ष में है, वह यह कि यहां वर्षा की बहुतायत है । हर वर्ष लगभग 4,000 अरब क्यूबिक पानी उपलब्ध होता है, पर उसका मात्र 15 फ़ीसदी हम संरक्षित कर पाते हैं । इस दिशा में एक बड़ी पहल की आवश्यकता है । मरती नदियां, ख़ाली होते कुओं और सूखते तालाबों को बरसात की बारिश ही नवजीवन दे सकती है । हमें सारे रास्ते तैयार करने होंगे, वह चाहे हरेक नागरिक से जुड़ा उपाय हो या कॉरपोरेट घरानों से, हमें पानी को जोड़ने के लिए हर तरह की कोशिश करनी पड़ेगी । जहां एक तरफ़ जल संरक्षण व इसके कुशल उपयोग पर काम करना होगा, वहीं पानी के दुरुपयोग के लिए क़ानून की वकालत करनी होगी । वरना हम केपटाउन व संयुक्त अरब अमीरात की ख़बरों की अनदेखी आने वाले समय पर नहीं कर पाएंगे, क्योंकि तब हम स्वयं उस जल संकट का हिस्सा होंगे । इस तरह के संकटों में समझदारी और दायित्व मात्र सरकार के ज़िम्मे नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि सरकार तो बदलती रहती है । लेकिन हमारी सामूहिक जागरूकता आने वाले समय में ऐसी किसी भी परिस्थिति को बदल सकती है ।

कविताएं

असमंजस

अस्पतालों के बिल अब लाखों में होने लगे हैं
बड़े वकीलों की फ़ीसें भी अब लाखों में होती हैं
बच्चों की पढ़ाई का ख़र्च अब लाखों से कम नहीं होता
शायद विकास इसे ही कहते हैं
उन्नति, तरक़्क़ी, प्रगति इसी का ही नाम है, पहचान है !
मगर देश का आम आदमी
अब असमंजस में है हलकान है, परेशान है
कि वह करे तो क्या करे जाए तो कहां जाए ?
कहां से वह यह लाखों जुटाए ?
है कोई जवाब किसी के पास
उसके इस प्रश्न का ?

(2)

भ्रामक विज्ञापन

प्रिंट मीडिया हो अथवा इलेक्ट्रॉनिक
विज्ञापनों की भरमार दोनों में है
उनका अस्तित्व भी विज्ञापनों से है
विज्ञापनों के बल पर ही तो आज
हर बिजनेस चलता है, बढ़ता है
अत: विज्ञापनों का होना ज़रूरी है
किन्तु आजकल भ्रामक विज्ञापन
छाए हुए हैं, छाते जा रहे हैं
उनकी लुभावनी भाषा एवं प्रस्तुति
आकर्षित करती है लुभाती है
विज्ञापन चाहे गोरा बनाने का हो या
वज़न घटाने का या बाल बढ़ाने का
आदमी उनके फेर में पड़ ही जाता है
बेवक़ूफ़ बनता है, पैसा गंवाता है
लिखित शिकायतों के अभाव में
सरकारी विभाग भी कुछ अधिक
अंकुश इन पर नहीं लगा पाते हैं ।

ओमप्रकाश बजाज
पोस्ट बॉक्स 595, जी०पी०ओ०, इंदौर (म०प्र०)

इन्सानो ! रब को पहचानो

● संपादन प्रभाग

ईश्वर ही हमारी जीवन-यात्रा की मंज़िल (मूल गंतव्य स्थान) है । हमें अंतत: उसी के पास पहुंचना है । यदि हम उसके बताए हुए मार्ग पर चलेंगे, तो स्वर्ग में हमें सफल व अमर जीवन प्राप्त होगा, जहां न कोई कष्ट व शोक होगा और न कोई भय । ईश्वर के सामीप्य में हमें वह सब कुछ प्राप्त होगा, जिसकी हम कामना करते हैं । वहां कामना की भी कामना पूरी होगी, वहां वह अमृत-वर्षा होगी, जिसकी हम कल्पना भी नहीं कर सकते । किन्तु प्रभु की यह कृपा उन्हीं लोगों पर होगी, जो उसके कृपा-पात्र होंगे, नेक और भले होंगे ।

अत: हमें अपने वर्तमान जीवन से अपनी पात्रता का प्रमाण प्रस्तुत करना होगा । इस जीवन का वास्तविक उद्देश्य भी यही है । यह अपने जीवन के साथ दुर्व्यवहार है कि आदमी उससे उसका सौन्दर्य और उसकी गरिमा छीन ले और भोग-विलास एवं मर्यादाहीन जीवन ही को सब कुछ समझ बैठे एवं अपने प्रभु की अपार कृपा और उसके सामीप्य से अपने आपको वंचित करके नरक की धधकती हुई आग में जा पड़े । स्पष्ट है, कोई भी इन्सान यह नहीं चाहेगा ।

ईशमार्ग का अर्थ

ईश्वर के दिखाए हुए मार्ग पर चलने का अर्थ यह कदापि नहीं होता कि आदमी संसार को छोड़कर जंगल में चला जाए और न इसका अर्थ यह होता है कि आदमी अपनी लौकिक ज़िम्मेदारियों को भूल जाए । ईश्वर के दिखाए हुए मार्ग पर चलने का अर्थ यह है कि लोक और परलोक दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करते हुए सत्य-मार्ग पर अग्रसर हुआ जाए । इसलिए अपने रब को पहचान लेने से हमें वह ज्ञान, शक्ति और पथ प्राप्त होता है, जिसका साधारणतया अनुमान भी नहीं किया जा सकता । अपने रब को पहचानने वाला व्यक्ति चरित्रवान होगा, सच्चा होगा और हर प्रकार की संकुचित दृष्टि से मुक्त होगा । उसका हृदय इतना विशाल होगा कि वह सारे संसार के हित के लिए सोच सके और जगत् के सारे लोगों को समान दृष्टि से देख सके । सबके लिए उसके दिल में करुणा, दया और प्रेम हो । वह इसके लिए विकल हो कि काश ! सारा संसार अपने रब को पहचानता और अपने जीवन में बदलाव लाकर उसके मार्ग पर चलता ।

कुरआन में स्पष्ट शब्दों में यह शिक्षा दी गयी कि–

"(लोगों के साथ) उपकार कर, जिस प्रकार अल्लाह ने तेरे साथ उपकार किया है, और धरती में बिगाड़ पैदा करने की कोशिश न कर । अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों को पसन्द नहीं करता ।" (कुरआन, 28:77)

ईशदूत हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने इस्लाम की ईश्वरीय शिक्षाओं के अनुपालन में जिस आदर्श समाज का निर्माण किया था, वह हर प्रकार की बुराई, पापकर्म और विकार व भ्रष्टता से मुक्त था ।

ऐसे समाज की आवश्यकता आज भी है, आगे भी रहेगी । ईशदूत ने जिस आदर्श समाज का निर्माण किया था उसकी रूप-रेखा कहानियों में नहीं, इतिहास के पन्नों में सुरक्षित आज भी स्पष्ट रूप में देखी जा सकती है । वह एक 'संपूर्ण क्रान्ति' थी जो "इन्सानो ! रब को पहचानो" के आह्वान को तात्कालिक समाज के द्वारा स्वीकृत हो जाने पर आयी थी । यह क्रांति आज भी आ सकती है । ऐसे पूर्ण परिवर्तन और सर्वांगीण क्रांति की हम सबको आवश्यकता भी है और अभिलाषा भी । तो फिर : आओ ! इन्सानो अपने रब को पहचानो !

रब को पहचानने का तक़ाज़ा यह है कि–

● हम जीवन के रहस्य को समझें । अपने रब (प्रभु) के आदेशों का शुद्ध हृदय से पालन करें, अपने हृदय को शुष्क न रहने दें, उसमें प्रेम जगाएं ।

● प्रभु से हमारा प्रेम का संपर्क हो और प्रभु के बन्दों तथा अन्य जीवधारियों के प्रति हमारे हृदय में सहानुभूति और करुणा हो ।

● हम कहीं भी और कभी भी छल-कपट से काम न लें ।

● संसार से हर प्रकार के जुल्म व अत्याचार और शोषण को समाप्त करें, क्योंकि ईश्वर अत्याचार को पसन्द नहीं करता ।

● हमारी नीति यह हो कि सबको समान रूप से आगे बढ़ने के अवसर प्राप्त हों, क्योंकि हर व्यक्ति प्रभु का बन्दा है ।

"तुम्हारा क़र्ज़दार तंगी
में है, तो हाथ खुलने
तक उसे मुहलत दो,
और अगर दान कर दो,
तो यह तुम्हारे लिए
अधिक अच्छा है, अगर
तुम समझो ।"
(क़ुरआन, 2:280)

A Well Wisher

KOLKATA

भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण तिथियां-3

1971-2004

1971–हिमाचल प्रदेश राज्य बना, भारत-पाकिस्तान युद्ध, बंगलादेश का अस्तित्व में आना ।

1972–शिमला समझौता, सी॰ राजगोपालाचारी की मृत्यु।

1973–मैसूर रियासत का नाम कर्नाटक रखा गया ।

1974–भारत ने परमाणु परीक्षण किया, फ़ख़रुद्दीन अली अहमद पांचवें राष्ट्रपति चुने गये, सिक्किम का भारत में विलय ।

1975–भारत ने आर्यभट्ट का प्रक्षेपण किया, सिक्किम भारतीय गणराज्य का 22वां राज्य बना, आपातकाल की घोषणा ।

1976–भारत और चीन ने कूटनीतिक संबंध स्थापित किये ।

1977–छठवें आम चुनाव, जनता पार्टी को लोकसभा में बहुमत मिला, नीलम संजीव रेड्डी भारत के छठवें राष्ट्रपति चुने गये ।

1979–मोराराजी देसाई ने प्रधानमंत्री पद से इस्तीफ़ा दिया, चरन सिंह प्रधानमंत्री बनें, 20 अगस्त को चरन सिंह ने इस्तीफ़ा दिया, छठवीं लोकसभा भंग ।

1980–सातवें आम चुनाव, कांग्रेस (आई) सत्ता में आयी, इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री पद की शपथ ली, संजय गांधी की हवाई दुर्घटना में मृत्यु, भारत ने रोहिणी उपग्रह को ले जाने वाले एस॰एल॰वी॰-3 का प्रक्षेपण किया ।

1982–एशिया का सबसे लंबा पुल खुला (2 मार्च), आचार्य जे॰बी॰ कृपलानी की मृत्यु (19 मार्च), इनसैट 1ए का प्रक्षेपण किया गया, ज्ञानी जैल सिंह भारत के राष्ट्रपति चुने गये (15 जुलाई), गुजरात चक्रवात में 500 से अधिक लोग मारे गये (नवम्बर 5), आचार्य विनोवा भावे की मृत्यु (15 नवम्बर), 9वें एशियाई खेलों का उद्घाटन (10 नवम्बर)

1983–नयी दिल्ली में चोगम सम्मेलन का आयोजन ।

1984–पंजाब में ऑपरेशन ब्लू स्टार, राकेश शर्मा अंतरिक्ष में गये, इंदिरा गांधी की हत्या, राजीव गांधी प्रधानमंत्री बनें ।

1985–राजीव-लांगोवाल संधि पर हस्ताक्षर, संत एच॰एस॰ लांगोवाल की पंजाब के चुनाव के दौरान हत्या, असम संधि, सातवीं पंचवर्षीय योजना शुरू ।

1986–मिजोरम संधि ।

1987–आर॰ वेंकटरमन राष्ट्रपति चुने गये, शंकर दयाल शर्मा भारत के उपराष्ट्रपति चुने गये, बोफोर्स और फेयरफेक्स कांड ।

1989–अयोध्या में राम शिलान्यास पूजा, भारत की पहली आर॰आर॰बी॰एम॰ 'अग्नि' का प्रक्षेपण उड़ीसा से 22 मई को हुआ, 5 जून को त्रिशूल मिसाइल परीक्षण, 27 सितम्बर को पृथ्वी का दूसरा सफलतापूर्वक प्रक्षेपण, राजीव सरकार को चुनावों में शिकस्त मिली और उन्होंने 29 नवम्बर को इस्तीफ़ा दे दिया, 29 नवम्बर से जवाहर रोज़गार योजना की शुरुआत, 2 दिसम्बर को नेशनल फ्रंट के नेता वी॰पी॰ सिंह ने सातवें प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ली और नौंवीं लोकसभा के लिए नये कैबिनेट का गठन ।

1990–25 मार्च को आई॰पी॰के॰एफ॰ के बचे हुए सैनिकों की वापसी, 14 फ़रवरी को इंडियन एयरलाइन ए-320 दुर्घटनाग्रस्त, जनता दल विभाजित, भाजपा ने सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया, आडवानी ने रथयात्रा निकाली और गिरफ़्तार हुए, मंडल आयोग की सिफ़ारिशों को वी॰पी॰ सिंह द्वारा लागू किये जाने की घोषणा, अयोध्या में रामजन्म भूमि-बाबरी मस्जिद विवाद के चलते हिंसा ।

1991–17 जनवरी को खाड़ी युद्ध की शुरुआत, 21 मई को राजीव गांधी की हत्या, 20 जून को 10वीं लोकसभा का गठन, पी॰वी॰ नरसिंह राव प्रधानमंत्री बनें ।

1992–भारत ने 29 जनवरी को इजरायल के साथ कूटनीतिक संबंध स्थापित किये, 23 अप्रैल को भारत रत्न और ऑस्कर विजेता सत्यजीत रे की मृत्यु, 25 जुलाई को एस॰डी॰ शर्मा राष्ट्रपति चुने गये, पहली स्वदेशी निर्मित

पनडुब्बी आई॰एन॰एस॰ शक्ति का 7 फ़रवरी को लोकार्पण

1993–7 जनवरी को अयोध्या में 67.33 एकड़ को अधिग्रहण करने का अध्यादेश, भाजपा की रैली में भारी सुरक्षा, बम्बई में बम धमाकों में 300 की मौत, इनसैट-2बी पूरी तरह काम करने को तैयार, महाराष्ट्र में भूकंप ।

1994–नागरिक विमानन पर सरकार का एकाधिकार ख़त्म, गैट समझौते पर विवाद, प्लेग महामारी, सुष्मिता सेन मिस यूनिवर्स बी॰, एश्वर्या राय मिस वर्ल्ड बनीं ।

1995–मायावती उत्तर प्रदेश की पहली दलित मुख्यमंत्री बनीं, महाराष्ट्र, गुजरात में भाजपा, कर्नाटक में जनता दल और उड़ीसा में कांग्रेस सत्ता में आयी, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आई) का गठन, मायावती के गिरने के बाद उत्तर प्रदेश में राष्ट्रपति शासन लागू, इनसैट 2सी॰ और आई॰आर॰एस॰आई॰-सी॰ का प्रक्षेपण ।

1996–कई केन्द्रीय मंत्री और विपक्ष के नेता हवाला कांड में फंसे, 21 मार्च को पी॰एस॰एल॰वी॰ डी॰-3 के साथ आई॰आर॰एस॰पी॰-3 के प्रक्षेपण से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के नये युग की शुरुआत, ग्यारहवीं लोकसभा के लिए अप्रैल में चुनाव, 127 सीटों के साथ भाजपा इकलौती बड़ी पार्टी के रूप में सामने आयी ।

1997–15 अगस्त को भारत ने अपनी आज़ादी की 50वीं वर्षगांठ मनाई ।

1998–मदर टेरेसा की मृत्यु, अटल बिहारी वाजपेयी भारत के प्रधानमंत्री बनें, भारत ने अपना दूसरा परमाणु परीक्षण किया ।

1999–24 दिसम्बर 1999 को भारतीय एयरलाइन के हवाई जहाज़ आई॰सी॰-814 का आतंकवादियों द्वारा अपहरण कर अफ़ग़ानिस्तान के कंधार ले जाना । यात्रियों को बंधक बना लिए जाने के बाद उनकी रिहाई के लिए भारत सरकार द्वारा तीन आतंकवादियों को छोड़ा जाना । जून 1999 में "लाइट लेफ्टिनेंट के॰ नचिकेता को पाकिस्तान द्वारा आठ दिनों की क़ैद के बाद रिहा किया गया । जम्मू-कश्मीर के करगिल क्षेत्र में एल॰ओ॰सी॰ के भीतर पाकिस्तानी को हटाने के लिए भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन विजय' अपनाया, भारत लड़ाई में विजयी हुआ ।

2000–अमेरिका के राष्ट्रपति बिल क्लिंटन मार्च 2000 में भारत की यात्रा पर आये, तीन नये राज्य छत्तीसगढ़, उत्तरांचल, झारखंड अस्तित्व में आये । भारत की जनसंख्या एक अरब का आंकड़ा पार कर गयी ।

2001–जुलाई 2001 में भारत और पाकिस्तान के बीच 'आगरा सम्मेलन'। गुजरात का भूकंप-भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक आपदा, तहलका.कॉम ने वीडियो टेप जारी किया जिसमें हथियारों की ख़रीद-फ़रोख़्त में भारतीय सेना के अधिकारियों, मंत्रियों और नेताओं की पोल खोली गयी, मार्च 2001 में भारत का छठवीं जनगणना (आज़ादी से लेकर), अगस्त 2001 में एनरॉन का भारत से जाना, अप्रैल 2001 में जी॰एस॰एल॰वी॰ का सफलतापूर्वक प्रक्षेपण और पी॰एस॰एल॰वी॰-सी-3 का अक्तूबर 2001 में परीक्षण ।

2002–71 वर्षीय वैज्ञानिक अबुल पाकिर ज़ैनुलाब्दीन अबुल कलाम भारत के राष्ट्रपति बनें, गुजरात में 27 फ़रवरी को हुए गोधरा कांड के बाद सबसे भयंकर सांप्रदायिक दंगे, राष्ट्रीय जल नीति की घोषणा जिसका उद्देश्य सभी जल संसाधनों का एकीकरण और प्रबंधन है ताकि उनकी क्षमता का अधिकतम सतत उपभोग किया जा सके ।

2003–भारत द्वारा न्यूक्लियर कमांड अथॉरिटी (एन॰सी॰ए॰) और स्ट्रेटेजिक फोर्सेज कमांड (एस॰एफ॰ओ॰) का गठन, एयर मार्शल तेज मोहन अस्थाना एस॰एफ॰सी॰ के पहले मुख्य कमांडर बने, अत्याधुनिक बहुद्देशीय उद्देश्यों के लिए इनसैट-3ए का फ्रेंच गुयाना के कोरू से अंतरिक्ष में सफल प्रक्षेपण, सफ़ेदपोशों के अपराधों से निबटने के लिए सी॰बी॰आई॰ ने जून में इकनॉमिक इंटेलीजेंस शाखा बनाई, दिसम्बर में फ्रेंच गुयाना के कोरू के स्पेस पोर्ट से भारत की अत्याधुनिक संचार सेटेलाइट इनसैट-3ई यूरोपियन रॉकेट से प्रक्षेपित किया गया ।

2004–आम चुनाव में कांग्रेस और उसके सहयोगियों द्वारा एन॰डी॰ए॰ सरकार की हार, कांग्रेस और उसके सहयोगियों ने प्रधानमंत्री डॉ॰ मनमोहन सिंह के नेतृत्व में केन्द्र में सरकार बनाई । (समाप्त)

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली–110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223

संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।



With Best Compliments from :

MAKING THE [EXTRA] ORDINARY

LIS (INDIA) CONSTRUCTION CO. PVT. LTD.

BUILDERS & DEVELOPERS

Regd. office: A/2, Swati Apartment, Juhu Lane, Andheri (W), Mumbai - 400 058
Ph.: 2625 5702-34 Fax: 262 88474 Email: lis.co.in.@gmail.com

Posted on 20-21 April 2018
May 2018
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.04.2018
Total pages 52 with Cover

कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-05/3147/2018-2020
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2018-2020

مسلمان وہ ہے
جس کی زبان اور ہاتھ سے
مسلمان محفوظ رہیں۔
(بخاری:10)

Seahath Canning Company

Plot No. 8, Margoa Industrial Estate
St. Jose de Areal. Post Curtorium
Margo, Goa 403709, INDIA
Tel.: +91-832-2860412 / 6481562
Email: info@seahath.com | www .seahath.com

